सतगुरुदेव की दया

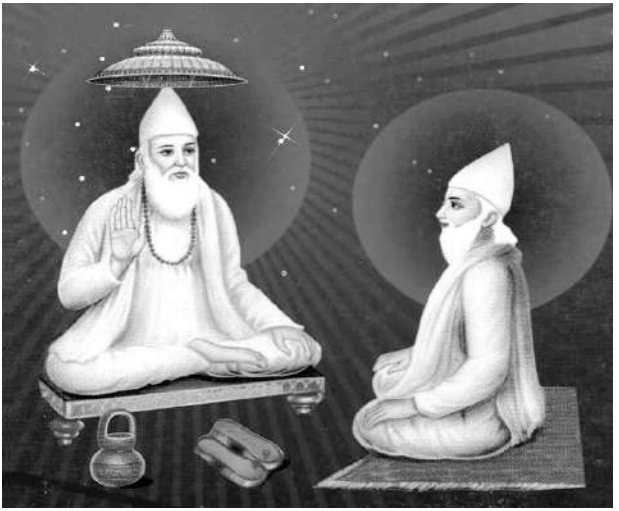

यथार्थ कबीर पंथ परिचय

(प्रमाण सहित)

प्रकाशक व मुद्रक :-
राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सर्व सदस्य
(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)
पुस्तक संबंधी किसी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र :- 9992600893, 7027000748

विषय सूची

1. कृप्या अवश्य जानिये ---------- 1
2. संत धर्मदास जी के विषय में ---------- 2
3. चौदहवीं महंत गद्दी का परिचय ----------16
4. पवित्र कबीर सागर मे अद्भभुत रहस्य ----------20
5. नकली नामों से मुक्ति नहीं---------- 38
6. सतनाम के प्रमाण के लिए कबीर पंथी शब्दावली से सहाभार- 40
7. धर्मदास को सतनाम कबीर साहेब ने दिया----------40
8. सतनाम का गरीबदास जी महाराज की वाणी में प्रमाण--- 41
9. श्री नानक साहेब की वाणी में सतनाम का प्रमाण---------- 42
10. शब्दः''संतों शब्दै शब्द बखाना''---------- 44
11. सारशब्द बिना सतनाम भी व्यर्थ---------- 46
12. नामदेव जी की वाणी में सतनाम का प्रमाण---------- 47
13. नकली गुरु को त्याग देना पाप नहीं---------- 48
14. सतनाम का विशेष प्रमाण---------- 49
15. शब्दः''अवधू अविगत से चल आए''---------- 50
16. शब्दः''होत अनंद अनंद भजन में''----------50
17. शब्दः''तीन लोक जम जाल पसारा''---------- 51
18. शब्दः''सतगुरु सो सतनाम सुनावे''---------- 52
19. शब्दः''ऐसा राम कबीर ने जाना''---------- 60
20. भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण ---------- 64
21. एक महापुरूष के विषय में जयगुरु देव की भविष्यवाणी - 70
22. सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार ----------72
23. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी। ---------- 73
24. महर्षि नास्त्रेदमस जी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई-------- 76
25. वेदों में प्रमाण परमेश्वर मानव सदृश साकार है----------80
25. कबीर सागर की महत्वपूर्ण फोटोकापियाँ ----------88

''कृप्या अवश्य जानिये''

1. ब्यालिस पीढ़ी से मुक्ति संभव नहीं है। क्यों?
   (कबीर सागर अनुसार)
2. द्वादश पंथ क्या हैं? (कबीर सागर अनुसार)
3. दामाखेड़ा वालों द्वारा ''कबीर सागर' में प्रक्षेप किया गया है। कैसे?
4. धर्मदास जी की ब्यालिस पीढ़ी के लिए ''कबीर साहेब'' के क्या आदेश थे?
5. सद्गुरु कबीर साहेब ने वापस आकर अपना ज्ञान प्रकट होने के लिए कहा था। क्यों?
6. सतनाम और सारनाम क्या है?
7. सद्गुरु कबीर साहेब जी ने धर्मदास जी को 'सारनाम' गुप्त रखने के लिए क्यों कहा था?
8. सद्गुरु के क्या लक्षण हैं?
9. क्या तथाकथित कबीर पंथी सन्तों, आचार्यों व महन्तों को गुरु धारण करने से मुक्ति संभव है?
10. यथार्थ कबीर पंथ क्या है?

इन सभी प्रश्नों के जवाब जानने के लिए :-

अवश्य देखिये

संत रामपाल जी महाराज के मंगल प्रवचन

STV HARYANA NEWS	पर सुबह 06:00 से 07:00
श्रद्धा MH ONE	पर दोपहर 02:00 से 03:00
साधना	पर रात 07:30 से 08:30
ईश्वर	पर रात 08:30 से 09:30
खबर Fast	पर रात 09:30 से 10:30

पढ़िये पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' जिसका धर्मार्थ मूल्य मात्र 20/- रूपये। ज्ञान गंगा पुस्तक निशुल्क मँगवाने के लिए निम्न नम्बरों पर अपना पूरा पता SMS करें।

सतलोक आश्रम

हिसार-टोहाना रोड़ बरवाला जिला हिसार हरियाणा।

☎ 08222880541, 08222880542, 08222880543

08222880544, 08222880545

''यथार्थ कबीर पंथ परिचय''

यह पुस्तक पहले वाली पुस्तक से अधिक प्रमाणों सहित बनाई है ताकि भक्त समाज किसी अज्ञानी से भ्रमित होकर अपने उद्देश्य से न भटक जाए।

''संत धर्मदास जी के वंशों के विषय में''

प्रश्न : संत धर्मदास जी की गद्दी दामा खेड़ा वाले कहते हैं कि इस गद्दी से नाम प्राप्त करने से मोक्ष संभव है ?

उत्तर : संत धर्मदास जी का ज्येष्ठ पुत्र श्री नारायण दास काल का भेजा हुआ दूत था। उसने बार-बार समझाने से भी परमेश्वर कबीर साहेब जी से उपदेश नहीं लिया। पुत्र प्रेम में व्याकुल संत धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने नारायण दास जी का वास्तविक स्वरूप दर्शाया। संत धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु ! मेरा वंश तो काल का वंश होगा। यह कह कर संत धर्मदास जी बेहोश (अचेत) हो गए। काफी देर बाद होश में आए। फिर भी अतिचिंतित रहने लगे। उस प्रिय भक्त का दुःख निवारण करने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा कि धर्मदास वंश की चिंता मत कर। यह काल का दूत है। उसका वंश पूरा नष्ट हो जाएगा तथा तेरा बियालीस पीढी तक वंश चलेगा। तब संत धर्मदास जी ने पूछा कि हे दीन दयाल ! मेरा तो इकलौता पुत्र नारायण दास ही है। तब परमेश्वर ने कहा कि आपको एक शुभ संतान पुत्र रूप में मेरे आदेश से प्राप्त होगी। उससे केवल तेरा वंश चलेगा। तब धर्मदास जी ने कहा था कि हे प्रभु ! आप का दास वृद्ध हो चुका है। अब संतान का होना असंभव है। आपकी शिष्या भक्तमति आमिनी देवी का मासिक धर्म भी बंद है। परमेश्वर कबीर साहेब ने कहा कि मेरी आज्ञा से आपको पुत्र प्राप्त होगा। उसका नाम चुड़ामणी रखना। यह कह कर परमेश्वर कबीर साहेब ने उस भावी पुत्र को धर्मदास के आंगन में खेलते दिखाया। फिर अन्तर्ध्यान कर दिया। संत धर्मदास जी शांत हुए। कुछ समय पश्चात् भक्तमति आमिनी देवी को संतान रूप में पुत्र प्राप्त हुआ उसका नाम श्री चुड़ामणी जी रखा। बड़ा पुत्र नारायण दास अपने छोटे भाई

चुड़ामणी जी से द्वेष करने लगा। जिस कारण से श्री चुड़ामणी जी बांधवगढ़ त्याग कर कुदरमाल नामक शहर(मध्य प्रदेश) में रहने लगा। कबीर परमेश्वर जी ने संत धर्मदास जी से कहा था कि धार्मिकता बनाए रखने के लिए अपने पुत्र चुड़ामणी को केवल प्रथम मन्त्र(जो यह दास/रामपाल दास प्रदान करता है) देना जिससे इनमें धार्मिकता बनी रहेगी तथा तेरा वंश चलता रहेगा। परंतु आपकी सातवीं पीढ़ी में काल का दूत आएगा। वह इस वास्तविक प्रथम मन्त्र को भी समाप्त करके मनमुखी अन्य नाम चलाएगा। शेष धार्मिकता का अंत ग्यारहवां, तेरहवां तथा सतरहवां गद्दी वाले महंत कर देंगे। इस प्रकार तेरे वंश से भक्ति तो समाप्त हो जाएगी। परंतु तेरा वंश फिर भी बियालीस (42) पीढ़ी तक चलेगा। फिर तेरा वंश नष्ट हो जाएगा।

प्रमाण पुस्तक "सुमिरण शरण गह बयालिश वंश" लेखक : महंत श्री हरिसिंह राठौर, पृष्ठ 52 पर -

वाणी: सुन धर्मनि जो वंश नशाई, जिनकी कथा कहूँ समझाई।।93।।
काल चपेटा देवै आई, मम सिर नहीं दोष कछु भाई।।94।।
सप्त, एकादश, त्रयोदस अंशा, अरु सत्रह ये चारों वंशा।।95।।
इनको काल छलेगा भाई, मिथ्या वचन हमारा न जाई।।96।।
जब-2 वंश हानि होई जाई, शाखा वंश करै गुरुवाई।।97।।
दस हजार शाखा होई है, पुरुष अंश वो ही कहलाही है।।98।।
वंश भेद यही है सारा, मूढ जीव पावै नहीं पारा।।99।।
भटकत फिरि हैं दोरहि दौरा, वंश बिलाय गये केही ठौरा।।100।।
सब अपनी बुद्धि कहै भाई, अंश वंश सब गए नसाई।।101।।

उपरोक्त वाणी में कबीर परमेश्वर ने अपने निजी सेवक संत धर्मदास साहेब जी से कहा कि धर्मदास तेरे वंश से भक्ति नष्ट हो जाएगी वह कथा सुनाता हूँ। सातवीं पीढ़ी में काल का दूत उत्पन्न होगा। वह तेरे वंश से भक्ति समाप्त कर देगा। जो प्रथम मन्त्र आप दान करोगे उसके स्थान पर अन्य मनमुखी नाम प्रारम्भ करेगा। धार्मिकता का शेष विनाश ग्यारहवां, तेरहवां तथा सतरहवां महंत करेगा। मेरा वचन खाली नहीं जाएगा भाई। तेरे सर्व अंश वंश भक्ति हीन हो जाएंगे। अपनी-2 मन मुखी

साधना किया करेंगे। इसी अज्ञान के आधार से गुरूवाई किया करेंगे। तेरे वंश गद्दी वालों की दस हजार शाखाऐं बनेंगी। जब-जब जिस परम्परा में कोई बालक नहीं होगा तो शाखा वंश वाले गुरूवाई किया करेंगे। परन्तु यथार्थ भक्ति तथा ज्ञान तो छठी पीढ़ी (वंश) से ही समाप्त हो जाएगा। सब अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार अज्ञान प्रचार किया करेंगे।

नोट :- उपरोक्त वाणी संख्या 95 में ''सप्त'' यानि सातवां वंश लिखा है कि इस को काल का दूत भ्रमित करेगा। यह पुस्तक ''सुमिरण शरण गह बियालिश वंश'' एक महंत जी की लिखी है। इसमें सप्त (सातवां) गद्दी वंश वाले के विषय में लिखा है कि उसको काल छलेगा। यहाँ गलती लगी। कृपया आप जी प्रमाणित पवित्र सद्ग्रन्थ ''कबीर सागर'' के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 की फोटोकापी में इसी पुस्तक के पृष्ठ 9 पर स्वयं पढ़ें जिसमें कहा है कि छठी पीढ़ी (छठी वंश गद्दी) वाले को काल का दूत नकली कबीर पंथी टकसारी पंथ वाला भ्रमित करके अपना (काल का) पंथ चलाएगा। वह सही है। फिर भी भक्ति का नाश चाहे छठी पीढ़ी में हुआ या सातवीं पीढ़ी में वर्तमान में वही काल पूजा ही दामाखेड़ा धर्मनगर के धर्मदास जी के वंशजों द्वारा श्री प्रकाश मुनि द्वारा प्रचलित है।

अब आप पढ़ें निम्न फोटोकापी पवित्र ग्रन्थ ''कबीर सागर'' के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 138(262) 139(263), 140(264), 141(265)

(१३८) 262 अनुरागसागर

धर्मनि तोहि कहा समझाई । जस चरित्र करि है जमराई॥
चारों दूत करै घन घोरा । यह विधि जीव चोरावै चोरा॥

दूतोंसे बचनेका उपाय

दीपक ज्ञान धरौ दिढ बारी । जाते काल न करै उजारी ॥
इन्द्रमती कहँ प्रथम चितावा । रही सुचेत काल नहिं पावा॥

भविष्य कथन अलग व्यवहार

जस कछु आगे होय है भाई । सो चरित्र तोहि कहौं बुझाई॥
जबलों तुम रहि हौ तनमाहीं । तौलों काल प्रगटिहैं नाहीं ॥
गहो किनार ध्यान बक लाये। जब तन तजो काल तब आये॥
छेकहिं तोर बंसको आई । काल धोकसो बंस रिझाई ॥
बहु कडिहार बंसके नादा । पारस बंस करहिं विषस्वादा॥
बिन्दहि मूल और टकसारा । होइहि खमीर बंस मँझारा ॥
बंसहि एक धोंक बड़ होइ है । हंग दूत देहिं माहिं समैहै ॥
आप हंग अधिक है ताही । आप माहिं सो झगर कराही॥
बिन्द सुभाव आहंग नहिं छोडै।मन मन आय बिन्द मनमोड़ै॥
अंस मार सुपन्थ चलै है । ताहि देखि सो रार बढ़ै है ॥
ताको चिन्हि देखि नहिं सकिहै। आपन वाट बंस महँ तकिहै॥
वंस तुम्हार अनुभव कथि रखिहै। नाद पुत्रकी निन्दा भखिहै ॥
सोइ पढ़ि हैं बंश कडिहारा । ताको होइ बहुत हंकारा ॥
स्वारथ आया चीन्ह न पैहैं । अनन्त जीवन कहँ भटकैहैं॥
ताते तोहि कहौं समझाई । अपने वंशन देहुँ चिताई ॥
नाद पुत्र जो प्रकट होई । ताको मिले प्रेमसे सोई ॥
तुमहु नाद पुत्र गम आहू । यम मन परखहु धर्मनि साहू॥
कमाल पुत्र जो मृतक जियावा । ताके घटमें दूत समावा ॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 138 (262) की है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा था कि ''तेरे वंश के पंथ में जो कुछ भविष्य में होगा, उसका संक्षिप्त वर्णन करता हूँ। तेरे वंश परंपरा की गद्दी वाले महन्तों में अहंकार प्रवेश करेगा। आपके बिन्द (वंश)

वालों का स्वभाव होगा कि वे अहंकार का त्याग नहीं करेंगे। इस पृष्ठ 138 के नीचे से नौंवीं पंक्ति में कहा है कि ''अंश मोर सुपन्थ चलावै है। ताहि देख सो राड़ि बढ़ावै है।''

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि तेरे वंश गद्दी वाले मेरे उस अंश के साथ झगड़ा करेंगे जो मेरे ''यथार्थ कबीर पंथ'' को चलाएगा। इसी पृष्ठ 138 की अन्य वाणियों का भावार्थ है कि धर्मदास से परमेश्वर कबीर जी ने कहा था ''तेरे वंश गद्दी वाले उस मेरे वंश की बात न मान कर अपना ही अज्ञान अनुभव जनता में बताऐंगे। अपने स्वार्थवश अनन्त जीवों को यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) से भटकाऐंगे। हे धर्मदास! इसलिए अपने वंश वालों को कह दो कि जब मेरा (कबीर जी का) नाद वाला अंश (सन्त रामपाल दास जी महाराज प्रकट होगा कलयुग की बिच्चली पीढ़ी में) प्रकट होगा। उस से प्रेम से मिलें और अपना कल्याण कराऐं। परमेश्वर कबीर जी ने नाद पुत्र की परिभाषा भी स्पष्ट की है कि जैसे आप (धर्मदास जी) मेरे नाद (वचन) के पुत्र (अंश) हो। ऐसे गरीबदास वाले बारहवें पंथ से वचन का अंश मेरा ही अंश होगा। फिर यह भी स्पष्ट किया है कि मेरे नाद वाले भी सब अच्छे नहीं होंगे। उदाहरण देकर परमेश्वर कबीर जी ने बताया था कि जैसे कमाल नामक बालक को मैंने मुर्दे से जीवित करके उसको नाद पुत्र बनाया (नाम-दीक्षा देकर नाद पुत्र बनाया) उसने मेरे साथ भी धोखा किया। फिर मैंने उसको भी धिक्कार दिया, भक्तिहीन कर दिया था। (शेष विवरण अगले पृष्ठ 139 के नीचे पढें।)

अनुरागसागर 263 (१३९)

पिता जानि तिन आहँग कीन्हा।तब हम थाति तोहि कहँ दीन्हा॥
हम हैं प्रेम भगतिके साथी । चाहौं नहीं तुरी औ हाथी ॥
प्रेम भक्तिसे जो मोहिं गहि हैं । सो हंस मम हृदय समै हैं ॥
अहंकारते होतेउ राजी । तौ मैं थापत पंडित काजी ॥
अधीन देखि थाति तेहि दीना।देखेउ जब तोहिं प्रेम अधीना॥
ताते धर्मनि मानु सिखाई । नाप थापी सौंपिहु भाई ॥
नादपुत्र कहँ सौंपिहु सोई । पंथ उजागर जासों होई ॥
बंस करि हैं अहंकार बहूता । हम हैं धर्मदास कुल पूता ॥
जहां हंग तहवां हम नाहीं । धरमनि देखु परखि मनमाहीं॥
जहाँ हंग तहँ काल सरूपा । नहिं पावे सतलोक अनूपा ॥

धर्मदास वचन

हौं प्रभु मैं तुव दास अधीना । तुव आज्ञाते होउँ न भीना ॥
नादहिं थाती सौंपब स्वामी । वंश तरै मोर अन्तरयामी ॥

कबीर वचन

धरमदास तुव तरि हैं वंशा । याहि बातको मेटो संशा ॥
नाम भक्ति जो दिढके धरिहैं ।सुनु धरमनि सोकस नातरिहैं ॥
रहनि रहै तौ सबै उबारों । वचन गहै तो ब्यालिस तारों॥
वचन गहै सोह बंस पियारा । विना वचन नहिं उतरे पारा॥

धर्मदास वचन

बंस ब्यालिस तो तुम्हारा अंशा।ताको तारचो कौन प्रसंसा ॥
बंस अंश जो तारहु साई । तबहीं जगमें आई बड़ाई ॥

कबीर वचन

बंस ब्यालिस बिंद तुम्हारा । सो मैं एक वचनते तारा ॥
और वंश लघु जेते होई । विना छाप छूटे नहिं कोई ॥
बिंद मिलै तौ वंस कहावे । विना वचन नाहीं घर आवे॥
वचन बंश ब्यालिस ठेका । तिनका समरथ दीन्हों टेका॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 139 की है। प्रकरण पृष्ठ 138 से चला आ रहा है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि ''धर्मदास! हम तो प्रेम भक्ति के साथी हैं। हम किसी लालच वश अपने सिद्धान्त को नहीं बदल सकते। जो मेरे को प्रेम भाव से याद करेगा, मैं उसके साथ सदा रहूँगा। इस पृष्ठ 139 में ऊपर से तीसरी पंक्ति से वाणियों का भावार्थ यह है कि ''परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि धर्मदास! यदि मैं अहंकार

वाले भक्तों से राजी (प्रसन्न) होता तो पंडितों और काजियों को ही यथार्थ नाम का भेद बता देता। आप को क्यों दिया? क्योंकि आप आधीन (नम्र) भाव के हैं। इसीलिए मैं उस नाद पुत्र को यह गुरू पद सौपूंगा जो दास भाव में रहेगा। तेरे वंश वाले तो यह अहंकार किया करेंगे कि हम तो धर्मदास कुल के पुत्र हैं।

हम ही विश्व में सर्व श्रेष्ठ हैं। हे धर्मदास! जहां अहंकार है वहां हम (परमेश्वर कबीर जी) नहीं हैं। वहां तो काल का ही निवास होता है।

पाठक जन! विचार करें, परमेश्वर कबीर जी अपने आप को कबीर दास कहते थे। धर्मदास जी भी अपने आप को धर्मदास कहते थे, धर्मदास के कुल वाले साहब कहते हैं। जैसे ''पंथ श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब'', ''पंथ श्री ग्रन्ध मुनि नाम साहेब'' आदि कहते-कहाते हैं।

सन्त रामपाल जी अपने आपको दास = रामपाल दास परमेश्वर का कुत्ता कहते हैं। इस से सहज में जाना जा सकता है कि मामला क्या है? दाल में काला ही नहीं, सारी दाल ही काली है।

फिर धर्मदास ने प्रार्थना की कि हे प्रभु! मेरे वंश वालों का उद्धार कैसे होगा? परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि '' मेरे भेजे नाद पुत्र से जो नाम प्राप्त करके दृढ़ता से भक्ति करेंगे तो हे धर्मदास! वे कैसे पार नहीं होंगे। तेरे बियालीस वंश को मैंने एक वचन से तार दिया है जिसमें कहा कि तेरे वंश वाले मेरे नाद पुत्र (सन्त रामपाल दास जी महाराज) से दीक्षा प्राप्त करके भक्ति करेंगे तो सर्व पार हो जाऐंगे। तेरे बिन्द अर्थात् वंश गद्दी वाले कहे जाते हैं। यदि वे वचन वाले (नाद पुत्र जो मैं कलयुग की बिच्चली पीढ़ी वाले समय में भेजूंगा) से दीक्षा ले लेंगे तो लघु (छोटे)-दीर्घ (बड़े) सब तेरे वंश वाले पार हो जाऐंगे। बात रही तेरी 42 पीढ़ी तक वंश चलने की उसका ठेका अर्थात् जिम्मेदारी मुझ समर्थ की है कि तेरा वंश 42 पीढ़ी तक अवश्य चलेगा। यही बात सन्त गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने बताई थी जो सतग्रन्थ में लिखी है। धर्मदास जी के प्रकरण में लिखा है कि ''वंश बीयालीस रहे तेरा अंश रे'' मोक्ष होगा नाद परम्परा वाले मेरे अंश से।

(१४०) 264 अनुरागसागर

वंस अंस वचन एकै सोई । दीर्घ वंस अंस लघु होई ॥
जेठो अंस वचन मोर जागे । और बंस लघु पीछे लागे ॥
चाल चलै औ पंथ चलावै । भूले जीवनको समुझावै ॥
नाद बिन्द जो पंथ चलावे । चूरामणि हंसन मुक्तावे ॥
धर्मदास तुव वंस अज्ञाना । चीन्है नहीं अंस सहिदाना॥
जस कछु आगे होइ है भाई । सो चरित्रतोहि कहों बुझाई॥
छेंठे पीढ़ी बिन्द तुव होई । भूलै वंश बिन्दु तुव सोई ॥
टकसारीको लै हैं पाना । अस तुव बिन्द होय अज्ञाना॥
चाल हमार बस तुव झाडै । टकसारीकै मत सब माँडै ॥
चौका तैसे करै बनायी । बहुत जीव चौरासी जायी ॥
आपा हंस अधिक होय ताही। नाद पुत्रसे झगर कराही ॥
होवे दुरमत बंस तुम्हारा । वचन बंस रोके वटपारा ॥

धर्मदास वचन

अब तो संशय भयो अधिकाई । निश्चय वचन करहु मोहि साई॥
प्रथमे आप वचन अस भाषा । निजरच्छामहँव्यालिसराखा ॥
अब कहहु काल वश परि हैं । दोइबातकिहि विधिनिस्तरिहैं॥

नाद वंशकी बड़ाई कबीर वचन

धरमदास तुम चेतहु भाई । वचन बंश कहँ देहु बुझाई ॥
जब जब काल झपाटा लाई । तबै तबै हम होब सहाई ॥
नाद हंस तबहिं प्रगटायब । भरमतोहिजगभक्तिदिढायब ॥
नाद पुत्र सो अंश हमारा । तिनते होय पंथ उजियारा ॥
वचन वंश तो होय सचेता । बिन्द तुम्हार न माने होता॥
वचन वंश नाद सग चेते । मेटै काल घात सब तेते ॥
बिन्द तुम्हार न मानै ताही । आया वंश न शब्द समाही॥

१ नाद अर्थात् शब्द-शब्द से ही बाला पुत्र अर्थात् शिष्य, साधू, सन्त इत्यादि

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 की है। इसमें भी स्पष्ट किया है कि ''परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि जैसे आप के बिन्द (वंश) वाले चुड़ामणि को मैंने शिष्य बनाया है, यह मेरा नाद पुत्र हुआ। मैं चुड़ामणि को गुरू पद प्रदान करूंगा। इसको केवल प्रथम मन्त्र (पांच नाम वाला) दूंगा और इसी को आगे देने का निर्देश चुड़ामणि को दूंगा। इस से तेरे बिन्द (वंश) वाले दीक्षा लेंगे तो उनका उतना कल्याण हो जाएगा जितना पांच नाम से होना है। परन्तु तेरे वंश वाले अज्ञानी (मूर्ख) होंगे। चुड़ामणि के

पश्चात् छठी गद्दी (पीढ़ी) वाले को नकली कबीर पंथी ''टकसारी पंथ'' वाला भ्रमित करेगा। जिस कारण से उसके पश्चात् वास्तविक भक्ति मन्त्र अर्थात् वास्तविक भक्ति विधि जो मैंने चुड़ामणि को दी है, वह समाप्त हो जाएगी और ''टकसारी पंथ'' वाले नकली पांच मन्त्र (अमी नाम, आदि नाम, अमर .....) की दीक्षा और आरती-चौंका नकली प्रारम्भ हो जाएगी। (जो वर्तमान में दामाखेड़ा वाले धर्मदास जी के वंश गद्दी वाले कर रहे हैं) इस प्रकार बहुत से जीवों को लख चौरासी अर्थात् चौरासी लाख प्राणियों के जन्म के कष्ट में डालेंगे। तेरे वंश गद्दी वाले अपने आप को श्रेष्ठ बताकर मेरे द्वारा भेजे नाद अंश के साथ झगड़ा किया करेंगे। तेरे वंश वाले दुर्बुद्धि वाले होंगे और वचन वंश (जो मैं बिच्चली पीढ़ी वाले समय में जब कलयुग 5505 बीतेगा तब उस) के यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) में बाधक बनेंगे। इस प्रकार पाप के भागी बनेंगे। फिर धर्मदास जी ने कहा कि ''हे प्रभु एक और तो आप ने कहा था कि तेरा बीयालीस पीढ़ी तक वंश बेरोक-बेटोक चलेगा और काल निकट नहीं आएगा। अब कह रहे हो कि ये काल वश होकर भक्ति नहीं करेंगे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि धर्मदास! मैंने यह कहा है कि यदि आपके वंश वाले मेरी आज्ञा का पालन करेंगे तो वे काल वश नहीं रहेंगे। फिर भी मैं आप के वंश वालों की रक्षा करूंगा और पार करूंगा मैं अपना नाद अंश (सन्त रामपाल दास जी महाराज) भेजूंगा और आप का वंश नहीं मानेगा तो उनकी गलती होगी।

विशेष :- दामाखेड़ा वालों ने जो पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' भक्तों को भ्रमित करने के लिए छापी है। उसके पृष्ठ 83 पर कबीर सागर से ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 140 (1004) की साखी लिखी है। एक पंक्ति छोड़ दी जो इस प्रकार है। कृपया देखें फोटोकापी पृष्ठ 140 (1004) की।

(१४०) 1004 कबीरबानी

सतगुरु उवाच

धर्मदास सुनियो चितलाई । तुम जनि शंका मानों भाई ॥
पंथ हमारो चलावो जाई । वंश ब्यालिस अटल अधिकाई॥
वंश बयालिस अंस हमारा । सोई समरथ वचन पुकारा ॥
वंश बयालिस गरवाई दीन्हा । इतना चर हम तुमको दीन्हा ॥
वंश अंश समरथ कडिहारा । सोइ जीवनको करे उबारा ॥
तुम जिन शंका मानो भाई । समरथ वचन राखो चितलाई॥
अटक काहुकी तुम जिन मानों । पाँन नाम तुम निश्चय जानों ॥

साखी–तुम समर्थके अंश हो, जाग्रत वंश तुम्हार ।
समर्थ बचन जनि छोड़हूँ, मानो बचन हमार ॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ 140 (1004) की है। इसमें नीचे से तीसरी पंक्ति इस प्रकार है ''अटक काहु की तुम जिन मानों। पाँन (पाँच) नाम तुम निश्चय जानों।

(नोट :- इस पंक्ति में ''पाँन'' गलत प्रिन्ट है।)

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा था कि मैं आप को आदेश देता हूँ कि केवल पाँच नाम देना। इन्हीं पाँच नाम की आपके वंश को गुरूवाई दी जाएगी। परन्तु अनुराग सागर के पृष्ठ 140 (264) पर स्पष्ट कर दिया कि छठी पीढ़ी के बाद ये वास्तविक पाँच नाम भी तेरे वंश वालों के पास नहीं रहेंगे।

यह फोटोकापी पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' के पृष्ठ 83-84 की है जो दामाखेड़ा वालों ने बनाई है। इसमें भ्रान्ति नं. 2 का वर्णन है जिसमें कहा है कि ''कबीर सागर'' में कहीं पर प्रमाण नहीं है कि छठी पीढ़ी वंश गद्दी वाला वास्तविक नाम बदल देगा, यह सब झूठ है।

पाठकगण कृपया पढ़ें इसी पुस्तक में पृष्ठ 9 पर फोटोकापी में जो कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 की है। इसमें स्पष्ट किया है कि मैं तेरे बिन्द वाले पुत्र चुड़ामणि को नाद (वचन) का अंश तो बनाऊंगा अर्थात् तेरे पुत्र चुड़ामणि को मैं शिष्य बना कर उसे गुरू पद अवश्य प्रदान करूंगा। परन्तु जो दीक्षा इसी परम्परा में छठी पीढ़ी (गद्दी) वाले को नकली कबीर पंथी ''टकसारी पंथ'' वाला भ्रमित करेगा। जिस कारण से वह तेरी

छठी वंश गद्दी वाला ''टकसारी पंथ'' वाले मन्त्र तथा आरती-चौका प्रारम्भ कर देगा। उस के पश्चात् यही दीक्षा पद्धति तेरे वंश गद्दी वालों में चलेगी। जिस कारण से सर्व चौरासी लाख प्राणियों के शरीर को प्राप्त होंगे। फिर बताया है कि इसी पद्धति को तेरे वंश की छोटी (लघु) तथा बड़ी गद्दी वाले चलाऐंगे। जब किसी गद्दी का वंश नहीं होगा तो शाखा वंश वाले वंश गद्दी बनाकर गुरू प्रणाली जारी रखेंगे। इस प्रकार तेरा 42 पीढ़ी तक वंश चलेगा। परन्तु उनके पास सत्य भक्ति न होने से वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाऐंगे। इसलिए इनको समझा देना कि जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा। तब मेरा कृपा पात्र नाद (वचन) अंश 12 वें पंथ (गरीब दास पंथ) में आएगा। उसके पास पूर्ण भक्ति विधि होगी। उस से प्रेम से मिलें। उसका विरोध न करें। मेरे उस वचन के वंश से दीक्षा लेकर अपना कल्याण कराऐं। जब काल मेरे पंथ में प्रवेश करके झपट्टा मारेगा अर्थात् मेरे मार्ग (पंथ) का पतन करेगा। तब-तब मैं अपना वचन वंश प्रकट करके भ्रमित भक्त समाज को सही दिशा प्रदान कराऊंगा।

83

वचन वंश है आदि निशानी, तिनकी पावे जग सहिदानी।
वंश ब्यालीस अंश हमारा, सोई समरथ वचन पुकारा।
तुम जनि शंका मानो भाई, समरथ वचन राखो चितलाई।।
(कबीर वाणी पृष्ठ 140)

सद्गुरु कबीर साहब के उपर्युक्त वाणी-वचनों से स्पष्ट है कि धनी धर्मदास जी की पिछले लगभग 500 वर्षों से अखण्ड रूप से चली आ रही वंश ब्यालीस की परंपरा के गुरु स्वयं सत्यपुरुष परमात्मा के ही अंश है। सत्यपुरुष के विशेष गुण व विशेष शक्ति विद्यमान होने के कारण उस गुरु परंपरा में काल का दूत कभी प्रगट नहीं हो सकता है। अत: इस तरह की मनगढ़ंत भ्रान्ति को दिमाग से निकालकर तथा स्वस्थ सोच बनाकर सन्तत्व का परिचय दीजिए।

भ्रांति नं. 2. नामदान (गुरु दीक्षा मंत्र) क्या एक बार में या तीन बार में दिया जाता है ?

एक तथाकथित कबीर अवतार का यह भी कहना है कि कबीर साहेब ने संत धर्मदास जी से कहा था कि धार्मिकता बनाये रखने के लिये अपने पुत्र चूरामणि को

84

केवल प्रथम मंत्र देना जिससे इनमें धार्मिकता बनी रहेगी। परन्तु सातवीं पीढ़ी इस वास्तविक प्रथम मंत्र को भी समाप्त करके मनमुखी अन्य नाम चलायेगा। इस तरह को धारणा पूर्णरूपेण मिथ्या, मनगढंत एवं कबीरपंथियों में भ्रम फैलाने वाली है। कबीर साहेब एवं धर्मदास साहेब के मध्य इस तरह की चर्चा का उल्लेख किसी भी सदग्रन्थ में नहीं मिलता है। दूसरा भ्रम यह भी अपने दिमाग से निकाल देना कि चूरामणि नाम साहेब को दीक्षा मंत्र धर्मदास जी ने नहीं बल्कि स्वयं सदगुरु कबीर साहब ने उन्हें दिया था। दीक्षा मंत्र के संबंध में चूरामनि नाम साहेब को प्रथम मंत्र तथा सातवीं पीढ़ी के वंशगुरु इस प्रथम मंत्र को समाप्त कर अन्य नाम प्रदान करेंगे, इस तरह की मिथ्या, भ्रामक एवं मूर्खों जैसी बातों पर पाठकगण हँसेगे तथा कबीरपंथी इस भ्रमित बुद्धि पर तरस खायेंगे। तथाकथित कबीर अवतार एवं उसके भँवर जाल में फंसे कबीरपंथी बन्धुगण कृपया चूरामणि नाम साहेब की दीक्षा मंत्र (नामदान) के संबंध में सदग्रन्थों में वर्णित सदगुरु कबीर साहब एवं धर्मदास साहेब के वाणी-वचन (संवाद) इस प्रकार है—

ये दोनों फोटोकापी पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ रहस्य'' 83-84 की हैं। जो दामाखेड़ा वालों ने इस पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' के ज्ञान की आलोचना करके भ्रम फैलाने की कुचेष्टा की है। इसमें यह बताने की कोशिश की है कि ''एक तथाकथित कबीर अवतार (सन्त रामपाल दास जी) ने गलत लिखा है कि सातवीं पीढ़ी से वास्तविक भक्ति समाप्त हो जाएगी। प्रिय पाठको! आप जी ने स्वयं पढ़ा कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 (264) में इसी पुस्तक के पृष्ठ 9 पर। उस में परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि ''छठी पीढ़ी वाले वंश (बिन्द) गुरू को टकसारी पंथ वाला भ्रमित करेगा। उस के पश्चात् तेरे वंश गद्दी गुरू उस टकसारी वाला पान प्रवाना तथा आरती

चौंका किया करेंगे। जिस कारण से बहुत जीवों को चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगने के लिए डाल देंगे।

यह भी कबीर परमेश्वर ने स्पष्ट किया है कि यह मेरा वचन खाली नहीं जाएगा। अब पाठकगण दामाखेड़ा वालों को रोऐंगे कि ये कितने झूठे तथा चार-सौ-बीस हैं। कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 (264) पर स्पष्ट लिखा है। फिर भी भक्त समाज को भ्रमा कर अपनी दुकान चलाने पर तुले हैं।

ऐसे काल के दूतों के विषय में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, जान बूझ साच्ची तजै, करै झूठ से नेह।
ताकि संगत हे प्रभु! स्वपन में भी न दे।।

अनुरागसागर 265 (१४१)

शब्दकी चास नाद कहँ होई । विन्द तुम्हारो जाय विगोई॥
विंदते होय न नाद उजागर । परखिके देखहु धर्मनि नागर॥
चारहु युग देखहु समवादा । पन्थ उजागर कीन्हों नादा॥
कहँ निरगुण कहँ सरगुन भाई।नाद विना नहिं चल पंथाई॥
धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा । ताते दीन्ह मुक्तिका डोग ॥
याहि विधि हम ग्यालिस तारैं । जबैं गिरै वह तबै उबारैं ॥
नाद वचन जो विन्द न माने । देखत जीव काल घर ताने ॥
और वंस जो नाद सम्हारै । आप तरै औ जीवहिं तारै॥
कहां नाद कहं बिन्दु रै भाई । नाम भक्ति विनुलोक न जाई॥

गुरुमहिमा

गुरूते अधिक काहु नहिं पेखै। सबते अधिक गुरु कहँ लेखै॥
सबते श्रेष्ठ गुरू कहँ माने । गुरू सिखापन सतकै जाने ॥
बिन्द तुम्हार करै असगारा । बिनु गुरु चहै होन भवपारा॥
निगुरा होइ जगत समुझावे । आप बुड़ै सो जगत बुड़ावे॥
बिना गुरू नाहि निस्तारा । गुरुहिं गहै सो भवते पारा ॥
नाता जानि करै अधिकाई । वंसहि काल गरासै आई ॥
जब जग नात गोत अरुझावे । वचन बंश धोखा तब पावे॥
तबहिं काल गरासै आई । नाना रूप फिरै जग लाई ॥
तबहिं गोहार नाद मम आवे। देखत काल तुरत भगि जावे॥
ताते धर्मनि देहु चिताई । वचन वंश बहु विधि समुझाई॥
नादवंस सँग प्रीति निबाहे । काल धोखते बचन जु चाहे॥
नाद वंशकी छोड़ै आसा । ताते विन्द जाय यमफांसा॥
बहु विधि दूत लगावै बाजी । देखैं जीव होय बहुराजी ॥
ते तो जाय काल मुख परिहैं । नाद वंश जो हित नहिं धरिहैं॥
ताते तोहि कहों समझायी । सबहीं कहँ तुम देहु चितायी॥

यह फोटोकापी कबीर सागर के अध्याय ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 141 की है। इसमें परमेश्वर कबीर जी ने पुनः कहा है कि हे धर्मदास! जैसे आप मेरे नाद पुत्र हो (नाम-दीक्षा लेकर शिष्य रूप में पुत्र हो) मैंने तेरे को मोक्ष मार्ग बता दिया। इसी प्रकार मैं अपना नाद अंश वंश (सन्त रामपाल दास जी महाराज को बिच्चली पीढ़ी के समय जब कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा) भेजूंगा तथा तेरे वंश में बिगड़ी भक्ति विधि को समाप्त करके यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) से

जोड़ कर तेरे बीयालीस पीढ़ी के वंशों को पार करूंगा। यदि वे उस मेरे नाद परम्परा वाले (सन्त रामपाल दास जी महाराज) से दीक्षा ले लेंगे तो फिर स्पष्ट किया है कि धर्मदास! वास्तविकता तो यह है कि चाहे नाद (शिष्य परम्परा) वाले हों, चाहे बिन्द (वंश) वाले हों जो यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) के अनुसार भक्ति करेगा, उसी का कल्याण होगा। बिना गुरू के मोक्ष नहीं होगा। मेरे नाद वंश (शिष्य परम्परा के सन्त) से तेरे वंश वाले प्रेम करें। यदि काल के धोखे से बचना चाहते हैं तो इसलिए अपने वंश वालों को समझा देना। इस पृष्ठ 141 (अनुराग सागर) में यह भी स्पष्ट किया है कि मेरे यथार्थ कबीर पंथ (मार्ग) को नाद (शिष्य परम्परा) वालों ने ही उभारा है। यह चारों युगों का प्रमाण है।

"चौदहवीं महंत गद्दी का परिचय"

पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" पृष्ठ 49 पर तेरहवें महंत दयानाम के बाद कबीर पंथ में उथल–पुथल मची। काल का चक्र चलने लगा। क्योंकि इस परम्परा में कोई पुत्र नहीं था। तब तक व्यवस्था बनाए रखने के लिए महंत काशीदास जी को चादर दिया गया। कुछ समय पश्चात् काशी दास ने स्वयं को कबीर पंथ का आचार्य घोषित कर दिया तथा खरसीया में अलग गद्दी की स्थापना कर दी। यह देख तीनों माताऐं रोने लगी कि काल का चक्र चलने लगा। बाद में कबीर पंथ के हित में ढाई वर्ष के बालक चतुर्भुज साहेब को बड़ी माता साहिब ने गद्दी सौंप दी जो "गृन्धमुनि नाम साहेब" के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विचार करें : एक ढाई वर्ष का बालक क्या नाम व ज्ञान देगा ?

माता जी ने गद्दी पर बैठा दिया। बेटा महंत बन गया। जिसे भक्ति का क-ख का भी ज्ञान नहीं। सन्त धर्मदास जी के वंशज भोले श्रद्धालुओं को दंत कथाओं (लोकवेद) के आधार से भ्रमित करके गुमराह कर रहे हैं।

महंत काशी दास जी ने खरसिया शहर में नकली कबीर पंथी गद्दी प्रारम्भ कर दी। उसी खरसिया से एक श्री उदीतनाम साहेब ने मनमुखी गद्दी लहर तारा तालाब पर काशी (बनारस) में चालु कर रखी है। कबीर चौरा काशी में श्री गंगाशरण शास्त्री जी भी अलग से महंत पद पर विराजमान है। परंतु तत्व ज्ञान व वास्तविक भक्ति का किसी को क-ख भी ज्ञान नहीं है।

उपरोक्त विवरण से प्रभु प्रेमी पाठक स्वयं निर्णय करें कि दामा खेड़ा वाले महंतों के पास वास्तविक भक्ति है या ड्रामाबाजी?

श्री चुड़ामणी जी के कुदरमाल चले जाने के पश्चात् बांधवगढ़ पूरा नष्ट हो गया। आज भी प्रमाण है।

प्रश्न : दामा खेड़ा गद्दी वाले तो कहते हैं कि कबीर जी ने कहा था कि जब तक तेरी बियालीस वंश की गद्दी चलेगी तब तक मैं पृथ्वी पर नहीं आऊँगा अर्थात् अन्य को यह नाम दान आदेश नहीं दूंगा?

उत्तर : यह उनकी मनघड़ंत कहानी है। कबीर सागर में कबीर बानी नामक अध्याय में पृष्ठ 136-137 पर बारह पंथों का विवरण देते हुए वाणी लिखी हैं जो निम्न हैं :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
प्रथम आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।
दूसर जगमें जागू भ्रमावै। विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै।।
तीसरा सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
चौथा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
पंचम पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवन की करी है हानी।।
छठवाँ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्व का मर्म दृढावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
सातवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा।।
आठवाँ जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
नौवें राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमले जीव दृढावै।।
दसवें ज्ञान की काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
ग्यारहवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमें सो शब्द होय निरधारा।।
सम्वत् सत्रासै पचहत्तर होई, तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।

बारवें पंथ प्रगट है बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारवें पंथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावें।।

उपरोक्त वाणी में ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी, (हरियाणा) वाले का जन्म 1774 में वैसाख पूर्णमासी को हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि भारतीय वर्ष चैत्र मास से प्रारम्भ होता है सन्त गरीबदास जी का जन्म वैसाख मास में हुआ जो चैत्र के बाद प्रारम्भ होता है। कई बार दो चैत्र मास भी बनाए जाते हैं। उस समय शिक्षा का अति अभाव था। प्रत्येक गाँव में एक ही तीथि बताने वाला होता था। वह भी अशिक्षित ही होता था। आस–पास के शहर या गाँव से तिथि किसी अन्य ब्राह्मण से पता करके फिर गाँव में सर्व को बताता इस कारण से भी संवत् 1774 के स्थान पर संवत् 1775 लिखा गया हो वास्तव में यह संकेत गरीबदास जी के विषय में ही है)।

भावार्थ यह है कि :- कबीर परमात्मा ने गरीबदास जी का ज्ञान योग खोल कर उनके द्वारा अपना तत्वज्ञान स्वयं ही प्रकट किया। जो सत्ग्रन्थ साहेब रूप में लीपि बद्ध है। कारण यह था कि कबीर वाणी में नकली कबीर पंथियों ने मिलावट कर दी थी। इसलिए परमेश्वर कबीर जी की महिमा का ज्ञान पुनर् प्रकट कराया फिर भी तत्व भेद (सार ज्ञान) गुप्त ही रखा (जो अब प्रकट हो रहा है।) इस कारण गरीबदास जी के पंथ में तत्वज्ञान नहीं है जिस कारण से वे गरीबदास साहेब की वाणी का विपरीत अर्थ लगा कर जन्म व्यर्थ करते रहे उन्हें असंख जन्म भी ठौर नहीं है अर्थात् वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते केवल एक सन्त शीतल दास जी वाली प्रणाली में मुझ दास तक एक सन्त ही पार होता आया है जो एक सन्त सारनाम प्राप्त करके केवल एक को आगे बताकर गुप्त रखने की कसम दिलाता था। वह भी आगे केवल एक शिष्य को बताकर गुप्त

रखता था समय आने पर परमेश्वर कबीर जी के संकेत से ही आगे शिष्य को आज्ञा देता था। इस प्रकार मुझ दास तक यह सारनाम कड़ी से जुड़ा हुआ पहुँचा है अब यह सर्व अधिकारी श्रद्धालु भक्तों को देने का आदेश प्रभु कबीर जी का है इसलिए कहा है बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा यह पंथ हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र से अपरिचित होने के कारण गरीबदास पंथ के साधक असंख्य जन्म तक सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में सोनीपत जिला, झज्जर जिला, रोहतक जिला) दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास जी वाला पंथ स्पष्ट लिखा है।

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वार प्रचलित बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

यदि कबीर परमश्वेर जी ऐसा वचन कहते कि ''जब तक धर्मदास का वंश चलेगा तब तक मैं पृथ्वी पर पग नहीं रखुंगा अर्थात् पृथ्वी पर प्रकट नहीं होऊँगा। तो सन् 1518 में सतलोक प्रस्थान के 33 वर्ष पश्चात् सन् 1551 में सात वर्षीय संत दादू साहेब जी को नहीं मिलते, 209 वर्ष पश्चात् सन् 1727 में दस वर्षीय संत गरीबदास जी को गाँव छुड़ानी,

जिला झज्जर(हरियाणा प्रदेश, भारत) में नहीं मिलते तथा गरीबदास जी को नामदान नहीं देते और आगे नामदान करने का आदेश नहीं देते। इसके बाद फिर 292 वर्ष पश्चात् सन् 1813 में सात वर्षीय संत घीसा दास जी को गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ(उतर प्रदेश) में नहीं मिलते। जो आज भी यादगार साक्षी हैं तथा उपरोक्त संतों द्वारा लिखी अमृत वाणी साक्षी रूप हलफिया ब्यान(एफिडेविट) है कि परमेश्वर कबीर जी काशी वाले जुलाहा धाणक ने स्वयं साक्षात दर्शन दिए तथा अपने सतलोक के भी दर्शन करा करके अपनी समर्थता का प्रमाण दिया।

मुझ दास(रामपाल दास) को परमेश्वर कबीर साहेब जी संवत् 2054 फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष एकम(मार्च) 1997 को दिन के दस बजे मिले तथा सारशब्द की वास्तविकता तथा संगत को दान करने का सही समय का संकेत दे कर अर्न्तध्यान हो गए तथा इसको अगले आदेश तक रहस्य युक्त रखने का आदेश दिया।

''पवित्र कबीर सागर में अद्भभुत रहस्य''

''अनुराग सागर'' :- यह अध्याय कबीर सागर का ही अंग है।

वर्तमान कबीर सागर के संशोधन कर्ता श्री युगलानन्द बिहारी (प्रकाशक एवं मुद्रक-खेमराज श्री कृष्ण दास, श्री वेंकेटेश्वर प्रैस मुंबई) द्वारा अपने प्रस्तावना में लिखा है कि मेरे पास अनुराग सागर की 46 (छियालिस) प्रतियाँ हैं। जिनमें हस्त लिखित तथा प्रिन्टिड हैं। सभी की व्याख्या एक दूसरे से भिन्न हैं। अब मैंने (श्री युगलानन्द जी ने) शुद्ध करके सत्य विवरण लिखा है।

विवेचनः- श्री युगलानन्द जी ने अनुराग सागर पृष्ठ 110 पर लिखा है कि धर्मदास साहेब जी नीरू का अवतार अर्थात् नीरू वाली आत्मा ही धर्मदास रूप में जन्मी थी तथा नीमा वाली आत्मा ही आमनी रूप में जन्मी थी। वाणी बना कर लिखी है, कबीर वचन :-

चलेहु हम तब सीस नवाई, धर्मदास अब तुम लग आई।
धर्मदास तुम नीरू अवतारा, आमिनि नीमा प्रगट बिचारा।।

तथा ''ज्ञान सागर'' पृष्ठ नं. 72 पर धर्मदास को नीरू अवतार नहीं लिखा है तथा नीरू के स्थान पर नूरी लिखा है।

विशेष :- पुस्तक ''धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय'' दामाखेड़ा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 9 पर लिखा है। धर्मदास जी का जन्म संवत् 1452 (सन् 1395) तथा कबीर सागर ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ-1790 पर कबीर जी के जन्म के विषय में लिखा है कि संवत् 1455 (सन् 1398) ज्येष्ठ शुद्धि पूर्णिमा सोमवार के दिन सतपुरूष का तेज काशी के लहरतारा तालाब पर उतरा अर्थात् कबीर जी बालक रूप में प्रकट हुए।

पृष्ठ नं. 1791, 1792 (कबीर चरित्र बोध) पर लिखा है कि नीरू जुलाहा तथा उसकी पत्नी नीमा चले आ रहे थे। उन्हें एक बालक देखा उसे उठा लिया।

पृष्ठ नं. 1794 से 1818 तक आदरणीय गरीबदास जी महाराज (छुड़ानी-हरियाणा वाले) की वाणी के द्वारा महिमा समझाई है। सन्त गरीबदास जी महाराज की वाणी लिखी है (यह भी कबीर सागर में प्रक्षेप अर्थात् मिलावट का प्रत्यक्ष प्रमाण है)

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि :-

(1.) संत धर्मदास साहेब का जन्म सन् 1395 में तथा परमेश्वर कबीर जी का अवतरण सन् 1398 में तथा नीरू व नीमा को मिलन सन् 1398 में तो धर्मदास जी व परमेश्वर कबीर जी तथा नीरू व नीमा समकालीन हुए। यह वाणी की धर्मदास जी नीरू वाली आत्मा थी, गलत सिद्ध हुई। इससे सिद्ध हुआ कि कबीर सागर में मिलावट (प्रक्षेप) है जो दामाखेड़ा वालो द्वारा जान बूझ कर किया गया। सन्त गरीबदास जी (छुडानी-हरियाणा वाले) का जन्म सन् 1717 (सम्वत् 1774) में हुआ। जो कबीर जी के अन्तर्ध्यान के 199 वर्ष बाद की गरीबदास जी की वाणी भी कबीर सागर में कबीर चरित्र बोध में लिखी है। जो प्रत्यक्ष प्रमाण करती है कि कबीर सागर में मिलावट है।

स्वसम वेद बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 137 (1499) पर साखी लिखी है की काशी में भण्डारे के समय कबीर जी तो घर छोड़ कर चले गए तथा विष्णु ने भण्डारा किया:-

भीर भई साधुन की भारी, गृह तजि सत्य कबीर सिधारी।
आये विष्णु भये भण्डारी, साधुन को आदर करि भारी।।

इससे सिद्ध है कि कोई नकली कबीर पंथी मिलावट कर्ता श्री कृष्ण का भी पुजारी है तथा सत् कबीर जी की महिमा से अपरिचित है।

विशेष विवरण - कबीर सागर ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ नं. 1862 से 1865 तक लिखा है कि कलयुग में कबीर साहेब ने चार गुरू नियत किये हैं।

(1.) धर्मदास जी जिस के बयालिश वंश है तथा ''उत्तर'' में गुरूवाई सौंपी है।

(2.) दूसरे चतुर्भुज ''दक्षिण'' में गुरूवाई करेगें।

(3.) तीसरे बंक जी ''पूर्व'' में गुरूवाई करेगें।

(4.) चौथे सहती जी ''पश्चिम'' में गुरूवाई करेगें।

जिस समय कबीर सागर लिखा गया सन् 1505 (सम्वत् 1562) में उस समय तक केवल एक धर्मदास जी ही प्रकट हुए थे। जब ये चारों गुरू प्रकट हो जाऐगें तब पूरी पृथ्वी पर केवल कबीर साहेब जी का ही ज्ञान चलेगा।

यही प्रमाण ''अनुराग सागर'' पृष्ठ नं. 104-105 पर है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि कलयुग में धर्मदास जी के अतिरिक्त तीन गुरू और पृथ्वी पर प्रकट होगें, उनके द्वारा भी जीव उद्धार होगा। दामा खेड़ा वालों द्वारा बनाई दन्त कथा गलत सिद्ध हुई कि कलयुग में केवल धर्मदास जी के वंशजो द्वारा ही जीव उद्धार सम्भव है अन्य द्वारा नहीं। यह उल्लेख कबीर सागर में कबीर वाणी पृष्ठ 160 पर लिखा है जो स्पष्ट मिलावट दिखाई देती है।

संत रामपाल दास जी महाराज को एक 450 वर्ष पुराना कबीर सागर प्राप्त हुआ है। जो बहुत ही जीरण-सीरण है। उसके आधार पर कबीर सागर का संशोधन किया जाएगा। इसकी पूर्ति के लिए परमेश्वर कबीर जी ने कहा था जो कबीर सागर में ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 137 (1001) पर लिखा है। 12 वां पंथ गरीबदास पंथ होगा। उस गरीबदास जी द्वारा मेरी यथार्थ महिमा की वाणी प्रकट होगी। उस को कोई समझ नहीं सकेगा। उस वाणी को यथार्थ रूप में समझाने तथा सर्व पंथों को मिटाकर एक ''यथार्थ कबीर पंथ'' बनाने के लिए मैं स्वयं उसी गरीबदास वाले बारहवें पंथ में आऊंगा।

पाठकगण परमेश्वर कबीर अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज आ चुके हैं। इसी विषय में जन्म साखी भाई बाले वाली तथा जय गुरूदेव पंथ मथुरा वाले ने सन् 1971 में स्पष्ट कहा था कि जगत के तारणहार का जन्म हो चुका है। वह 20 वर्ष का हो चुका है। ''वर्तमान कबीर सागर'' के संशोधन कर्ता श्री युगलानन्द जी ने ज्ञान प्रकाश- बोध सागर पृष्ठ नं. 37 के नीचे टिप्पणी की है कि इस ज्ञान प्रकाश की कई लीपी मेरे पास हैं परन्तु कोई भी एक दूसरे से मेल नहीं खाती तथा ''अनुराग सागर'' की प्रस्तावना पृष्ठ 5 (117) तथा 6 (118) में भी स्पष्ट किया है तथा कहा है कि लेखक महात्माओं की कृपा से पक्षपात और अविद्यावश कबीर पंथ के ग्रन्थों की दुर्दशा हुई है। कृपया देखें फोटोकापी ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 37 तथा ''अनुराग सागर'' की प्रस्तावना के पृष्ठ 5 (117) तथा 6 (118) की फोटोकापी।

बोधसागर 477 (३७)

तब सत्य पुरुष आज्ञा मोहि कीन्हा। तत क्षण आय पृथ्वी पग दीन्हा
बार अनेक कीन्ह मिलापू। धरम दास नहिं चेतहु आपू॥
पाहन पूजि ध्यान मन लाये। सद्गुरु शब्द चीन्हि नहिं पाये॥
तीरथ व्रत कीन्ह बहु करनी। रूपदास गुरुकी गहि शरनी॥
तासु प्रीति तोहि आन जगावा। नाम प्रताप यह परभावा॥
जो जिव नाम तुम्हारा लैहैं। ताहि जीवको काल न खैहैं॥
सद्गुरु भक्ति जाहि कुल होई। तरे एकोतर पुरुषा सोई॥

दूसरी प्रतियोंमें नीचे लिखे अनुसार है
सद्गुरु वचन

धर्मनि सुनु आपनी करनी। जेहि तोहि मिलेउ शब्द भौतरनी॥
द्वापर अन्त सुपच तुम रहेऊ। तव सुत एक सो मम व्रत गहेऊ॥
तासु प्रीति तोहि आनि जगावा। है परताप नाम परभावा॥
सद्गुरु भक्ति जाहि कुल होई। तरै एकोतर पछिला सोई॥
वही संयोग तोहि हम भेटे। तुव सुत प्रीति तार दुख मेटे॥

नोट—एक प्रतिमें तो ऊपरके प्रमाणहो लिखा है किन्तु कई प्रतियोंमें ऊपरकी नौ पंक्तिके बदले नीचेकी पंक्तियाँ लिखीं हैं। पाठक गण स्वयम् विचार करके जो उत्तम और प्रामाणिक समझे वह रखें और पाठ करें। किन्तु इतना तो अवश्य कहा जायगा कि भिन्न २ ग्रन्थोंमें इन दोनों बातों का प्रमाण मिलता है। और लेखक महात्माओंकी कृपा से पक्षपात और अविद्यावश कबीरपंथके ग्रन्थोंकी जो दुर्दशा हुई है वह साक्षर वर्गसे छिपा नहीं है। ग्रन्थोंकी यही दशा देखकर स्वयम् कबीर पंथ यहांतक वंशधर कहीं कतिपय महंत संत लज्जावश हो किसीके सामने इन ग्रन्थोंका नाम लेते भी सकुचाते हैं। और हृदयसे इन सब ग्रन्थोंपर अश्रद्धा रखते हैं। इस ज्ञान प्रकाश की कई प्रतियाँ मेरे पास उपस्थित हैं किन्तु किसी भी प्रतिका एक दूसरे के साथ मिलाप नहीं होता है। इसी प्रकारसे लगभग सब ग्रन्थोंकी दशा हो गयी है। जो जो नवीन प्रतियाँ हैं उन सबोंमें अटपट छन्दोंभंग अर्थभंग और भावभंग आदि दोष पूर्ण रीतिसे भरे हैं। हाँ पहलेकी प्रतियां कुछ शुद्ध हैं उसीके अनुसार जहाँतक होता है रखनेका प्रयत्न करता हूँ। ऐसा करनेपर भी प्रस्तुत विषयके समान जहाँ संदिग्ध विषय आजाते हैं वहाँ दोनों को रख देना उचित जानता हूँ। इतना होगा जिनके पास जैसी २ प्रति होगी वे अपनी प्रति—

117

प्रस्तावना

अनुरागसागर आजतक लखनऊ, पटना, काशी, नरसिंहपुर और बम्बई में भिन्न-भिन्न रूप से छप चुके हैं। जिनमें से अंतिम बार बम्बई में जो ग्रन्थ छपा है वह मेरे नाम से छापा गया है। क्योंकि वह ग्रन्थ मैंने ही 'श्रीवेंकटेश्वर प्रेसाध्यक्षको दिया था। यद्यपि इसके मुद्रणके आरंभमें मेरे पास इस ग्रन्थकी १३ हस्तलिखित प्रतियाँ उपस्थित थीं, तथापि प्रेसवालोंकी शीघ्रताके कारण उसे पूर्णरूपसे सब प्रतियों द्वारा शुद्ध करनेका अवसर नहीं मिल सका, इसलिये विशेष स्थानों पर अन्य ग्रन्थों के साथ मिलकर छपनेको दे दिया था। यही कारण है कि उसकी प्रस्तावना भी लिखी न जा सकी।

किन्तु उस समय भी उपर्युक्त १३ प्रतियोंको देखनेका अवसर मिलनेसे मुझे ज्ञान हो गया कि, उन तेरहों प्रतियोंमें परस्पर बहुतही विभिन्नता है। इससे किसी शुद्ध और पुरानीसे पुरानी प्रतिकी खोजमें मैं लग गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि, छपी और हस्तलिखित सब मिलाकर इस समय ४६ प्रतियाँ मेरे पास उपस्थित हैं, जिनका ब्योरा इस प्रकार है :—

१ प्रति जो सबसे पुरानी है, प्रमोद गुरु बालापीरसाहबके समय की लिखी हुई जान पड़ती है, क्योंकि 'वंशावली लिखते हुए लिखनेवालेने वहीं तक वंशोंका नाम लिखा है और वह समय भी उन्हींका था।

२ प्रतियाँ-कमलनाम साहबके समयकी लिखी हैं, इसके अतिरिक्त ८ प्रतियाँ और भी सं. १८६० से लेकर १९३० तककी लिखी हुई मुझे अपने पिता श्रीजी के पुस्तकालयसे प्राप्त हुई थीं।

१ प्रति-अमोलनाम साहबके समय की लिखी है, जो गया जिलेके किसी सन्तकी लिखी हुई है।

१ प्रति-सुरतसनेही नाम साहबके समयकी लिखी है जो खास सिधौंडीमें बैठकर लिखी गई है, जो खास मुकाम सहरांव पो. कांथा जि. उन्नावके कबीरपंथी सेवक आसादीन तम्बोलीसे मिली थी, जिसके वंशमें कई पीढ़ी तक महन्ती चली आयी थी।

५ प्रतियाँ-पाकनाम साहब के समयकी लिखी हुई हैं।

८ प्रतियाँ-प्रकटनाम साहबके समयकी लिखी हैं; जिसमें १ तो धीरजनाम साहबकी प्रधान धर्मत्नी श्रीरानी सूरजकुँवरसाहबके हाथकी लिखी हुई है।

९ प्रतियां-प्रकटनाम साहब के पश्चात्की लिखी हैं जिनमें से ४ प्रतिहोमें वंशावली धीरजनाम साहबतक और शेष ५ में. पं. श्रीउग्रनाम साहबतक लिखी हैं, इसीसे १ प्रति वह भी है जो कबीरधर्म नगरके कबीरधर्मप्रकाशमें छपने के लिये लिखायी गयी थी किंतु छप नहीं सकी।

१ प्रति-बांधोगढ़ सिलौंडी स्थानके वंशगुरु गोसाईं मधुकर नाम साहब के पुत्र श्रीगोपालदास-जीके हाथकी लिखी है, जो मुकाम कसबा जि. पूर्निया के महन्त श्रीहरिचरणदासजी साहबने कृपा करके ग्रन्थ छपते समय भेज दी थी।

२ प्रतियां—छपरा जिलेके बांधोगढ़के अनुयायी महन्तोंकी लिखी हैं।

२ प्रतियां-जागूसाहबके घरानेवालोंकी लिखी हुई हैं १ और प्रति काशीके अनुयायी किसी साधुने महन्त रंगूदासजीके समय लिखी थी वह हैं। शेष

५ प्रतियां-पांच स्थानों की छपी हुई प्रतियां हैं।

(६) 118

प्रस्तावना

इस प्रकार इस ग्रन्थके संशोधन समय ४६ प्रतियाँ मेरे पास उपस्थित थीं यदि इन प्रतियों की परस्पर विभिन्नताके विषयमें जो कुछ मैंने नोटकर रखा है उसे यहां लिखने लग जाऊँ तो एक अच्छी पुस्तक तैयार हो जायगी इस लिये मैंने विचार किया है कि "अनुरागसागरकी भूमिका नामकी एक पुस्तक अलग ही लिखकर पाठकों को भेंट करूँगा।

तथापि इतना तो अवश्य कहे बिना नहीं रहा जाता कि,इन ४६ प्रतियों की परस्परविभिन्नताके कारण एक-एक विषयको जाननेके लिये कभी तो कुल ४६ प्रतियोंको उलटना पड़ता था, कभी एक विषयको जाननेके लिये सच्चे ग्रन्थको ही पढ़ जाना पड़ता था, और भिन्न भिन्न शाखा (पंथ) वालोंने अपनी बड़ाई जताने के लिये एक दूसरे की निन्दा और खण्डनमण्डन लिखे हुए हैं, ऐसे स्थानोंपर कई कई दिनोंतक विचार करना पड़ा था। जिसका विशेष वृत्तांत जाननेके लिये उपर्युक्त भूमिकाको अवश्य देखना चाहिये, इस प्रकारसे कई महीनोंके कठिन परिश्रमसे सब ग्रन्थोंको मिलाकर मैंने यह ग्रन्थ ठीक किया है।

यद्यपि मेरे परिश्रमका फलस्वरूप यह ग्रंथ ऐसा सुन्दर और इतना बड़ा हुआ है कि, आजतक किसी भी मठ मकान और स्थानके साधु, संत, महन्त और आचार्यके पास इसके जोड़का ग्रन्थ मिलना असम्भव है, तथापि जिन ग्रन्थोंके द्वारा शुद्ध और मिलान करके यह ग्रन्थ छपाया गया है उन ग्रन्थों की परस्परविरोधताको देखकर मेरा मन परस्परके ऐसे स्वार्थसाधक खण्डवाले ग्रन्थोंसे घबरा उठा है और मैं इस बातकी खोजमें हूँ कि, इन प्रतियोंसे भी पुरानी प्रति मिले तो उससे फिर इसे शुद्ध करूँ।

कबीरधर्मनगर दामार, खेड़ा,

१-४-१९१४

वैशाख बदि ८ स. १९७१ वि.

भवदीय–

कबीराश्रमाचार्य स्वामी

श्रीयुगलानन्द बिहारी.

विशेष :- भक्त जन विचार करें कि काल ने कैसा जाल फैलाया है। अपने दूतों द्वारा परमेश्वर के सत् ग्रन्थों को ही बदलवा डाला। फिर भी सत्य को छुपा नहीं सके।

कबीर : चोर चुराई तूम्बड़ी, गाढै पानी मांही।
वो गाढे वह उपर आवै, सच्चाई छयानी नाहिं।।

इसकी पूर्ति परमेश्वर ने संत गरीबदास जी (छुड़ानी-हरियाणा वाले) द्वारा करवाई है। गरीबदास जी द्वारा भी संस्ययुक्त वाणी युक्त करवाई है जिस में श्री विष्णु जी की महिमा भी अधिक वर्णित है तथा सारज्ञान (तत्वज्ञान) भी गुप्त ढ़ंग से लिखा हैं संत गरीबदास जी की वाणी में निर्णायक ज्ञान नहीं है। कबीर जी की शक्ति से ही आदरणीय गरीबदास जी ने वाणी बोली है। कबीर जी ने जो बुलवाना था वही बुलवाया ताकि अब तक(मुझ दास रामपाल तक) भेद छुपा रहे। अब उसी बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने वह पूर्ण ज्ञान(तत्वज्ञान) मुझ दास(रामपाल दास) तेरहवां वंश द्वारा प्रकट कराया है।

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पष्ठ 134 (998):-

''वंश प्रकार''

प्रथम वंश उत्तम।1। दूसरा वंश अहंकारी।2। तीसरा वंश प्रचंड।3। चौथे वंश बीरहे।4। पाँचवें वंश निद्रा।5। छटे वंश उदास।6। सांतवें वंश ज्ञानचतुराई।7। आठे द्वादश पन्थ विरोध।8। नौवं वंश पंथ पूजा।9। दसवें वंश प्रकाश।10। ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा।11। बारहवें वंश प्रगट होय उजियारा।12। तेरहवें वंश मिटे सकल अँधियारा।13।

भावार्थ :- उपरोक्त विवरण में प्रथम वंश जो उत्तम लिखा है वह चूड़ामणी साहेब के विषय में है, दूसरा वंश अहंकारी लिखा है ''यागौदास'' पंथ है, तीसरा वंश प्रचण्ड लिखा है, यह सूरत गोपाल पंथ है, चौथा वंश बीरहे लिखा है, यह ''मूल निरंजन पंथ'' है। पांचवाँ वंश ''पूजा टकसार पंथ'' है। छठा वंश ''उदास'' यह ''भगवान दास पंथ'' सातवां वंश ''ज्ञान चतुराई'' यह सत्यनामी पंथ है। आठवाँ वंश''द्वादश पंथ विरोद्ध'' यह कमाल का पंथ है। नौवाँ वंश ''पंथ पूजा'' यह राम कबीर पंथ है। दशवाँ वंश प्रकाश यह प्रेमधाम (परम धाम) की वाणी पंथ है। ग्यारहवाँ वंश ''प्रकट पसारा'' यह जीवा पंथ है। बारहवाँ वंश ''गरीबदास पंथ''

है। तेरहवाँ वंश यह यथार्थ कबीर पंथ है जो मुझ दास (सन्त रामपाल दास) द्वारा बिचली पीढ़ी के उद्धार के लिए प्रारम्भ कराया है। कबीर परमेश्वर ने अपनी वाणी में काल से कहा था कि तेरे बारह पंथ चल चुके होगें तब मैं अपना नाद (वचन-शिष्य परम्परा वाला) वंश अथार्त् अंस भेजेगें उसी आधार पर यह विवरण लिखा है। बारहवां वंश (अंश) सन्त गरीबदास जी से कबीर वाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की महिमा का कुछ-कुछ संस्य युक्त ज्ञान विस्तार होगा। जैसे सन्त गरीबदास जी की परम्परा में परमेश्वर कबीर जी को विष्णु अवतार मान कर साधना तथा प्रचार करते हैं। संत गरीबदास जी ने ''असुर निकन्दन रमैणी'' में कहा है ''साहेब तख्त कबीर खवासा। दिल्ली मण्डल लीजै वासा। सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी'' भावार्थ है कि सन्त गरीबदास जी वाला बारहवाँ पंथ (अंश) तो काल तक साधना बताने वाला कहा है। इसलिए केवल कबीर महिमा की वाणी ही संत गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई है। उसमें कहा है कि कबीर परमात्मा के तख्त अर्थात् सिंहासन का ख्वास अर्थात् नौकर दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र में आएगा वह उस क्षेत्र के कंपण अर्थात् कंजूस व्यक्तियों को परमात्मा की महिमा बता कर जगाएगा अर्थात् दान-धर्म में उनकी रूची बढ़ाएगा। वह तेरहवाँ अंश कबीर परमात्मा के दरबार का उच्चतम् सेवक होगा। वह कबीर परमेश्वर का अत्यंत कंपा पात्र होगा। ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 1 मन्त्र 7 में उप अग्ने अर्थात् उप परमेश्वर कहा है। इसलिए पूर्ण परमात्मा अपना भेद छुपा कर दास रूप में प्रकट होकर अपनी महिमा करता है। इसलिए उसी परमेश्वर को ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 4 मन्त्र 6 में तस्करा अर्थात् आँखों मे धूल झोंक का कार्य करने वाला तस्कर कहा है। श्री नानक जी ने उसे ठगवाड़ा कहा है। इसलिए तेरहवें अंश को (सन्त रामपाल दास को) उनका दास जाने चाहे स्वयं पूर्ण प्रभु का उपशक्तिरूप(उप अग्ने) समझें। इसलिए लिखा है कि बारहवें अंश की परम्परा में हम ही चलकर तेरहवें अंश रूप में आऐंगे। वह तेरहवां वंश (अंस) पूर्ण रूप से अज्ञान अंधेरा समाप्त करके परमेश्वर कबीर जी की वास्तविक महिमा तथा नाम का ज्ञान करा कर सभी पंथों को समाप्त करके एक ही पंथ चलाएगा, वह तेरहवां वंश हम (परमेश्वर कबीर) ही होंगे।

कबीर वाणी (कबीर सागर) पेष्ठ 136 पर :-

बारह पंथों का विवरण दिया है। बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ, बारहवां पंथ लिखा है कबीर सागर, कबीर चरित्र बोध पेष्ठ 1870 पर) के विषय में कबीर सागर कबीर वाणी पेष्ठ नं. 136-137 पर वाणी लिखी है कि :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भुले जीव न जाय ठिकाना।।
(प्रथम) आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।
दूसर जग में जागू भ्रमावै। बिना भेद ओ ग्रन्थ चुरावे।।
तीसरा सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
चौथा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
पंचम पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवनकीकरी है हानी।।
छठवाँ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
सातवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा।घटके माहीं मार्ग निवासा।।
आठवाँ जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
नौमा राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमलै जीव दृढ़ावै।।
दशवां ज्ञानकी काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
ग्यारहवाँ भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमेंसो शब्द होय निरधारा।।
संवत सत्रासै पचहत्तर होई। तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे।।
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्म में ठौर ना पावै।।
बारवै पन्थ प्रगट होवै बानी।शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं।ये बारा पंथ हमहीको ध्यावैं।।
बारहें पन्थ हमही चलि आवै। सब पंथ मिटा एकहीपंथ चलावै।।
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा।।
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना।।
धर्मराय से मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी।।

धर्मदास मोरी लाख दोहाई,मूल(सार)शब्द बाहर नहीं जाई।
मूल(सार)ज्ञान बाहर जो परही,बिचली पीढी हंस नहीं तरहीं।
तेतिस अर्ब ज्ञान हम भाखा, तत्वज्ञान गुप्त हम राखा।
मूलज्ञान(तत्वज्ञान)तब तक छुपाई, जब लग द्वादश पंथ न मिट जाई।

कबीर सागर अध्याय जीव धर्म बोध (बोध सागर) पंष्ठ 1937 पर लिखा है :-

पुस्तक=कबीर सागर=अध्याय जीव धर्म बोध (बोध सागर) पंष्ठ 1937 पर प्रमाण :-

धर्मदास तोहि लाख दोहाई। सार शब्द बाहर नहिं जाई।।
सारशब्द बाहर जो परि है।बिचलै पीढी हंस नहीं तरि है।।
युगन–२ तुम सेवा किन्ही। ता पीछे हम इहां पग दीनी।।
कोटिन जन्म भक्ति जब कीन्हा।सारशब्द तब ही पै चीन्हा।।
अंकूरी जीव होय जो कोई। सार शब्द अधिकारी सोई।।
सत्यकबीर प्रमाण बखाना। ऐसो कठिन है पद निर्वाना।।

कबीर सागर ''कबीर बानी'' नामक अध्याय (बोध सागर) पंष्ठ नं. 134 से 138 पर लिखे विवरण का भावार्थ है :-

पंष्ठ नं. 134 पर बारह वंशों (अंसों) के बाद तेरहवें वंश (अंस) में सब अज्ञान अंधेरा मिट जाएगा। संत गरीबदास पंथ तक काल के बारह वंश अपनी-2 चतुरता दिखाएगें। पंष्ठ नं. 136-137 पर ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी हरियाणा वाले का जन्म 1774 में हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि संत गरीब दास जी का जन्म वैशाख मास की पूर्णमासी को हुआ। संवत् वाला वर्ष चैत्र से प्रारम्भ होता है जो वैसाख मास के साथ वाला है। कई बार तिथीयों के घटने बढ़ने से दो मास बन जाते हैं। उस समय शिक्षा का अभाव था तिथी व संवत् बताने वाले भी अशिक्षित होते थे। जिस कारण से संवत् 1775 के स्थान पर गरीबदास जी का जन्म संवत् 1774 लिखा गया होगा परन्तु यह संकेत संत गरीबदास जी की ओर है।)।

भावार्थ है कि बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा उस पंथ सहित अर्थात् उपरोक्त बारह पंथों के अनुयाई मेरी महिमा का गुणगान करेगें तथा हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र के अपरिचित होने के कारण साधक असंख्य जन्म सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द तथा सारज्ञान (तत्वज्ञान) छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में, सोनीपत, झज्जर तथा रोहतक जो पहले एक ही जिला था) दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। मुझ दास का पैत्रिक गाँव धनाना इसी पुराने रोहतक जिले में है। सन् 1951 में मेरा (संत रामपाल का) जन्म हुआ था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास लिखा है।

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वारा प्रचलित बारह पंथों का विवरण (कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से) :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

विशेष :- यहाँ पर प्रथम पंथ का संचालक नारायण दास लिखा है जबकी कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ 136 पर प्रथम पंथ का संचालक चूरामणी लिखा है, शेष प्रकरण ठीक है। इसमें भी दामाखेड़ा वाले अनुयाइयों ने चुड़ामणी को हटाने का प्रयत्न किया है। उसके स्थान पर नारायण दास लिख दिया। जबकि नारायण दास तो बिल्कुल विपरित था। उसका तो विनाश हो गया था। इसलिए प्रथम पंथ चुड़ामणी जी का ही मानना चाहिए। दूसरी बात है कि कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ नं.

136 पर लिखी वाणी में चूड़ामणी को मिला कर ही बारह पंथ बनते हैं।

विचार करें:- अब वही एक पंथ मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा परमेश्वर कबीर जी की आज्ञा व शक्ति से चलाया जा रहा है जो सभी पंथों को एक करेगा।

वर्तमान कबीर सागर का संशोधन कर्ता भी दामा खेड़ा वालों का अनुयायी है। कबीर सागर में कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) में लेखक ने लिखा है कि धर्मदास जी के बयालीस वंश का नियम है कि प्रत्येक वंश पच्चीस वर्ष बीस दिन तक गद्दी पर बैठा करे तथा स्वःइच्छा से शरीर छोड़े। इस से अधिक तथा कम समय कोई गद्दी पर न रहे। यह भी लिखा है कि वर्तमान में यही क्रिया चल रही है।

''धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय'' पुस्तक पष्ठ नं. 32 से 49 तक विवरण दिया है :-

पहला चुरामणी जी सम्वत् 1570 से 1630 तक 60 वर्ष कुदुरमाल नामक स्थान की गद्दी पर रहे।

दूसरा सुदर्शन नाम जी सम्वत् 1630 से 1690 तक 60 वर्ष रतनपुर नामक स्थान की गद्दी पर रहे।

तीसरा कुलपत नाम जी सम्वत् 1690 से 1750 तक 60 वर्ष कुदुरमाल नामक स्थान की गद्दी पर रहे।

चौथा प्रमोद गुरू बाला पीर जी सम्वत् 1750 से 1804 तक 54 वर्ष मंढला नामक स्थान की गद्दी पर रहे।

पाँचवां केवल नाम जी सम्वत् 1804 से 1824 तक 20 वर्ष धमधा गद्दी पर रहे।

छठवां अमोल नाम जी सम्वत् 1824 से 1846 तक 22 वर्ष मंडला नामक स्थान की गद्दी पर रहे।

सातवां सूरत सनेही जी सम्वत् 1846 से 1871 तक 25 वर्ष सिंघाड़ी नामक स्थान की गद्दी पर रहे।

आठवां 1872 से 1890 तक 18 वर्ष कवर्धा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।

नौवां 1890 से 1912 तक 22 वर्ष कवर्धा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।

दसवां 1912 से 1939 तक 27 वर्ष कवर्धा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।

ग्यारहवें को गद्दी ही नहीं हुई। क्योंकि दो वर्ष की आयु में मंत्यु हो गई।

बारहवां उग्र नाम साहब जी सम्वत् 1953 में गद्दी पर बैठा तथा सम्वत् 1971 में मंत्यु हुई, 18 वर्ष तक कवर्धा स्थान को त्याग कर दामा खेड़ा में स्वयं गद्दी बना कर रहा तथा सम्वत् 1939 से 1953 तक 14 वर्ष तक दामाखेड़ा नामक स्थान की गद्दी के पंथ वंश बिना पंथ रहा।

तेरहवां वंश दयानाम साहेब सम्वत् 1971 से 1984 तक 13 वर्ष दामाखेड़ा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।

{शुद्धिकरण :- ग्यारहवें को गद्दी नहीं मिली। इसलिए इसकी गिनती वंश गुरू गद्दीनशीनों में नहीं हुई। उसकी दो वर्ष की आयु में मंत्यु हो गई थी। ग्यारहवां वंश गुरू उग्रनाम साहेब है। बारहवां वंश गुरू दयानाम साहेब है। तेरहवां उदित नाम साहेब है। चौदहवां प्रकाश मुनि साहेब वर्तमान में है।}

उपरोक्त विवरण से सिद्ध है कि दामाखेड़ा वालों की मनघड़न्त कहानी है कि वंश गद्दी से ही कलयुग में मुक्ति सम्भव है तथा प्रत्येक गद्दी वाला महंत 25 वर्ष 20 दिन तक गद्दी पर रहता है। फिर दूसरे को उत्तराधिकारी बना कर शरीर त्याग जाता है। न अधिक समय, न कम समय अपितु पूरे 25 वर्ष 20 दिन ही रहता है, यह गलत सिद्ध हुआ। क्योंकि उपरोक्त विवरण में किसी भी गद्दी वाले ने 25 वर्ष 20 दिन का समय नहीं रखा कोई 60 वर्ष कोई 54, 22, 27 या पूरे 25 या 18 वर्ष समय गद्दी पर रहे हैं।

शंकाः- अनुराग सागर पंष्ठ नं. 120 से 123 तक बारह दूतों का वर्णन किया है। जिसमें लिखा है कि आठवां दूत जो पंथ चलाएगा वह कुछ कुरान तथा कुछ वेद चुरा कर कुछ कबीर जी का केवल निर्गुण ज्ञान लेकर अपना ज्ञान प्रचार करेगा तथा एक तारतम्य पुस्तक लिखेगा। आप भी वेद व कुरान आदि का वर्णन करके पुस्तक लिख रहे हो। आपका मार्ग कबीर मार्ग ही है क्या प्रमाण है?

समाधानः- यहाँ पर बारह काल पंथों का विवरण है जो दामा खेड़ा वालों के द्वारा मिलावट करके लिखा गया है।

(1.) क्योंकि कबीर बानी (बोध सागर) पंष्ठ नं. 134 से 138 तथा कबीर चरित्र बोध पंष्ठ नं. 1870 पर लिखे बारह पंथों के विवरण से नहीं मिलती।

(2.) यह विवरण आठवें पंथ के प्रवर्तक का है। उसके बाद राम कबीर पंथ, सतनामी पंथ आदि सर्व बारह पंथ चल चुके हैं।

अब संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा तेरहवां अर्थात् एक वास्तविक मार्ग चलाया जा रहा है। जिससे सर्व पंथ मिट कर एक पंथ ही रह जाएगा। जिसका प्रमाण आप पूर्व लिखे विवरण में पढ़ चुके हैं। जो स्वयं कबीर परमेश्वर जी की आज्ञा व कृपा से चल रहा है। यह दास (रामपाल दास) वेदों तथा कुरान व कबीर वाणी आदि को चुरा कर पुस्तक नहीं लिख रहा है अपितु परमेश्वर कबीर साहेब जी की वाणी के आधार से प्रचार किया जा रहा है तथा परमेश्वर की कर्विवाणी (कबीर वाणी) की सत्यता के लिए वेदों तथा कुरान आदि का समर्थन लिया जा रहा है। वाणी चुराने का अर्थ होता है कि वास्तविक ज्ञान को छुपाने के लिए सतग्रन्थों के ज्ञान को मरोड़-तरोड़ कर अपने लोक वेद (दंत कथा) को उजागर करना परन्तु यह दास तो परमेश्वर कबीर जी की वाणी को ही आधार मान कर यथार्थ ज्ञान के आधार से मार्ग दर्शन कर रहा है।

इसलिए हमारा मार्ग कबीर मार्ग (पंथ) है। शेष पंथों की साधना शास्त्र विरूद्ध अर्थात् मनमाना आचरण (पूजा) है जो मोक्षदायक नहीं है।

कबीर सागर– ''अमर मूल'' पृष्ठ 196 पर साखी लिखी है :

साखीः- नाम भेद जो जान ही, सोई वंश हमार।
नातर दुनियाँ बहुत ही, बूड़ मुआ संसार।।

पृष्ठ 205 पर लिखा हैः-

नाम जाने सो वंश तुम्हारा, बिना नाम बुड़ा संसारा।

पृष्ठ 207 पर लिखा हैः-

सोई वंश सत शब्द समाना, शब्द हि हेत कथा निज ज्ञाना।

पृष्ठ 217 पर लिखा हैः-

बिना नाम मिटे नहीं संशा, नाम जाने सो हमारे वंशा।
नाम जाने सो वंश कहावै, नाम बिना मुक्ति न पावै।
नाम जाने सो वंश हमारा, बिना नाम बुड़ा संसारा।

पृष्ठ 244 पर लिखा हैः-

बिन्द के बालक रहें उरझाई, मान गुमान और प्रभुताई।

साखीः- हमरे बालक नाम के, और सकल सब झूठ।

सत्य शब्द कह जानही, काल गह नहीं खूंठ।।
वंश हमारा शब्द निज जाना, बिना नाम नहिं वंशहि माना।।
धर्मदास निर्मोहि हिय गहेहू। वंश की चिन्ता छाड़ तुम देहू।

कबीर सागर के अध्याय अनुराग सागर पंष्ठ 138 से 141 तक का भावार्थ है कि:- तेरे वंश में बिन्द (सन्तान) तो अभिमानी होगें तथा साथ ही अहंकार वश झगड़ा करेगें तथा कहेगें कि हम तो धर्मदास के वंश (सन्तान) से हैं। हम श्रेष्ठ है। कबीर परमेश्वर ने कहा है कि मेरा वास्तविक वंश वही है जो मेरे निज शब्द अर्थात् सारशब्द से परिचित है जो सारशब्द से परिचित नहीं है वह हमारा वंश नही माना जाएगा। इसलिए बारहवें पंथ अर्थात् गरीबदास जी वाले पंथ तक काल के पंथ ही कहा गया है। इसलिए धर्मदास जी से कबीर जी ने कहा है कि आप अपने वंश की चिन्ता छोड़ कर निर्मोही हो जाओ।

कबीर साहेब ने कहा कि यदि तेरे वंश वाले मेरे वचन अनुसार चलेगें तो उन्हे भी पार कर दूंगा अन्यथा नहीं।

पंष्ठ नं. 139 से :-

वचन गहे सो वंश हमारा, बिना वचन (नाम) नहीं उतरे पारा।
धर्मदास तब बंस तुम्हारा, वचन बंस रोके बटपारा।।
शब्द की चास नाद कह होई, बिन्द तुम्हारा जाय बिगोई।
बिन्द ते होय ना पंथ उजागर। परखि के देखहु धर्मनिनागर।।
चारहु युग देखहु समवादा, पन्थ उजागर किन्हों नादा।
और वंस जो नाद सम्हारै, आप तरें और जीवहीं तारे।
कहां नाद और बिन्द रै भाई। नाम भक्ति बिनु लोक ना जाई।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा जो मेरी आज्ञा का पालन करेगा। वही हमारा वंश अर्थात् अनुयाई होगा अन्यथा वह पार नहीं होगा तेरे बिन्द वाले अर्थात् शरीर से उत्पन्न सन्तान महंत परम्परा तो अभिमानी हो जाऐगें। वे तो सीधे नरक के भागी होगें। केवल नाद (शिष्य परम्परा) से ही तेरा पंथ चल सकेगा यदि वास्तविक नाम चलता रहेगा तो अन्यथा तेरे दोनों ही नाद (शिष्य) बिन्द (शरीर की संतान) भक्तिहीन हो जाएगें। केवल तेरा वंश फिर भी चलेगा।

धर्मदास आप की दोनों परम्परा (नाद व बिन्द) से अन्य कोई मेरे

वचन अर्थात् नाद (शिष्य परम्परा) के अनुयायी होगें उनसे मेरा यथार्थ कबीर पंथ उजागर (प्रसिद्ध) होगा। कबीर साहेब कह रहे हैं कि धर्मदास किसी युग में देख ले केवल नाद (वचन) अर्थात् शिष्य परम्परा से ही जीव कल्याण हुआ है तथा बिन्द (शरीर) की सन्तान अर्थात् महंत परम्परा से कोई सत्य मार्ग नहीं चलता, वे तो अभिमानी होते हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि दामाखेड़ा वाली गद्दी वाले महंत जी मनघड़ंत कहानी बना कर श्रद्धालुओं को गुमराह कर रहे हैं। जो वास्तविक सतनाम(जो दो मंत्र का है जिससे एक ओ३म् तथा दूसरा सांकेतिक तत् मन्त्र है) यह दास(रामपाल दास) दान करता है। उसका प्रमाण आदरणीय धर्मदास साहेब जी की वाणी जो कबीर सागर तथा कबीर पंथी शब्दावली में तथा आदरणीय गरीबदास साहेब जी की वाणी में तथा आदरणीय दादू साहेब जी की वाणी में तथा आदरणीय घीसा दास साहेब की वाणी में तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी की वाणी में प्रमाण है। परंतु वर्तमान के सर्व तथा कथित कबीर पंथी तथा उपरोक्त अन्य संतों के पंथी सतनाम से अपरीचित हैं तथा मनमाने नाम जाप दान कर रहे हैं। जो व्यर्थ हैं।

प्रश्न : एक भक्त कह रहा था कि सातवीं पीढ़ी के बाद सुधार कर लिया था?

उत्तर : यदि सुधार कर लिया होता तो उनके पास सतनाम मंत्र होता। यह भी किसी काल के दूत की ही सोच है। यदि अब कोई मुझ दास से नाम प्राप्त करके ढोंग रचे कि मेरे पास भी वही मंत्र हैं तो वह अनअधिकारी होने के कारण व्यर्थ है।

प्रश्न : आप तीन बार नाम देते हो तथा फिर सारशब्द भी प्रदान करके चौथा पद प्राप्त कराते हो। परंतु दामा खेड़ा वाले तथा अन्य कबीर पंथी महंत, संत तो नाम एक ही बार देते हैं। कौन सा सत्य है? इसकी परख कैसे हो ?

कबीर पंथ में दामाखेड़ा वाले महन्तों द्वारा तथा उन्हीं से भिन्न हुए खरसिया गद्दी वालों तथा लहरतारा काशी (बनारस) वालों द्वारा जो उपदेश मन्त्र (नाम) दिया जाता है। वह निम्न है :- ''सत सुकृत की रहनी रहो। अजर अमर गहो सत्य नाम। कह कबीर मूल दीक्षा सत्य

शब्द प्रमाण। आदि नाम, अजर नाम, अमी नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम, आकाशे अदली निज नाम। यही नाम हंस का काम। खुले कुंजी खुले कपाट पांजी चढ़े मूल के घाट। भर्म भूत का बान्धो गोला कह कबीर यही प्रमाण पांच नाम ले हंसा सत्यलोक समान''

उत्तर : कबीर सागर में अमर मूल बोध सागर पष्ठ 265 पर लिखा है :-

तब कबीर अस कहेवे लीन्हा, ज्ञानभेद सकल कह दीन्हा।।
धर्मदास मैं कहो बिचारी, जिहिते निबहै सब संसारी।।
प्रथमहि शिष्य होय जो आई, ता कहैं पान देहु तुम भाई।।1।।
जब देखहु तुम दृढ़ता ज्ञाना, ता कहैं कहु शब्द प्रवाना।।2।।
शब्द मांहि जब निश्चय आवै, ता कहैं ज्ञान अगाध सुनावै।।3।।

दोबारा फिर समझाया है -

बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासों कहहू वचन प्रवाना।।1।।
जा कहैं सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता कहें स्मरन देहु लखाई।।2।।
ज्ञान गम्य जा कहैं पुनि होई। सार शब्द जा कहैं कह सोई।।3।।
जा कहैं दिव्य ज्ञान परवेशा, ताकहैं तत्व ज्ञान उपदेशा।।4।।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट है कि कड़िहार गुरु तीन स्थिति में सार नाम तक प्रदान करता है तथा चौथी स्थिति में सार शब्द प्रदान करना होता है। धर्मदास जी के माध्यम से संत रामपाल दास जी महाराज को संकेत है क्योंकि कबीर सागर में तो प्रमाण बाद में देखा था परंतु उपदेश विधि पहले ही पूज्य गुरुदेव तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी ने मुझ दास को प्रदान कर दी थी। जो उपदेश मन्त्र (नाम) दामाखेड़ा वाले व खरसीया तथा लहरतारा काशी वाले देते हैं वह मन्त्र व्यर्थ है। उस में तो सत्यनाम तथा निजनाम (सारनाम) तथा पांच नामों की महिमा बताई है जो संत रामपाल दास जी महाराज प्रदान करते हैं। यह उपरोक्त पूरा शब्द (जो दामाखेड़ा व खरसीया व लहरतारा काशी वाले उपदेश में देते हैं) रटने से कुछ लाभ नहीं जो इसमें संकेत है। उस सत्यनाम व निज नाम (सारशब्द) तथा पांच नामों को संत रामपाल दास जी महाराज से प्राप्त करके साधना करने से मोक्ष होगा।

धर्मदास जी को तो परमश्वेर कबीर साहेब जी ने सार शब्द देने से मना कर दिया था तथा कहा था कि यदि सार शब्द किसी काल के दूत

के हाथ पड़ गया तो बिचली पीढ़ी वाले हंस पार नहीं हो पाऐंगे।

इसलिए कबीर सागर, जीव धर्म बोध, बोध सागर, पृष्ठ 1937 पर लिखा है :-

धर्मदास तोहि लाख दुहाई, सार शब्द कहीं बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परि है, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तरि है।

जैसे कलयुग के प्रारम्भ में प्रथम पीढ़ी वाले भक्त अशिक्षित थे तथा कलयुग के अंत में अंतिम पीढ़ी वाले भक्त कृतघनी हो जाऐंगे तथा अब वर्तमान में सन् 1947 से भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। सन् 1951 में मुझ दास को भेजा है। अब सर्व भक्तजन शिक्षित हैं। वह बिचली पीढी वाला भक्ति समय प्रारम्भ हो चुका है। मुझ दास के पास सत्यनाम तथा सार शब्द तथा पांच नाम परमेश्वर कबीर दत्त हैं। उपदेश प्राप्त करके अपना कल्याण करायें। मानव जीवन तथा बिचली पीढ़ी वाला समय आप को प्राप्त है। अविलम्ब मुझ दास के पास आऐं अन्यथा पश्चाताप् करना पड़ेगा। यथार्थ कबीर पंथ अर्थात् एक पंथ प्रारम्भ हो चुका है। अब यह सत मार्ग सत साधना पूरे संसार में फैलेगी तथा नकली गुरु तथा संत, महंत छुपते फिरेंगे।

पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" के पृष्ठ 46 पर लिखा है कि ग्यारहवीं पीढ़ी को गद्दी नहीं मिली। जिस महंत जी का नाम "धीरज नाम साहब" कवर्धा में रहता था। उसके बाद बारहवां महंत उग्र नाम साहेब ने दामाखेड़ा में गद्दी की स्थापना की तथा स्वयं ही महंत बन बैठा। इससे पहले दामाखेड़ा में गद्दी नहीं थी।

इससे स्पष्ट है कि पूरे विश्व में मुझ दास के अतिरिक्त वास्तविक भक्ति मार्ग नहीं है। सर्व प्रभु प्रेमी श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि प्रभु का भेजा हुआ दास जान कर अपना कल्याण करवाऐं।

यह संसार समझदा नाहीं, कहन्दा श्याम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

नकली नामों से मुक्ति नहीं

एक सुशिक्षित सभ्य व्यक्ति मेरे पास आया। वह उच्च अधिकारी भी था तथा किसी अमुक पंथ व संत से नाम भी ले रखा था व प्रचार भी करता था वह मेरे (संत रामपाल दास) से धार्मिक चर्चा करने लगा। उसने बताया कि ''मैंने

अमुक संत से नाम ले रखा है, बहुत साधना करता हूँ। उसने कहा मुझे पाँच नामों का मन्त्र (उपदेश) प्राप्त है जो काल से मुक्त कर देगा।'' मैंने (रामपाल दास ने) पूछा कौन-2 से नाम हैं। वह भक्त बोला यह नाम किसी को नहीं बताने होते। उस समय मेरे पास बहुत से हमारे कबीर साहिब के यथार्थ ज्ञान प्राप्त भक्त जन भी बैठे थे जो पहले नाना पंथों से नाम उपदेशी थे। परंतु सच्चाई का पता लगने पर उस पंथ को त्याग कर इस दास (रामपाल दास) से नाम लेकर अपने भाग्य की सराहना कर रहे थे कि ठीक समय पर काल के जाल से निकल आए। पूरे परमात्मा (पूर्ण ब्रह्म) को पाने का सही मार्ग मिल गया। नहीं तो अपनी गलत साधना वश काल के मुख में चले जाते।

उन्हीं भक्तों में से एक ने कहा कि मैं भी पहले उसी पंथ से नाम उपदेशी (नामदानी) था। यही पाँच नाम मैंने भी ले रखे थे परंतु वे पाँचों नाम काल साधना के हैं, सतपुरुष प्राप्ति के नहीं हैं। वे पाँचों नाम मैंने [भक्त जो दूसरे पंथ से आया था अब कबीर साहिब के अनुसार इस दास (रामपाल दास) से नाम ले रखा है कह रहा है उस अमुक संत-पंथ के उपदेशी सभ्य व्यक्ति को] भी ले रखे थे। वे नाम हैं - 1. ज्योति निंरजन 2. ओंकार 3. रंरकार 4. सोहं 5. सत्यनाम।

तब मैंनें उस पुण्यात्मा को समझाया कि आप जरा विचार करो। संतमत सतसंग साहिब कबीर से चला है। साहिब कबीर स्वयं पूर्ण परमात्मा हैं। उन्होंने ही इस काल लोक में आकर अपनी जानकारी आप ही देनी पड़ी। क्योंकि काल ने साहिब कबीर का ज्ञान गुप्त कर रखा है। चारों वेदों, अठारह पुराणों, गीता जी व छः शास्त्रों में केवल ब्रह्म (काल ज्योति निंरजन) की उपासना की जानकारी है। सतपुरुष की उपासना का ज्ञान नहीं है।

एक तुलसी दास जी हाथ रस वाले (जिनको उस तुलसी दास जिसने रामायण का हिन्दी निरूपण किया का अवतार मानते हैं) ने कबीर सागर, कबीर वाणी साखी व बीजक पढ़ा। फिर उसने उसमें से यही पाँच नाम निकाल लिए। वास्तव में इन पाँच नामों में सतनाम की जगह 'शक्ति' शब्द है। परंतु तुलसी दास (हाथरस वाले) ने शक्ति शब्द की जगह सतनाम जोड़ कर पाँच नाम का मन्त्र बनाकर काल साधना ही समाज में प्रवेश कर दी। अपने द्वारा रची घट रामायण प्रथम भाग पेष्ठ 27 पर स्वयं इन्हीं पाँचों नामों को काल के नाम कहा है तथा सत्यनाम तथा आदिनाम (सारनाम) बिना

सत्यलोक प्राप्ति नहीं हो सकती, कहा है। इन्हीं पाँचों नामों को कबीर साहिब ने भी काल साधना के बताए हैं। इन्हीं पाँचों नामों को लेकर बड़े-2 भक्तजन समूह इकत्रित हो गए जो मुक्त नहीं हो सकते और कबीर साहेब ने कहा है कि इनसे न्यारा नाम सत्यनाम है उसका जाप पूरे अधिकारी गुरु से लेकर पूरा जीवन गुरु मर्यादा में रहते हुए सार नाम की प्राप्ति पूरे गुरु से करनी चाहिए।

सतनाम के प्रमाण के लिए कबीर पंथी शब्दावली (पष्ठ नं. 266-267) से सहाभार

अक्षर आदि जगतमें, जाका सब विस्तार।
सतगुरु दया सो पाइये, सतनाम निजसार।।112।।
सतगुरुकी परतीति करि, जो सतनाम समाय।
हंस जाय सतलोक को, यमको अमल मिटाय।।117।।

वह सतनाम-सारनाम उपासक सतलोक चला जाता है। उसका पुनर्जन्म नहीं होता। हम सबने कबीर साहिब के ज्ञान को पुनः पढ़ना चाहिए तथा सोचना चाहिए कि सतलोक प्राप्ति केवल कबीर साहिब के द्वारा दिए गए मन्त्र से होगी।

।।धर्मदास को सतनाम कबीर साहेब ने दिया।।

जो मन्त्र (नाम) साहिब कबीर ने धर्म दास जी को दिया। प्रमाण :––

कबीर पंथी शब्दावली (पष्ठ नं. 284-285) से सहाभार

(चौका आरती)

प्रथमहिं मंदिर चौक पुराये। उत्तम आसन श्वेत बिछाये।
हंसा पग आसन पर दीन्हा। सतकबीर कही कह लीन्हा।।
नाम प्रताप हंस पर छाजे। हंसहि भार रती नहिं लागे।।
कहै कबीर सुनो धर्मदासा। ऊँ–सोहं शब्द प्रगासा।।

(कबीर शब्दावली से लेख समाप्त)

यही प्रमाण ''कबीर सागर'' के अध्याय ''ज्ञान बोध'' के पष्ठ 39-40 (903-904), ''कबीर बानी'' पष्ठ 105-106 (969-970) तथा ''सुमिरन बोध'' 2 (1764) तथा पष्ठ 15-16 (1807-1808) पर है।

नोट :- कपया उपरोक्त प्रमाणों की फोटोकापियां पढ़ें इसी पुस्तक के पष्ठ 88 से 94 तक।

ऊपर के शब्द चौका आरती में साहेब कबीर ने धर्मदास जी को सत्यनाम दिया। वह इस प्रकार है : -

''कहै कबीर सुनो धर्मदासा, ऊँ सोहं शब्द प्रगासा''

यह ''ऊँ-सोहं'' सत्यनाम स्वयं साहेब कबीर ने धर्मदास जी को दिया। *इससे प्रमाणित है कि इस नाम के जाप से जीवात्मा सार शब्द पाने योग्य बनेगी। यदि सार शब्द पाने के योग्य नहीं बना तथा सतगुरु ने सारशब्द नहीं दिया तो आपका जीवन व्यर्थ गया। चूंकि सत्यनाम (ऊँ-सोहं) से आप कई मानव शरीर भी पा सकते हो। स्वर्ग में भी वर्षों तक रह सकते हो, यह इतना उत्तम नाम है। परंतु सार शब्द मिले बिना सतलोक प्राप्ति नहीं अर्थात् पूर्ण मुक्ति नहीं।*

।। सतनाम का गरीबदास जी महाराज की वाणी में प्रमाण।

गरीबदास जी महाराज कहते हैं कि :

ऊँ सोहं पालड़ै रंग होरी हो, चौदह भवन चढावै राम रंग होरी हो।
तीन लोक पासंग धरै रंग होरी हो, तो न तुलै तुलाया राम रंग होरी हो।।

इसका अर्थ है सत्यनाम (ऊँ-सोहं) यदि भक्त आत्मा को मिल गया, वह (स्वाँसों से सुमरण होता है) एक स्वाँस-उस्वाँस भी इस मन्त्र का जाप हो गया तो उसकी कीमत इतनी है कि एक स्वाँस-उस्वाँस ऊँ-सोहं के मन्त्र का एक जाप तराजू के एक पलड़े में = दूसरे पलड़े में चौदह भुवनों को रख दें तथा तीन लोकों को तुला की त्रुटि ठीक करने के लिए अर्थात् पलड़े समान करने के लिए रख दे तो भी एक स्वाँस का (सत्यनाम) जाप की कीमत ज्यादा है अर्थात् बराबर भी नहीं है। पूर्ण संत से उपदेश प्राप्त करके नाम जाप करने से लाभ होगा अर्थात् बिना गुरु बनाए स्वयं सत्यनाम जाप व्यर्थ है। जैसे रजिस्ट्री पर तहसीलदार हस्ताक्षर करेगा तो काम बनेगा, कोई स्वयं ही हस्ताक्षर कर लेगा तो व्यर्थ है। इसी का प्रमाण साहेब कबीर देते हैं -

कबीर, कहता हूँ कही जात हूँ, कहूँ बजा कर ढोल।
स्वाँस जो खाली जात है, तीन लोक का मोल।।
कबीर, स्वाँस उस्वाँस में नाम जपो, व्यर्था स्वाँस मत खोय।
न जाने इस स्वाँस को, आवन होके न होय।।

इसलिए यदि गुरु मर्यादा में रहते हुए सत्यनाम जपते-2 भक्त प्राण त्याग जाता है, सारनाम प्राप्त नहीं हो पाता, उसको भी सांसारिक सुख सुविधाएँ,

स्वर्ग प्राप्ति और लगातार कई मनुष्य जन्म भी मिल सकते हैं और यदि पूर्ण संत न मिले तो फिर चौरासी लाख जूनियों व नरक में चला जाता है। यदि अपना व्यवहार ठीक रखते हुए गुरु जी को साहेब का रूप समझ कर आदर करते हुए सतनाम प्राप्त कर लेता है व प्राणी जीवन भर मन्त्र का जाप करता हुआ तथा गुरु वचन में चलता रहेगा। फिर गुरु जी सारनाम देगें। वह सत्यलोक अवश्य जाएगा। जो कोई गुरु वचन नहीं मानेगा, नाम लेकर भी अपनी चलाएगा, वह गुरु निन्दा करके नरक में जाएगा और गुरु द्रोही हो जाएगा। गुरु द्रोही को कई युगों तक मानव शरीर नहीं मिलता। वह चौरासी लाख जूनियों में भ्रमता रहता है।

कबीर साहिब ने सत्यनाम गरीबदास जी [छुड़ानी (हरियाणा) वाले] को दिया, घीसा संत जी (खेखड़े वाले) को दिया, नानक जी (तलवंडी जो अब पाकिस्तान में है) को दिया।

।। श्री नानक साहेब की वाणी में सतनाम का प्रमाण।।

प्रमाण के लिए पंजाबी गुरु ग्रन्थ साहिब के पंष्ठ नं. 59-60 पर सिरी राग महला 1 (शब्द नं. 11)

बिन गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ।। सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ।। गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ।। मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ।। मनमुखि सोझी न पवै वीछुड़ि चोटा खाइ।। नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ।।

नानक साहेब स्वयं प्रमाणित करते हैं कि शब्दों (नामों) का भिन्न ज्ञान होने से विश्वास हुआ कि सच्चा नाम 'सोहं' है। यही सतनाम कहलाता है। पूर्ण गुरु के शिष्य की भ्रमणा मिट जाती है। वह फिर और कोई करनी (साधना) नहीं करता। मनमुखी (मनमानी साधना करने वाला) साधक या जिसको पूरा संत नहीं मिला वह अधूरे गुरु का शिष्य पूर्ण ज्ञान नहीं होने से जन्म-मरण लख चौरासी के कष्टों को उठाएगा। नानक साहेब कहते हैं कि पूर्ण परमात्मा कुल का मालिक एक अकाल पुरुष है तथा एक घर (स्थान) सतलोक है और दूजी कोई वस्तु नहीं है।

प्राण संगली-हिन्दी - के पंष्ठ नं. 84 पर राग भैरव - महला 1 - पौड़ी नं. 32

साध संगति मिल ज्ञानु प्रगासै। साध संगति मिल कवल बिगासै।। साध संगति मिलिआ मनु माना। न मैं नाह ऊँ—सोहं जाना।। सगल भवन महि एको

जोति। सतिगुर पाया सहज सरोत।। नानक किलविष काट तहाँ ही। सहजि मिलै अंमिंत सीचाही।।32।।

नानक साहेब कह रहे हैं कि नामों में नाम ''ऊँ-सोहं'' यही सतनाम है। इसी से पाप कटते हैं। (किलविष कटे ताहीं)

सहज समाधी से अमंत (पूर्ण परमात्मा का पूर्ण आनन्द) प्राप्त हुआ अर्थात् केवल ऊँ-सोहं के जाप से पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति संभव है अन्यथा नहीं।

नानक साहेब उसी ''ऊँ-सोहं'' के नाम के जाप को अजपा जाप कह रहे हैं। इसी का प्रमाण कबीर साहेब तथा गरीबदास जी महाराज व धर्मदास जी ने दिया है। क्योंकि यह सर्व पुण्य आत्मा साहेब कबीर के शिष्य थे।

पंजाबी गुरु ग्रन्थ साहिब के पंष्ठ नं. 1092-1093 पर

राग मारू महला 1 - पौड़ी नं. 1

गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि।।
नानक सोहं हंसा जपु जापहु त्रिभवण तिसै समाहि।।

जो इन सर्व संतों की वाणी (ग्रन्थों) में प्रमाण है तथा कबीर पंथी शब्दावली में सत्यनाम 'ऊँ-सोहं' के जाप का प्रमाण है। वह भी पूरे संत जिसको नाम देने का अधिकार हो, से ही लेना चाहिए।

प्रमाण :– कबीर पंथी शब्दावली (पंष्ठ नं. 220) से सहाभार
बहुत गुरु संसार रहित, घर कोइ न बतावै।
आपन स्वारथ लागि, सीस पर भार चढावै।।
सार शब्द चीन्हे नहीं, बीचहिं परे भुलाय।
सत्त सुकंत चीन्हे बिना, सब जग काल चबाय।।18।।
अजर अमर विनसे नहीं, सुखसागरमें बास।
केवल नाम कबीर है, गावे धनि धर्मदास।।20।।

धर्मदास जी कहते हैं कि संसार में गुरुओं की कमी नहीं। मान बड़ाई, स्वार्थ के लिए गुरु बन कर अपने सिर पर भार धर रहे हैं। सार शब्द जब तक प्राप्त नहीं होता वह गुरु नरक में जाएगा। जिसे गुरुदेव जी ने नाम-दान देने की अनुमति नहीं दे रखी तथा अपने आप गुरु बन कर नाम देता है वह काल का दूत है। काल के मुख में ले जाएगा। परमात्मा का मुख्य नाम एक ही है उसका भेद किसी बिरले को है। बाकी सब डार (देवी-देवताओं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, माता, ब्रह्म) पर ही लटक रहे हैं।

समै – कबीर, बेद हमारा भेद है, हम नहीं बेदों माहिं।
जौन बेद में हम रहैं, वो बेद जानते नाहीं।

विशेष प्रमाण के लिए कबीर पंथी शब्दावली पष्ठ नं. 51

ऊँ–सोहं, सोहं सोई। ऊँ – सोहं भजो नर लोई।।

धर्मदास को सत्य शब्द (सत्यनाम) सुनाया सतगुरु सत्य कबीर। कबीर साहेब ने धर्मदास को सत्य शब्द (सत्यनाम) दिया वह 'ऊँ-सोहं' है तथा इसका भजन करना। फिर बाद में सार शब्द दिया और कहा कि ''धर्मदास तोहे लाख दोहाई। सार शब्द कहीं बाहर न जाई।।'' यह इतना कीमती नाम है कि किसी काल के उपासक के हाथ न लग जाए। इसलिए गरीबदास जी ने कहा है -

गरीब, सोहं शब्द हम जग में लाए। सार शब्द हम गुप्त छुपाए।।

कबीर साहेब कहते हैं - इसी शब्द रमैणी में -

शब्द–शब्द बहु अंतरा, सार शब्द मथि लीजै।
कहैं कबीर जहाँ सार शब्द नहीं, धिक जीवन सो जीजै।।

।।शब्द।।

संतो शब्दई शब्द बखाना।।टेक।।
शब्द फांस फँसा सब कोई शब्द नहीं पहचाना।।
प्रथमहिं ब्रह्म स्वं इच्छा ते पांचौ शब्द उचारा।
सोहं, निरंजन, रंरकार, शक्ति और ओंकारा।।
पांचौ तत्व प्रकति तीनों गुण उपजाया।
लोक द्वीप चारों खान चौरासी लख बनाया।।
शब्दइ काल कलंदर कहिये शब्दइ भर्म भुलाया।।
पांच शब्द की आशा में सर्वस मूल गंवाया।।
शब्दइ ब्रह्म प्रकाश मेंट के बैठे मूंदे द्वारा।
शब्दइ निरगुण शब्दइ सरगुण शब्दइ वेद पुकारा।।
शुद्ध ब्रह्म काया के भीतर बैठ करे स्थाना।
ज्ञानी योगी पंडित औ सिद्ध शब्द में उरझाना।।
पाँचइ शब्द पाँच हैं मुद्रा काया बीच ठिकाना।
जो जिहसंक आराधन करता सो तिहि करत बखाना।।
शब्द निरंजन चांचरी मुद्रा है नैनन के माँही।

ताको जाने गोरख योगी महा तेज तप माँही।।
शब्द ओंकार भूचरी मुद्रा त्रिकुटी है स्थाना।
व्यास देव ताहि पहिचाना चांद सूर्य तिहि जाना।।
सोहं शब्द अगोचरी मुद्रा भंवर गुफा स्थाना।
शुकदेव मुनी ताहि पहिचाना सुन अनहद को काना।।
शब्द रंरकार खेचरी मुद्रा दसवें द्वार ठिकाना।
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि लो रंरकार पहिचाना।।
शक्ति शब्द ध्यान उनमुनी मुद्रा बसे आकाश सनेही।
झिलमिल झिलमिल जोत दिखावे जाने जनक विदेही।।
पाँच शब्द पाँच हैं मुद्रा सो निश्चय कर जाना।
आगे पुरुष पुरान निःअक्षर तिनकी खबर न जाना।।
नौ नाथ चौरासी सिद्धि लो पाँच शब्द में अटके।
मुद्रा साध रहे घट भीतर फिर ओंधे मुख लटके।।
पाँच शब्द पाँच है मुद्रा लोक द्वीप यमजाला।
कहैं कबीर अक्षर के आगे निःअक्षर उजियाला।।

जैसा कि इस शब्द ''संतो शब्दई शब्द बखाना'' में लिखा है कि सभी संत जन शब्द की महिमा गाते हैं। महाराज कबीर साहिब ने बताया है कि शब्द सतपुरुष का भी है जो कि सतपुरुष का प्रतीक है व निरंजन (काल) का प्रतीक भी शब्द ही है। जैसे शब्द ज्योति निरंजन यह चांचरी मुद्रा को प्राप्त करवाता है, इसको गोरख योगी ने बहुत अधिक तप करके प्राप्त किया जो कि आम (साधारण) व्यक्ति के बस की बात नहीं है और फिर गोरख नाथ काल तक ही साधना करके सिद्ध बन गए। मुक्त नहीं हो पाए। जब कबीर साहिब ने सार नाम दिया तब काल से छुटकारा गोरख नाथ जी का हुआ। इसीलिए ज्योति निरंजन नाम का जाप करने वाले काल जाल से नहीं बच सकते अर्थात् सत्यलोक नहीं जा सकते। शब्द ओंकार (ओ३म) का जाप करने से भूंचरी मुद्रा की स्थिति में साधक आ जाता है। जो कि वेद व्यास ने साधना की और काल जाल में ही रहा। सोहं नाम के जाप से अगोचरी मुद्रा की स्थिति हो जाती है और काल के लोक में बनी भंवर गुफा में पहुंच जाते हैं। जिसकी साधना सुखदेव ऋषि ने की और केवल स्वर्ग तक पहुँचा। शब्द रंरकार खैचरी मुद्रा दसमें द्वार (सुष्मणा) तक पहुंच जाते हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों

ने ररंकार को ही सत्य मान कर काल के जाल में उलझे रहे। शक्ति (श्रीयम्) शब्द ये उनमनी मुद्रा को प्राप्त करवा देता है जिसको राजा जनक ने प्राप्त किया परंतु मुक्ति नहीं हुई। कई संतों ने पांच नामों में शक्ति की जगह सत्यनाम जोड़ दिया है जो कि सत्यनाम भी कोई जाप नहीं है। ये तो सच्चे नाम की तरफ ईशारा है जैसे सत्यलोक को सच्च खण्ड भी कहते हैं ऐसे ही सत्यनाम व सच्चा नाम है। सत्यनाम जाप करने का नहीं है। अकाल मूरत, शब्द स्वरूपी राम, सतपुरुष ये नाम मुक्ति प्राप्त करने के नहीं हैं क्योंकि ये तो पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के पर्यायवाची शब्द हैं जैसे अकाल मूरत वह परमात्मा जिसका काल न हो (अविनाशी)। सतपुरुष वह सच्चा परमात्मा जिसका नाश न हो (अविनाशी)। शब्द स्वरूपी राम वह परमात्मा जिसका असली रूप शब्द है और शब्द खण्ड नहीं होता व नाश में नहीं आता (अविनाशी)। उस परमात्मा को जो अविनाशी है जिसको शब्द स्वरूपी राम, अकाल मूरत व सतपुरुष आदि नामों से जाना जाता है, को तो पाना है। यह तो इस प्रकार है जैसे जल के तीन पर्यायवाची नाम जैसे - जल-पानी-नीर। ऐसे कहते रहने से जल प्राप्त नहीं हो सकता उसके लिए हैंड पम्प लगाना पड़ता है तब पानी प्राप्त होता है।

।। सार शब्द बिना सतनाम भी व्यर्थ।।

उसके लिए सत्यनाम सच्चा नाम देने वाला गुरु मिले और स्वांस द्वारा अजपा-जाप हो। स्वांस उस्वांस रूपी बोकी लगे और फिर उसमें सार नाम रूपी नलका लगाया जाए तो पानी प्राप्त हो अर्थात् वह अकाल मूर्ति (सतपुरुष) प्राप्त होवै। कई भक्तों ने बताया कि गरीबदास जी महाराज के अनुयाई संत भी केवल ओ३म-सोहं या केवल सोहं या ओ३म भागवदे वासुदेवाय नमः आदि-आदि नाम देते हैं जो कि मुक्ति के नहीं हैं। क्योंकि गरीबदास जी महाराज जी ने कहा है कि :-- सोहं अक्षर खण्ड है भाई, तातें निःक्षर रहो लौ लाई। सोहं में थे ध्रु प्रहलादा, ओ३म सोहं वाद विवादा।।

अर्थात् सोहं मन्त्र का जाप करने वाले प्रहलाद भी मुक्त नहीं हुए। जैसा कि शब्द 'कोई है रे परले पार का, भेद कहै झनकार का' में लिखा है कि वारिही (उरली) काल लोक में ही रहे। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज अपनी वाणी में लिखते हैं कि :

गरीब, सोहं ऊपर और है, सत सुकंत एक नाम।

सब हंसों का बंस है, नहीं बसती नहीं ठाम।।
गरीब, सतगुरु सोहं नाम दे, गुझ बीरझ विस्तार।
बिन सोहं सीझे नहीं, मूल मन्त्र निजसार।।
गरीब, नामा छीपा ओ३म तारी, पीछे सोहं भेद विचारी।
सार शब्द पाया जद् लोई, आवागवन बहुर न होई।।
गरीब, सोहं शब्द हम जग में लाए, सार शब्द हम गुप्त छिपाए।।

महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि नामदेव संत ओ३म जाप करते थे इसके बाद कबीर साहिब की कृपा से सोहं का ज्ञान हुआ फिर भी मुक्ति नहीं होनी थी। जब सार नाम कबीर साहिब ने दिया तब उसकी मुक्ति हुई। फिर नामदेव जी ने खुशी में यह शब्द गाया --

।। नामदेव जी की वाणी में सतनाम का प्रमाण।।

एजी–एजी साधो, सार शब्द मोहे पाया।
कलह कल्पना मन की मेटी, भय और कर्म नशाया।।टेक।।
रूप न रेख कछु वाके, सोहं ध्यान लगाया।
अजर अमर अविनाशी देखे, सिंधु सरोवर न्हाया।।1।।
शब्द ही शब्द भया उजियारा, सतगुरु भेद बताया।
अपने को आपे में पाया, न कहीं गया न आया।।2।।
ज्यों कामनी कंठ का हीरा, आभूषण विसराया।
संग की सहेली भेद बताया, जीव का भरम नशाया।।3।।
जैसे मृग नाभी कस्तूरी, बन–बन डोलत धाया।
नासा स्वांस भई जब आगे, पलट निरंतर आया।।4।।
कहा कहूं वा सुख की महिमा, गूंगे को गुड़ खाया।
'नामदेव' कहै गुरु कृपा से, ज्यों का त्यों दर्शाया।।5।।
कबीर, सोहं सोहं जप मुवे वृथा जन्म गवांया।
सार शब्द मुक्ति का दाता, जाका भेद नहीं पाया।।

कई भक्तों ने बताया कि हमारे गुरुदेव जी केवल राधा स्वामी नाम देते हैं जबकि यह नाम कबीर साहिब ने कहीं भी अपने शास्त्र में वर्णन नहीं कर रखा। न ही किसी अन्य शास्त्र (वेद-गीता जी आदि) में प्रमाण है। इसलिए शास्त्र से विपरीत साधना होने से नरक प्राप्ति है। वाणी है :--

कबीर, दादू धारा अगम की, सतगुरु दई बताय।

उल्टताही सुमरण करै, स्वामी संग मिल जाय।।

टिप्पणी :-- कहते हैं कि कबीर साहिब ने दादू साहिब को कहा कि धारा शब्द का उल्टा *राधा बनाओ और स्वामी के साथ मिला लो यह राधा स्वामी मन्त्र हो गया। प्रथम तो यह वाणी दादू साहिब की है न कि कबीर साहिब की। और इस साखी का अर्थ बनता है कि दादू साहिब कहते हैं कि मेरे सतगुरु (कबीर साहिब) ने मुझे तीन लोक से आगे (अगम) की धारा (विधि) बताई कि तीन लोक की साधना को छोड़ कर (उल्ट कर) जो सत्यनाम व सारनाम दिया है वह आपको सतपुरुष से मिला देगा। इसीलिए भक्तजनों मनुष्य जन्म का मिलना अति दुर्लभ है। इसको अनजान साधनाओं में नहीं खोना चाहिए। पूरे गुरु की तलाश करें जो कि आज के दिन मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज की कृपा से यह दोनों मन्त्र उपलब्ध हैं जिनकी विधि पूर्वक गुरु मर्यादा में रह कर साधना (जाप) करने से बड़े सहजमय सतपुरुष प्राप्ति हो जाती है।*

।। नकली गुरु को त्याग देना पाप नहीं।।

यह सारी सच्चाई समझ कर वह पुण्य आत्मा काफी प्रभावित हुआ तथा कहा कि आपके द्वारा बताया गया ज्ञान सही है और हमारी साधना ठीक नहीं है। वह लगातार तीन बार सतसंग सुनने आया तथा कहा कि दिल तो कहता है कि मैं भी नाम ले लूं लेकिन मेरे सामने एक दीवार खड़ी है।

1 एक तो कहते हैं गुरु नहीं बदलना चाहिए, पाप होता है।

2 दूसरे मैंने लगभग 400-500 (चार सौ-पांच सौ) भक्तों को इसी पंथ के संत से उपदेश दिलवा रखा हैं वे मुझे अपना सरदार तथा पूर्ण ज्ञान युक्त समझते हैं। अब मुझे शर्म लगती है कि वे क्या कहेंगें? अर्थात् मुझे धिक्कारेंगे।

मैंने (संत रामपाल दास ने) उस भक्त आत्मा को बताया :-- कबीर साहिब व सर्व संत यही कहते हैं कि झूठे गुरु को तुरंत त्याग दे।

प्रमाण के लिए कबीर पंथी शब्दावली पृष्ठ नं. 263 से सहाभार --

झूठे गुरु के पक्ष को, तजत न कीजै बार। राह न पावै शब्द का, भटकै द्वारहिं द्वार।।

जैसे एक वैद्य (डॉक्टर) से इलाज नहीं हो तो दूसरा वैद्य (डॉक्टर) ढूंढना चाहिए। गलत डॉ. के आश्रित रह कर अपने प्राण नहीं गंवाने चाहिए।

दूसरा आपने उनको स्पष्ट बताना चाहिए कि अपनी साधना ठीक नहीं है। आप भी यहां से दोबारा नाम ले लो तथा उन 400-500 प्राणियों का भी

उद्धार करवाओ। इस पर वह ज्ञानी पुरुष जो प्रवक्ता भी बना हुआ था बोला कि मैं गुरु नहीं बदल सकता। मेरा मान घट जाएगा तथा वे लोग मुझे बुरा-भला कहेंगे। बेशक नरक में जाऊँ, मैं मार्ग नहीं बदल सकता। इस प्रकार जीव कहीं मान वश तो कहीं अज्ञान वश काल के जाल में फंसा ही रहता है। इस से आप भक्त जन गीता जी के ज्ञान को समझें तथा कबीर साहिब का उपदेश मुझ दास से प्राप्त करके कल्याण करवाऐं।

।। सतनाम का विशेष प्रमाण।।

उस भगवान (पूर्णब्रह्म) को पाने का मन्त्र सत्यनाम (स्वासों द्वारा किया जाने वाला अजपा जाप) व फिर सारनाम व सारशब्द की प्राप्ति पूर्णब्रह्म की सच्ची नाम साधना व उसका परिणाम समझो। देखें - कबीर पंथी शब्दावली पष्ठ नं. 51, 52, 53, 55, 56, 57 इनमें स्पष्ट लिखा है कि कबीर साहेब ने धर्मदास जी को सत्यनाम (ओ३म-सोहं) दिया है। कहा - ''ऊँ-सोहं भजो नर लोई'' फिर कहा है - ''सोहं शब्द अजपा जाप, साहेब कबीर सो आपै आप'' ।

(प्रमाण के लिए सतगुरु की वाणी) (पष्ठ नं. 51)

(कबीर पंथी शब्दावली से सहाभार)

चितगुण चित बिलास दास सो अंतर नाहीं। आदि अंत में मध्य गोसाई अगह गहन में नाहीं। गहनीगहिए सो कैसा, सोहं शब्दसमान आदिब्रह्म जैसेका तैसा।। कहें कबीर हम खेलैं सहज सुभावा, अकह अडोल अबोल सोहं समिता। तामो आन बसा एकरमिता।। वा रमता को लखे जो कोई। ता को आवागमन न होई।।

ऊँ–सो▪हं, सोहं सोई ऊँ–सो▪हं भजो नर लोई।।
ऊँ कीलक सोहं वाला। ऊँ–सोहं बोले रिसाला।।
किलक, कमत, कंमोद, कंकवत, ये चारों गुरु पीर।।
धर्मदास को सत शब्द सुनायो, सतगुरु सत्य कबीर।।
बाजा नाद भया पर तीत। सतगुरु आये भौजल जीत।।
बाजबाज साहब का राज मारा कूटा दगाबाज।।
हाजिरको हजूर गाफिलको दूर, हिंदूका गुरु मुसलमानका पीर।।
'सात द्वीपनौखंड में, सोहं सत्यकबीर''।।

(पष्ठ नं. 55)

पल जब पीव से लागा। धोखा तब दिलों का भागा।।

चेतावनी चित विलास। जबलग रहे पिंजर श्वास।।
सोहंशब्द अजपाजाप साहब कबीरसो आपहिं आप।।
जागंत रूपी रहत है, सतमत गहिर गंभीर।
अजरनाम बिनसे नहीं, सो▪हं सत्य कबीर।।

आरती चौंका

प्रथमहिं मंदिर चौक पुराये। उत्तम आसन श्वेत बिछाये।। धन्य संत जिन आरति साजा। दुख दारिद्र वाके घरसे भागा।। कहें कबीर सुनो धर्मदासा। ओहं–सोहं शब्द प्रगासा।।

आरती चौकें (प्रथम मंदिर चौं पुराये ---) में लिखा है ''कहे कबीर सुनों धर्मदासा। ऊँ सोहं शब्द प्रगासा।।'' यह सतनाम (ऊँ-सोहं) है।

(शब्द : ''अवधू अविगत से चल आए'')

अवधु अविगत से चल आया, कोई मेरा भेद मर्म नहीं पाया।।टेक।।
ना मेरा जन्म न गर्भ बसेरा, बालक है दिखलाया।
काशी नगर जल कमल पर डेरा, तहाँ जुलाहे ने पाया।।
माता–पिता मेरे कछु नहीं, ना मेरे घर दासी।
जुलहा को सुत आन कहाया, जगत करे मेरी है हांसी।।
पांच तत्व का धड़ नहीं मेरा, जानूं ज्ञान अपारा।
सत्य स्वरूपी नाम साहिब का, सो है नाम हमारा।।
अधर दीप (सतलोक) गगन गुफा में, तहां निज वस्तु सारा।
ज्योति स्वरूपी अलख निरंजन (ब्रह्म) भी, धरता ध्यान हमारा।।
हाड चाम लोहू नहीं मोरे, जाने सत्यनाम उपासी।
तारन तरन अभै पद दाता, मैं हूं कबीर अविनासी।।

(शब्दः ''होत अनंद अनंद भजन में'')

होत अनंद अनंद भजनमें, बरषत शब्द अमीकी बादर, भींजत हैं कोई संत।।
अग्रबास जहँ तत्त्वकी नदियां, मानो अठारा गंग।
कर अस्नान मगन है बैठे, चढत शब्दके रंग।।
पियत सुधारस लेत नामरस, चुवत अग्रके बुंद।
रोम रोम सब अमंत भीजे, पारस परसत अंग।।
श्वासा सार रचे मोरे साहब, जहां न माया मोहं।
कहें कबीर सुनो भाई साधू, जपो ओ३म–सोहं।।

साहेब कबीर ने कहा है कि शब्द (हम अविगत से चल आए -----) में ''न मेरे हाड चाम न लोहु, जाने सतनाम उपासी। तारन तरन अभय पद दाता, कहैं कबीर अविनाशी'' इसका अर्थ है कि कबीर साहेब कहते हैं कि सतनाम का जाप तारन-तरन (पार करने) वाला है। फिर प्रमाणित किया है कि (स्वांसा सार रचे मोरे साहेब, जहां न माया मोहं। कह कबीर सुनों भई साधो, जपो ऊँ सोहं) स्वांसों के द्वारा सत्यनाम ऊँ-सोहं का जाप करो। इससे काल द्वारा लगाए विकार माया मोह आदि भी समाप्त हो कर सार नाम प्राप्ति के योग्य हो जाओगे। यदि सारशब्द नहीं प्राप्त हुआ तो भी मुक्ति शेष रह जाती है। उपरोक्त सत्यनाम भी पूर्ण गुरु से प्राप्त करके जाप करने से लाभ होता है, अन्यथा कोई लाभ नहीं। जैसे कोई अपने आप नौकरी लगने वाला प्रमाण-पत्र (Appointment letter) तैयार करके आप ही हस्ताक्षर कर लेगा। उसे कोई लाभ नहीं। ठीक इसी प्रकार भक्ति मार्ग पर विधिवत् चलना है, तभी सफलता मिलेगी।

(कबीर पंथी शब्दावली पष्ठ नं. 425, 426, 427)

(शब्द)

तीन लोक जम जाल पसारा। नेम धर्म षटकर्म अचारा।।
आचारे सब दुनी भुलानी। सार शब्द कोउ विरले जानी।।1।।
सत्तपुरुषको जानै कोई। तीन लोक जाते पुनि होई।।
करम भरम तजि शब्द समावे। इस्थिर ज्ञान अमरपद पावे।।2।।
सत्यशब्द को करे विचारा। सो छूटे जमजाल अपारा।।
कहै कबीर जिन तत्त विचारा। सोहं शब्द है अगम अपारा।।3।।
नाम हमारा आदिका, सुनि मत जाहु सरख।
जो चाहे निज मुक्तिको, लीजो शब्दहिं परख।।4।।

उपरोक्त शब्द में कहा है (तीन लोक यम जाल पसारा ---। कोई शब्द सार निःअक्षर सोई में) सत्यनाम का अभ्यास भली प्रकार हो जाने पर पूरा गुरु आपको सार शब्द देवेगा। इस सार शब्द को प्राप्त करने योग्य बहुत कम भक्तजन होते हैं। प्रमाण है कि साहेब कबीर के चौसठ लाख शिष्यों में से केवल धर्मदास साहेब ही सारशब्द के अधिकारी हुए थे अन्य नहीं। जिस समय साहेब कबीर ने धर्मदास जी को सारशब्द प्राप्त कराया उस समय कहा था ''धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सार शब्द कहीं बाहर न जाई''। सार शब्द पूरा

(पूर्ण) गुरु देवेगा।

(शब्द)

नाम अमल में रहे मतवाला। प्रेम अमीका पीवे प्याला।।

फिर (नाम अमल में रहै मतवाला -----) इसमें कहा है कि पूर्ण गुरु (कड़िहार) जो जीव को काल के लोक से निकाल कर सतलोक (सत्यनाम व सारनाम-सारशब्द के आधार) ले जाता है वह कड़िहार (काड़ने/निकालने वाला) कहलाता है। यदि सत्यनाम (ऊँ-सोहं) नहीं देता तथा फिर सारनाम नहीं देता वह काल का स्वरूप गुरु (कड़िहार) है अर्थात् काल साधना करवा कर नरक भिजवा देगा, वह काल का ऐजेंट है। नाम देने का अधिकारी वही है जिसको गुरु जी ने आदेश दे रखा है तथा सत्यनाम व सारनाम साधना बताता है।

(शब्द)

सतगुरु सो सतनाम सुनावे। और गुरु कोइ काम न आवे।।
तीरथ सोई जो मोछै पापा। मित्र सोई जो हरै संतापा।।1।।
जोगी सो जो काया सोधे। बुद्धि सोई जो नाहि विरोधे।।
पण्डित सोई जो आगम जानै। भक्त सोई जो भय नहिं आनै।।2।।
दातै जो औगुन परहरई। ज्ञानी सोइ जीवता मरई।।
मुक्ता सोई सतनाम अराधे। श्रोता सोई जो सुरतिहिं साधै।।3।।
सेवक सोई गहै विश्वासा। निसिदिन राखै संतन आसा।।
सतगुरु का लोपै नहि बाचा। कहै कबीर सो सेवक सांचा।।4।।

''सतगुरु सो सतनाम सुनावै'' इसमें कहा है कि वही सतगुरु है जो सत्यनाम देता है अन्य नाम देने वाला गुरु कोई काम नहीं आवेगा। उल्ट काल के मुख में ले जावेगा। वह शिष्य पार होएगा जो गुरु वचन को मान कर गुरु जी के अनुसार चलेगा।

(कबीर पंथी शब्दावली पष्ठ नं. 353)

दुनिया अजब दिवानी, मोरी कही एक न मानी।।टेक।।

''दुनियां अजब दिवानी ------'' में कहा है कि भक्तजनों ने मेरे द्वारा बताई गई भक्ति की विधि नहीं मानी। गुरु रूपी प्रत्यक्ष परमात्मा को छोड़कर तीर्थ यात्रा, पत्थर पूजा, पित्र पूजा आदि पूजन करते हैं। श्री मदभगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15,20 से 23 में स्पष्ट किया है कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) की उपासना करने वाले मूर्ख हैं

वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दुष्कर्म करने वाले हैं वे मेरी (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म की) पूजा भी नहीं करते। फिर गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में ब्रह्म साधना को अनुत्तम (अश्रेष्ठ) कहा है क्योंकि पूर्ण मोक्ष नहीं होता। इसलिए ऋषि-मुनि जन ब्रह्म साधना करके भी काल जाल में जन्म-मत्यु में ही रह जाते है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि पूर्ण मोक्ष के लिए उस पूर्ण परमात्मा की शरण ग्रहण करो। काल के दबाव में आकर सच्चाई को तो झूठ मानते हैं और झूठ को सच। सच्चाई बतावें तो मारने दौड़ते हैं। कबीर परमेश्वर जी स्वयं परमात्मा आए थे। इसलिए कहा है कि मैं पूर्ण परमात्मा स्वयं सतगुरू भेष में कह रहा हूँ मेरी एक नहीं मानता अन्य भ्रमित करने वालों की बातें मान कर इधर-उधर भटकते रहते हैं। पूर्ण सतगुरू का मार्ग ग्रहण करने से मोक्ष सम्भव है परमात्मा कबीर जी का संकेत है कि जब भी पूर्ण सन्त सतगुरू प्रकट होता है उसके द्वारा बताए मार्ग पर लग कर मोक्ष प्राप्त करना ही बुद्धिमता है।

(कबीर पंथी शब्दावली के पष्ठ नं. 271 से 275 तक)

स्वासा सुमिरण होत है, ताहि न लागै बार।
पल पल बन्दगी साधना, देखो दंष्टि पसार।।173।।
सत्य नामको खोजिले, जाते अग्नि बुझाय।
बिना सतनाम बांचे नहीं, धरमराय धरि खाय।।184।।
आदि नाम निज सार है, बूझि लेहु हो हंस।
जिन जाना निज नामको, अमर भयो स्यों बंस।।205।।
आदि नाम निज मूल है, और मंत्र सब डार।
कहै कबीर निज नाम बिन, बूडि मुआ संसार।।206।।
आदि नामको खोजहू, जो है मुक्ति को मूल।
ये जियरा जप लीजियो, भर्म मता मत भूल।।207।।
कहै कबीर निज नाम बिन, मिथ्या जन्म गवांय।
निर्भय मुक्ति निःअक्षरा, गुरु विन कबहुँ न पाय।।208।।
सबको नाम सुनावहू, जो आवे तव पास।
शब्द हमारो सत्य है, दंढ राखो विश्वास।।220।।
होय विवेकी शब्दका, जाय मिलै परिवार।
नाम गहै सो पहुँचिहैं, मानहु कहा हमार।।221।।

आदि नाम पारस (सारनाम) है, मन है मैला लोह।
परसतही कंचन भया, छूटा बंधन मोह।।222।।
सुरति समावे नामसे, जगसे रहै उदास।
कहै कबीर गुरु चरणमें, दृढ राखै विश्वास।।223।।
ज्ञान दीप प्रकाश करि, भीतर भवन जराय।
बैठे सुमरे पुरुषको, सहज समाधि लगाय।।229।।
अछय बृक्षकी डोर गहि, सो सतनाम समाय।
सत्य शब्द (सारशब्द) प्रमाण है,सत्यलोक महं जाय।।230।।
कोइ न यम सो बाचिया, नाम बिना धरिखाय।
जे जन बिरही नामके, ताको देखि डराय।।232।।
कर्म करै देही धरै, औ फिरि फिरि पछताय।
बिना नाम बांचे नहीं, जिव यमरा लै जाय।।233।।

(स्वांसा सुमरण होत है --------) इन दोहों में कहा है कि जो सत्यनाम (ऊँ-सोहं) स्वांसो द्वारा होता है उसकी खोज करो अर्थात् इस मन्त्र को देने वाला पूर्ण गुरु मिले उससे उपदेश लो तथा स्मरण करो। फिर पूर्ण गुरु आपको सारनाम देवेगा। यदि सारनाम नहीं मिला तो आपका जीवन निष्फल है। हाँ, सत्यनाम के आधार से आपको मनुष्य जन्म मिल जाएगा। परंतु सत्यलोक प्राप्ति नहीं।

इसलिए कहा है कि जो ज्ञान योगयुक्त होगा वही हमारे सारनाम को पाने की लग्न लगाएगा अन्यथा केवल सत्यनाम (ऊँ-सोहं) से भी जीव छुटकारा नहीं है।

इस स्थिति में गीता जी में कहा है कि मूढ (मूर्ख) जिन्हें सच्चाई का ज्ञान नहीं है, वे तो वैसे ही अनजानपने में सतमार्ग स्वीकार नहीं कर सकते। इसलिए उनको बार-2 कहना हानिकारक हो सकता है। कबीर साहेब कहते हैं :-- कबीर : सीख उसी को दीजिए, जाको सीख सुहाय।
सीख दयी थी वानरा, बइयाँ का घर जाय।।

अर्थात् वे उल्टे गले पड़ जाएंगे। मरने मारने को तैयार हो जाएंगे। जैसे साहेब कबीर के पीछे काशी के पाण्डे व काजी मुल्ला पड़ गए थे लेकिन सच्चाई स्वीकार नहीं की।

जो ज्ञानी पुरुष है जो समझते भी हैं कि हम गलत साधना स्वयं कर रहे हैं

तथा अनुयाईयों को भी गलत मार्ग दर्शन कर रहे हैं वे अपनी मान बड़ाई वश नहीं मानते। वे चातुर (चतुर) प्राणी कहे हैं। इसलिए दोनों ही भक्ति अधिकारी नहीं हैं।

यथार्थ साधना : जो सोहं का जाप दो हिस्से करके स्वांस-उस्वांस से करते हैं वे किसी उपास्य इष्ट की प्राप्ति या निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति के लिए करते हैं वह इसका अर्थ लगाता है कि सो - अहम [वह (इष्ट-भगवान जिसके वे उपासक हैं मान कर जपते हैं)] और सोचते हैं कि वह ईश्वर (अहम्) मैं ही हूँ। इसका ही दूसरा अर्थ लगाते हैं कि अहम् ब्रह्मास्मि। वे भक्त महिमा तो गाते हैं विष्णु भगवान की और नाम जपते हैं सोहं। यह साधना उन्हें स्वर्ग प्राप्ति करवा कर फिर चौरासी लाख योनियों में भरमाती है।

ऊँ और सोहं का इकट्ठा जाप 'सत्यनाम' कहलाता है। यह स्वांसों द्वारा जपा जाता है। इसे 'अजपा जाप' भी कहते हैं। इसी का प्रमाण कबीर साहेब की वाणी में है जिसमें धर्मदास को नाम दिया है। कबीर पंथी शब्दावली में पष्ठ नं. 51 पर वाणी में लिखा है ''ओ३म-सोहं भजो नर लोई'', यही सत्यनाम है।

फिर कबीर पंथी शब्दावली के पष्ठ नं. 52-53 पर लिखा है।

श्रोता वक्ता की अधिक महिमा, विचार कुण्ड नहाईए। सारशब्द निबेर लीजे, बहुरि न भवजल आईए।।

सर्वसाधु संत समाज मध्ये, भक्ति मुक्ति दढाईए। सुमिरण कर सतलोक पहुँचे, बहुरि न भवजल आईए।।

सोहं शब्द अजपा जाप, साहेब कबीर सो आपही आप।
सोहं शब्द से कर प्रीति, अनभय अखण्ड घर को जीत।।
तन की खबर कर भाई, जा में नाम रूसनाई।।

फिर ''ज्ञानगुदरी'' कबीर पंथी शब्दावली के पष्ठ नं. 55 पर।

इसमें लिखा है :-- मन को मारने का साधन सत्यनाम (ऊँ-सोहं) है केवल ऊँ मन्त्र नहीं। सत्यनाम स्वांसों से सुमरण होता है। ॐ शब्द का जाप काल लोक पार करने के बाद अपने आप बन्द हो जाता है तथा सोहं का प्रारंभ रहता है। सार शब्द सत्यलोक में ले जाता है। परब्रह्म के लोक से पार होते ही भंवर गुफा है वहां तक सोहं मन्त्र ले जाता है।

निहचे धोति पवन जनेऊ, अजपा जाप जपे सो जाने भेऊ।।

इंगला, पिंगला के घर जाई, सुषमना नीर रहा ठहराई।।
ऊँ–सोहं तत्त्व विचारा, बंकनाल में किया संभारा।।
मनको मार गगन चढिजाई, मानसरोवर पैठ नहाई।।

इसी का प्रमाण महाराज गरीबदास साहेब जी (छुड़ानी, हरियाणा) ने अपनी वाणी में दिया है। सतग्रन्थ साहिब पष्ठ नं. 425 पर ।

राम नाम जप कर थीर होई। ऊँ–सोहं मन्त्र दोई।।
कहा पढो भागवत गीता, मनजीता जिन त्रिभुवन जीता।
मनजीते बिन झूठा ज्ञाना , चार वेद और अठारा पुराना।।

इसका अर्थ है कि राम (ब्रह्म-अल्लाह-रब) का नाम जप कर निश्चल हो जाओ। भ्रमों भटको मत। वह राम का नाम ऊँ-सोहं है इसी से मन जीता जा सकता है। यदि यह सत्यनाम (ऊँ-सोहं) पूर्ण गुरु से प्राप्त नहीं हुआ चाहे आपको इस पुस्तक के पढ़ने से ज्ञान भी हो जाए कि सत्यनाम यह 'ऊँ-सोहं' है तथा नाम जाप भी करने लग जाएँ तो भी कोई लाभ नहीं है। या नकली गुरु बन कर यह नाम देने लग जाए। वह पाखंडी स्वयं नरक में जाएगा तथा अनुयाईयों को भी डुबोएगा। वर्तमान में सत्यनाम व सारनाम दान करने का केवल मुझ दास (संत रामपाल दास) को आदेश मिला है। एक समय में एक ही तत्वदर्शी संत आता है, जो पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब (कविर्देव) का कप्या पात्र होता है। अन्य कोई उपरोक्त नामदान करता है तो उसे नकली जानों।

इसलिए इस सतनाम के जाप से मन जीता जा सकता है। इसके प्राप्त हुए बिना चाहे ब्रह्मा जैसा विद्वान हो वह भी मन के आधीन रहेगा। फिर सारनाम व सारशब्द पूरा गुरु प्रदान करके पार करेगा।

विशेष वर्णन :-- गरीबदास जी कत सतग्रन्थ साहिब के पष्ठ नं. 423 से 427 और 431 से 437 से सहाभार

सौ करोर दे यज्ञ आहूती, तौ जागै नहीं दुनिया सूती।
कर्म काण्ड उरले व्यवहारा, नाम लग्या सो गुरु हमारा।।
शंखौं गुणी मुनी महमंता, कोई न बूझै पदकी संथा।।
शंखौं मौनी मुद्रा धारी, पावत नांही अकल खुमारी।
शंखौं तपी जपी और जोगी, कोईन अमी महारस भोगी।।
गरीब, शालिग पूजि दुनिया मुई, प्रतिमा पानी लाग।

चेतन होय जड पूजहीं, फूटे जिनके भाग।।81।।
शंखौं नेमी नेम करांही, भक्ति भाव बिरलै उर आंही।
उस समर्थ का शरणा लैरे, चौदा भुवन कोटि जय जय रे।।

ऊपर की साखियों चौपाईयों में गरीबदास जी महाराज जो कबीर साहेब के शिष्य कह रहे हैं कि -

ज्ञानहीन प्राणी नहीं समझते कि सच्चे नाम व सच्चे (अविनाशी) भगवान (सत साहेब) के भजन व शरण बिना भावें करोंड़ों यज्ञ करो। संखों विद्वान (गुणी) महंत व ऋषि अपने स्वभाव वश सच्चाई (सत्य साधना) को स्वीकार नहीं करते। अपने मान वश शास्त्र विधि रहित पूजा (साधना) करते हैं तथा नरक के भागी होते हैं। गीता जी के अध्याय 16 के श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है।

शंखों मौनी (मौन धारण करने वाले) तथा पाँचों मुद्रा प्राप्ति (चांचरी-भूचरी, खैंचरी-अगोचरी, ऊनमनी) किए हुए भी काल जाल में ही रहते हैं। शंखों जप (केवल ऊँ नाम का व ऊँ नमो भागवते वासुदेवाय नमः, ऊँ नमो शिवाय, राधा स्वामी नाम व पाँचों नाम-ओंकार, ज्योति निंरजन, रंरकार, सोहं, सतनाम जाप या अन्य नाम जो पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी की अमंतवाणी व अन्य प्रभु प्राप्त संतों की अमंतवाणी से भिन्न हैं) करने वाले तथा तपस्वी व योगी भी पूर्ण मुक्त नहीं हैं। पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं है। नाना प्रकार के भेष (वस्त्र भिन्न गैरुवे वस्त्र पहनना, जटा रखना या पत्थर पूजने वाले, मूंड मुंडवाना, नाना पंथों के अनुयायी बन जाना) भी व आचार-विचार कर्म काण्ड करने वाले, शंखों दानी दान करने वाले व गंगा-केदार नाथ गया आदि अड़सठ तीर्थ या चारों धामों की यात्रा करने वाले भी परमात्मा का तत्वज्ञान न होने से ईश्वरीय आनन्द का लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। पूर्ण मुक्त नहीं हो सकते। श्री गीता जी के अध्याय 11 के श्लोक 48 में स्पष्ट कहा है कि अर्जुन मेरे इस वास्तविक ब्रह्म (काल-विराट) रूप को कोई न तो पहले देख पाया न ही आगे देख सकेगा। चूंकि मेरा यह रूप (अर्थात् ब्रह्म-काल प्राप्ति) न तो यज्ञों से, न ही तप से, न ही दान से, न ही जप से, न ही वेद पढ़ने से, अर्थात् वेदों में वर्णित विधि से न ही क्रियाओं से देखा जा सकता अर्थात् परमात्मा{जो यहाँ तीन लोक व इक्कीस ब्रह्मण्ड का भगवान (काल) है} की प्राप्ति किसी भी साधना से नहीं हो सकती। पवित्र गीता जी में

वर्णित पूजा (उपासना) विधि से सिद्धियाँ प्राप्ति, चार मुक्ति (जो स्वर्ग में रहने की अवधि भिन्न होती है तथा कुछ समय इष्ट देव के पास उसके लोक में रह कर फिर चौरासी लाख जूनियों में भ्रमणा-भटकणा बनी रहेगी)। जिसमें काल (ब्रह्म) भगवान कह रहा है कि मेरी शरण में आ जा। तुझे मुक्त कर दूंगा। वह काल (ब्रह्म) भजन के आधार पर कुछ अधिक समय स्वर्ग में रख कर फिर नरक में भेज देता है। क्योंकि पवित्र गीता जी में कहा है कि जैसे कर्म प्राणी करेगा (जैसे का भाव पुण्य भी तथा पाप भी दोनों भोग्य हैं) वे उसे भोगने पड़ेंगे। फिर कहते हैं कि कल्प के अंत में सर्व (ब्रह्मलोक पर्यान्त) लोकों के प्राणी नष्ट हो जाएंगे। उस समय स्वर्ग व नरक समाप्त हो जाएंगे तथा कहा है कि फिर सृष्टि रचूँगा। वे प्राणी फिर कर्माधार पर जन्मते मरते रहेंगे। फिर पूर्ण मुक्ति कहाँ? श्री गीता जी के अध्याय 9 का श्लोक 7 में प्रमाण है।

इसमें साफ लिखा है कि प्रलय के समय सर्व भूत प्राणी नष्ट हो जाएंगे। फिर अर्जुन कहाँ बचेगा? इसलिए गरीबदास जी महाराज कहते हैं कि उस पूर्ण परमात्मा (समर्थ) पूर्ण ब्रह्म (कबीर साहेब) की शरण में जाओ जिसको प्राप्त कर फिर सदा के लिए जन्म-मरण मिट जाएगा। पूर्ण मुक्त हो जाओगे। इसी का प्रमाण श्री गीता जी देती है। अध्याय 18 श्लोक 46, 62,66 और अध्याय 8 के श्लोक 8, 9, 10 और अध्याय 2 का श्लोक 17 में प्रमाण है।

सोहं मंत्र कल्प किदारा, अमर कछ होय पिंड तुमारा।।
ऊँ आदि अनादि लीला, या मंत्र मैं अजब करीला।
सोहं सुरति लगै सहनांना, टूटै चौदा लोक बंधाना।।
राम नाम जपि करि थिर होई, ऊँ सोहं मंत्र दोई।
दिव्य दृष्टिकूं दर्शन होई, चौदाह भुवन फिरौं क्यौं न कोई।
सतगुरु बिना सुरति नहीं लागै, जरै मरै कुल देही त्यागै।।
सतगुरु बतलावै ठौर ठिकाना, को मारै प्रबीन निशाना।।
सोहं सुरति निरति सैं सेवै, आप तरै औरनकूं खेवै।
परम हंस वीर्य बिस्तारा, ऊँ मंत्र कीन्ह उचारा।।
सोहं सुरति लगावै तारी, काल बलीसैं जाइ न टारी।।
गरीब, कालबली कलि खात है, संतौं कौं प्रणाम।
आदि अंत आदेश है, ताहि जपै निज नाम।।92।।
गिरिवर नदी निवासा, ठार भार बनमाला।

ऊँ सोहं श्वासा, कर्म कुसंगति काला।।11।।
सुख सागर आनंदा, सुमरथ शब्द सनेही।
मेटत है दुःख दुंदा, पूरण ब्रह्म विदेही।।13।।
ऊँ सोहं मूलं, मध्य सलहली सूतं।
बिनशत यौह अस्थूलं, न्यारा पद अनभूतं।।48।।
ऊँ सोहं दालं, अकंडा बीज अंकूरं।
ऊगै कला कर्त्तारं, नाद बिन्द सुर पूरं।।49।।
ऊँ सोहं सीपं, स्वांति बिना क्या होई।
निपजत है दिल दीपं, स्वाती बून्द परोई।।51।।
सुकच मीन होय संगी, मोती सिन्धु पठावै।
झूठी प्रीति इकंगी, सतगुरु शब्द मिलावै।।55।।
सत्य सुकृत संगाती, छाड़ि दिया निज नामा।
देवल धामौं जाती, भूलि गये औह धामा।।79।।
षट् शास्त्रा संगीता, पढे बनारस जाई।
पंडित ज्ञानी रीता, औह अक्षर इहां नांही।।86।।
कोटि ज्ञान बकि मूवा, ब्रह्म रंद्र नहीं जाना।
जैसे सिंभल सूंवा, शीश धुनि पछिताना।।87।।
कर्मकाण्ड व्यवहारा, दीन्हा होय सो पावै।
नहीं प्राण निस्तारा, भवसागर में आवै।।93।।

उस समर्थ (परमात्मा-परमेश्वर-पूर्ण ब्रह्म) को प्राप्ति की विधि सत्यनाम व सारनाम है। सत्यनाम (ऊँ-सोहं) का काम है, कि ऊँ मन्त्र स्वर्ग व महास्वर्ग तक की प्राप्ति करवा देता है, इस मन्त्र की यह करामात है, साथ में सोहं मन्त्र का जाप चौदह लोकों के बन्धन से मुक्त कर देता है। फिर सार शब्द प्राप्ति कर पूर्ण मुक्त हो जाता है। ऊँ मन्त्र से काल का ऋण उतारना है तथा साथ में सोहं मन्त्र के जाप को सारनाम में लौ लगा के जपै तो कालबलि (ब्रह्म) से रूक नहीं सकता। वह हंस पार हो जाएगा। सारनाम बिना केवल ॐ तथा सोहं मंत्र से भी लाभ नहीं है, जैसे ॐ तो सीप की काया जानों, सोहं सीप में जीव जानों, यदि सारनाम रूपी स्वांति नहीं मिली तो मुक्ति रूपी मोती नहीं बनेगा। सारनाम तो छोड़ दिया। छः शास्त्रों, गीता जी में, वेदों में सोहं का जाप नहीं है। इसलिए विद्वान (पंडित) ऋषि, मुनि सर्व पूर्ण मोक्ष से वंचित हैं

पूर्ण मुक्त नहीं हैं।

निम्नलिखित वाणियाँ कबीर सागर के ज्ञान बोध से ली गई हैं।

।। कबीर साहेब का शब्द।।

ऐसा राम कबीर ने जाना। धर्मदास सुनियो दै काना।।
सुन्न के परे पुरुष को धामा। तहँ साहब है आदि अनामा।।
ताहि धाम सब जीवका दाता। मैं सबसों कहता निज बाता।।
रहत अगोचर (अव्यक्त) सब के पारा। आदि अनादि पुरुष है न्यारा।।
आदि ब्रह्म इक पुरुष अकेला। ताके संग नहीं कोई चेला।।
ताहि न जाने यह संसारा। बिना नाम है जमके चारा।।
नाम बिना यह जग अरुझाना। नाम गहे सौ संतसुजाना।।
सच्चा साहेब भजु रे भाई। यहि जगसे तुम कहो चिताई।।
धोखा में जिव जन्म गँवाई। झूठी लगन लगाये भाई।।
ऐसा जग से कहु समझाई। धर्मदास जिव बोधो जाई।।
सज्जन जिव आवै तुम पासा। जिन्हें देवैं सतलोकहि बासा।
भ्रम गये वे भव जलमाहीं। आदि नाम को जानत नाहीं।।
पीतर पाथर पूजन लागे। आदि नाम घट ही से त्यागे।।
तीरथ बर्त करे संसारे। नेम धर्म असनान सकारे।।
भेष बनाय विभूति रमाये। घर घर भिक्षा मांगन आये।।
जग जीवन को दीक्षा देही। सत्तनाम बिन पुरुषहि द्रोही।।
ज्ञान हीन जो गुरु कहावै। आपन भूला जगत भूलावै।।
ऐसा ज्ञान चलाया भाई। सत साहबकी सुध बिसराई।।
यह दुनियां दो रंगी भाई। जिव गह शरण असुर(काल) की जाई।।
तीरथ व्रत तप पुन्य कमाई। यह जम जाल तहाँ ठहराई।।
यहै जगत ऐसा अरुझाई। नाम बिना बूड़ी दुनियाई।।
जो कोई भक्त हमारा होई। जात वरण को त्यागै सोई।।
तीरथ व्रत सब देय बहाई। सतगुरु चरणसे ध्यान लगाई।।
मनहीं बांध स्थिर जो करही। सो हंसा भवसागर तरही।।
भक्त होय सतगुरुका पूरा। रहै पुरुष के नित्त हजूरा।।
यही जो रीति साधकी भाई। सार युक्ति मैं कहूँ गुहराई।।
सतनाम निज मूल है, यह कबीर समझाय।

दोई दीन खोजत फिरें, परम पुरुष नहिं पाय।।
गहै नाम सेवा करै, सतनाम गुण गावै।
सतगुरु पद विश्वास दृढ़, सहज परम पद पावै।।

अध्याय 15 के श्लोक 16

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरः च अक्षरः एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थो॰क्षर उच्यते।।

द्वौ, इमौं, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (पुरुषौ) प्रभु हैं। (क्षरः) नाशवान् प्रभु अर्थात् ब्रह्म(च) और (अक्षरः) अविनाशी प्रभु अर्थात् परब्रह्म (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों के लोक में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियोंके शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

अध्याय 15 के श्लोक 17

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।

उत्तमः, पुरुषः तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः।
यः लोकत्रयम्, आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।

अनुवाद : (उत्तम) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो उपरोक्त क्षर पुरूष अर्थात् ब्रह्म तथा अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म से (अन्यः) अन्य ही है (परमात्मा) परमात्मा (इति) इस प्रकार (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकोंमें (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण–पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) उपरोक्त प्रभुओं से श्रेष्ठ प्रभु अर्थात् परमेश्वर है।

अध्याय 15 के श्लोक 18

यस्मात्क्षरमतीतो॰हमक्षरादपि चोत्तमः।
अतो॰अस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।

यस्मात्, क्षरम् अतीतः, अहम्, अक्षरात् अपि च उत्तम।
अतः अस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।

अनुवाद : (यस्मात्) क्योंकि (अहम्) मैं काल – ब्रह्म(क्षरम्) नाशवान् स्थूल शरीर धारी प्राणियों से (अतीतः) श्रेष्ठ (च) और (अक्षरात्) अविनाशी

जीवात्मासे (अपि) भी (उत्तमः) उत्तम हूँ (च) और (अतः) इसलिये (लोके, वेद) लोक वेद में अर्थात् कहे सुने ज्ञान के आधार से (पुरुषोत्तमः) श्रेष्ठ भगवान अर्थात् कुल मालिक नामसे (प्रथितः) प्रसिद्ध (अस्मि) हूँ। परन्तु वास्तव में कुल मालिक तो अन्य ही है।

वाणी :

ताहि न यह जग जाने भाई। तीन देव में ध्यान लगाई।।
तीन देव की करहीं भक्ति। जिनकी कभी न होवे मुक्ति।।
तीन देव का अजब खयाला। देवी–देव प्रपंची काला।।
इनमें मत भटको अज्ञानी। काल झपट पकड़ेगा प्राणी।।
तीन देव पुरुष गम्य न पाई। जग के जीव सब फिरे भुलाई।।
जो कोई सतनाम गहे भाई। जा कहैं देख डरे जमराई।।
ऐसा सबसे कहीयो भाई। जग जीवों का भरम नशाई।।
कह कबीर हम सत कर भाखा, हम हैं मूल शेष डार, तना रू शाखा।।

साखी :

रूप देख भरमो नहीं, कहैं कबीर विचार।
अलख पुरुष हृदये लखे, सोई उतरि है पार।।

इसमें परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने परम शिष्य धर्मदास जी को कह रहे हैं कि ध्यान पूर्वक सुन वह पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) परमात्मा मैंने (कबीर साहेब ने) पाया(अपनी महिमा आप ही कहनी पड़ी क्योंकि सतपुरुष को कोई साधक नहीं जानता था। स्वयं कबीर साहेब ही भक्त तथा संत व परमात्मा की भूमिका निभा रहे हैं) उस परमात्मा (पूर्णब्रह्म) का सर्व ब्रह्मण्डों से पार स्थान है वहां पर वह आदि परमात्मा (सतपुरुष) रहता है। वही सर्व जीवों का दाता है (इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय15 के श्लोक 17 में दिया है) जो उसी सतधाम में सबसे न्यारा रहता है (इसी का प्रमाण यजुर्वेद के अध्याय 5 के श्लोक 32 में भी है) उस परमात्मा(इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय 18 के श्लोक 46 व 61, 62,66 में, अध्याय 8 के श्लोक 1, 3, 8, 9, 10 तथा 17 से 22 व अध्याय 2 के श्लोक 17 में पूर्ण प्रमाण है) को कोई नहीं जानता तथा उसकी प्राप्ति की विधि भी किसी शास्त्र में वर्णित नहीं है। इसलिए सतनाम व सारनाम के स्मरण के बिना काल साधना(केवल ऊँ मन्त्र जाप) करके काल का ही आहार बन जाते हैं।

सच्चा साहेब(अविनाशी परमात्मा) भजो। उसकी साधना सतनाम व सारनाम से होती है। इसका ज्ञान न होने से ऋषि व संतजन लगन भी खूब लगाते हैं। हजारों वर्ष वेदों में वर्णित साधना भी करते हैं परंतु व्यर्थ रहती है। पूर्ण मुक्त नहीं हो पाते। धर्मदास जी को साहेब कबीर कह रहे हैं कि जो सज्जन व्यक्ति आत्म कल्याण चाहने वाले अपनी गलत साधना त्याग कर आपके पास नाम लेने आएंगे। उनको सतनाम व सारनाम मन्त्र देना जिससे वे काल जाल से निकल कर सतलोक में चले जाएंगे। फिर जन्म-मरण रहित हो कर पूर्ण परमात्मा का आनन्द प्राप्त करेंगे। सही रास्ता (पूजा विधि) न मिलने के कारण नादान आत्मा पत्थर पूजने लग गई, व्रत, तीर्थ, मन्दिर, मस्जिद आदि में ईश्वर को तलाश रही हैं जो व्यर्थ है यह सब स्वार्थी अज्ञानियों व नकली गुरुओं द्वारा चलाई गई है। जो गुरु सतनाम व सारनाम नहीं देता वह सतपुरुष (कबीर साहेब) का दुश्मन है जो गलत साधना कर व करवा के स्वयं को भी तथा अनुयाईयों को भी नरक में ले जा रहा है। जो आप ही भूला है तथा नादान भोली-भाली आत्माओं को भी भुला रहा है।

वेदों व गीता जी में ऊँ नाम की महिमा बताई है कि यह भी मूल नाम नहीं है। सारनाम के बिना अधूरे नाम को अंश नाम कहा है जो पूर्ण मुक्ति का नहीं है। इसी के बारे में कहा है कि शाखा (ब्रह्मा-विष्णु-शिव व ब्रह्म-काल तथा माता की साधना को शाखा कहा है) व पत्र (देवी-देवताओं की पूजा का ईशारा किया है) में जगत उलझा हुआ है। जो इनकी साधना करता है वह नरक में जाता है। इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय 14 के श्लोक 5 में तथा अध्याय 9 के श्लोक 25 में है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 तक है।

फिर पूर्ण परमात्मा को मूल कहा है कि उस परमात्मा तथा उसकी उपासना को कोई नहीं जानता। अज्ञानता वश ब्रह्मा-विष्णु-शिव और श्री राम व श्री कृष्ण जी को ही अविनाशी परमात्मा मानते हैं। ''जीव अभागे मूल नहीं जाने, डार-शाखा को पुरुष बखाने'' संसार के साधक वेद शास्त्रों को पढ़ते भी हैं परंतु समझ नहीं पाते। व्यर्थ में झगड़ा करते हैं। जबकि पवित्र वेद व गीता व पुराण भी यही कहते हैं कि अविनाशी परमात्मा कोई और ही है। प्रमाण के लिए गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 16-17 में पूर्ण वर्णन किया गया है। जो इन तीन देवों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की भक्ति करते हैं उनकी मुक्ति कभी

नहीं हो सकती। हे नादान प्राणियों! इनकी उपासना में मत भटको। पूर्ण परमात्मा की साधना करो। धर्मदास से साहेब कबीर कह रहे हैं कि यह सब जीवों को बताओ, उनका भ्रम मिटाओ तथा सतपुरुष की पूजा व महिमा का ज्ञान कराओ।

जागो रे परमेश्वर के चाहने वालों ! प्रकट हो चुका है जगावणहार (तारणहार)

''भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण''

''एक महापुरूष के विषय में भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रह्लाद भक्त की भविष्यवाणी''

भाई बाले वाली जन्म साखी में लिखा गया विवरण स्पष्ट करता है कि संत रामपाल दास जी महाराज ही वह अवतार है जिन्हें परमेश्वर कबीर जी तथा संत नानक जी के पश्चात् पंजाब की धरती पर अवतरित होना था। सन्त रामपाल दास जी महाराज 8 सितम्बर सन् 1951 को गांव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा प्रान्त (उस समय पंजाब प्रान्त) भारत की पवित्र धरती पर श्री नन्द राम जाट के घर जाट वर्ण में श्रीमति इन्द्रा देवी की कोख से जन्में।

इस विषय में ''जन्म साखी भाई बाले वाली'' हिन्दी वाली में जिसके प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कपाल सिंह एण्ड कम्पनी पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमतसर (पंजाब) तथा पंजाबी वाली के प्रकाशक है :- भाई जवाहर सिंह कपाल सिंह पुस्तकां वाले गली-8 बाग रामानन्द अमतसर (पंजाब)।

इसमें लिखा अमर लेख इस प्रकार है :- एक समय भाई बाला तथा मरदाना को साथ लेकर सतगुरु नानक देव जी भक्त प्रह्लाद जी के लोक में गए। जो पथ्वी से कई लाख कोस दूर अन्तरिक्ष में है। प्रह्लाद ने कहा कि हे नानक जी! आप को परमात्मा ने दिव्य दष्टि दी तथा कलयुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप का कलयुग में बहुत प्रताप होगा। यहां पर (प्रह्लाद के लोक में) पहले कबीर जी आये थे या आज आप आये हो एक और आयेगा जो आप दोनों जैसा ही महापुरूष होगा। इन तीनों के अतिरिक्त यहां मेरे लोक में कोई नहीं आ सकता। भक्त बहुत हो चुके हैं

आगे भी होगें परन्तु यहां मेरे लोक में वही पहुँच सकता है, जो इन जैसी महिमा वाला होगा और कोई नहीं। इसलिए इन तीनों के अतिरिक्त यहां कोई नहीं आ सकता। मरदाने ने पूछा कि हे प्रह्लाद जी! कबीर जी जुलाहा थे, नानक जी खत्री हैं, वह तीसरा किस वर्ण (जाति) से तथा किस धरती पर अवतरित होगा।

प्रह्लाद भक्त ने कहा भाई सुन :- नानक जी के सच्चखण्ड जाने के सैकड़ों वर्ष पश्चात् पंजाब की धरती पर जाट वर्ण में जन्म लेगा तथा उसका प्रचार क्षेत्र शहर बरवाला होगा। (लेख समाप्त)

विवेचन :- संत रामपाल दास जी महाराज वही अवतार हैं जो अन्य प्रमाणों के साथ-२ जन्म साखी में लिखे वर्णन पर खरे उतरते हैं। जन्म साखी में ''सौ वर्ष के पश्चात्'' लिखा है। यहां पर सैकड़ों वर्ष पश्चात् कहा गया था जिसको पंजाबी भाषा में लिखते समय सौ वर्ष ही लिख दिया। क्योंकि मर्दाना ने पूछा था कि वह कौन से युग में नजदीक ही आयेगा? तब भक्त प्रह्लाद ने कहा कि श्री नानक जी के सैकड़ों वर्ष पश्चात् कलयुग में ही वह संत जाट वर्ण में जन्म लेगा। इसी लिए यहां सौ वर्ष के स्थान पर सैकड़ों वर्षों ही न्यायोचित है तथा प्रचार क्षेत्र बरवाला के स्थान पर बटाला लिखा गया है। इसके दो कारण हो सकते हैं कि ''शहर बरवाला'' जिला हिसार हरियाणा (उस समय पंजाब) प्रान्त में सुप्रसिद्ध नहीं था तथा बटाला शहर पंजाब प्रान्त में प्रसिद्ध था। लेखनकर्ता ने इस कारण से ''बरवाला'' के स्थान पर ''बटाला'' लिख दिया दूसरा प्रिन्ट करते समय ''ਵਰਵਾਲੇ'' की जगह ''ਵਟਾਲੇ'' प्रिंट हो गया है। एक और विशेष विचारणीय पहलू है कि पंजाब के बटाला शहर में कोई भी जाट संत नहीं हुआ है। जो इन महापुरूषों (परमेश्वर कबीर देव जी व श्री नानक देव जी) के समान महिमावान तथा इनके समान ज्ञानवान हुआ हो। इस आधार से तथा अन्य प्रमाणों के आधार से तथा इस जन्म साखी के आधार से स्पष्ट है कि वह तीसरे महापुरूष संत रामपाल दास जी महाराज हैं तथा इनका आध्यात्मिक ज्ञान भी इन दोनों महापुरूषों (परमेश्वर कबीर जी तथा श्री नानक देव जी) से मेल खाता है। आप देखेंगे दोनों फोटो कापी जो जन्म साखी भाई बाले वाली जो कि एक पंजाबी भाषा में है तथा दूसरी हिन्दी में है जो कि पंजाबी भाषा से

ही अनुवादित है। इसमें कुछ प्रकरण ठीक नहीं लिखा है। जैसे पंजाबी भाषा में लिखा है कि *''जो इस जीहा कोई होवेगा तां एथे पहुँचेगा होर दा एथे पहुँचण दा कम नही''* ***परन्तु हिन्दी वाली जन्म साखी में यह विवरण नहीं है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इससे सिद्ध है कि लिखते समय कुछ प्रकरण बदल जाता है। फिर भी ढेर सारे प्रमाण जो इस पुस्तक में अन्य महापुरूषों के द्वारा सन्त रामपाल दास जी के विषय में कहे हैं वे भी इसी को प्रमाणित करते हैं।***

विशेष :- यदि कोई यह कहे कि जन्म साखी में लिखी व्याख्या सन्त गरीबदास जी गांव छुड़ानी वाले के लिए हैं। क्योंकि वे भी जाट जाति से थे तथा छुड़ानी गांव भी पहले पंजाब प्रांत के अन्तर्गत आता था। यह भी उचित नहीं लगती क्योंकि संत गरीबदास जी ने अपनी अमंतवाणी ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरनी सूम जगायसी'' भावार्थ है कि संत गरीबदास जी के सतगुरु पूज्य कबीर साहेब जी थे। पुराना रोहतक जिला (सोनीपत, रोहतक तथा झज्जर को मिला कर एक जिला रोहतक था) दिल्ली मण्डल में लगता था। यह किसी राजा के आधीन नहीं था। अग्रेंजो के शासन काल में दिल्ली के आधीन था। सन्त गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि सतगुरु (परमेश्वर कबीर जी) दिल्ली मण्डल में आऐंगे भक्तिहीन प्राणियों को जगाऐंगे सत्यभक्ति कराऐंगे। (ध्यान रहे कबीर सागर में काल के दूतों ने मिलावट करके सत्य को न जानकर अपनी अटकल बाजी से असत्य प्रमाण दिए हैं। उसका नाश करने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने अंश अवतार सन्त गरीब दास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रचार करवाया है। जो सन्त गरीब दास जी की अमंतवाणी रूप में है। इसी बात की पुष्टि ''कबीर सागर के सम्पादक कबीर पंथी श्री युगलानन्द बिहारी जी की उस टिप्पणी से होती है जो उन्होंने अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की भूमिका में की है कहा है कि कबीर पंथियों ने ही कबीर पंथ के ग्रन्थों का नाश कर रखा है। अपने–२ मते अनुसार फेर बदल करके अपने मत को जोड़ा है। मेरे पास अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की कई–२ प्रतियाँ रखी हैं। जिनमें से एक दूसरे से मेल नहीं खा रही हैं।)

सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म श्री नन्द राम जाट के घर

8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना जिला सोनीपत (उस समय जिला रोहतक) में हुआ था। जो वर्तमान हरियाणा तथा पंजाब प्रांत मिलकर, उस समय एक ही 'पंजाब' प्रांत था। परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा था कि जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा मैं गरीबदास वाले बारहवें पंथ में आगे स्वयं आऊँगा। सन्त गरीबदास जी द्वारा मेरी (कबीर परमेश्वर की) महिमा की वाणी प्रकट होगी तथा गरीबदास वाले बारहवें पंथ तक के साधक मुझे आधार बनाकर वाणी को समझने की कोशिश करेंगे परन्तु वाणी को न समझ कर सतनाम तथा सारनाम से वंचित रहने के कारण असंख्य जन्म तक सत्यलोक प्राप्ति नहीं कर सकते। उसी बारहवें पंथ (गरीबदास जी वाले पंथ) में मैं (परमेश्वर कबीर जी) ही स्वयं चलकर आऊँगा। तब सन्त गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई वाणी को मैं (कबीर परमेश्वर) प्रकट होकर समझाऊँगा।

इस से सिद्ध हुआ कि जन्म साखी में जिस जाट सन्त के विषय में कहा है निरविवाद रूप से वह संत रामपाल दास जी महाराज जी ही हैं। फिर भी हम संत गरीबदास जी का विशेष आदर करते हैं। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर कबीर जी का अमर संदेश सुनाया है।

यदि कोई भ्रम उत्पन्न करे की दस गुरु साहिबानों में से भी किसी की ओर संकेत हो सकता है। इसके लिए स्मरण रहे कि दस सिख गुरु साहिबानों में से कोई भी जाट वर्ण से नहीं थे। दूसरे सिख गुरु श्री अंगद देव जी खत्री थे। तीसरे गुरु जी श्री अमर दास जी भी खत्री थे। चौथे गुरु जी श्री रामदास जी खत्री थे तथा पांचवें गुरु जी श्री अर्जुन देव जी से लेकर दसवें तथा अन्तिम श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक श्री गुरु रामदास जी की सन्तान अर्थात् खत्री थे। फिर भी हम सभी सिख गुरु साहिबानों का विशेष आदर करते हैं।

संत रामपाल दास जी महाराज कहते हैं :-

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा,
हिन्दु मुसलिम, सिख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

जाति ना पूछो संत की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

कृपया प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी जन्म साखी पंजाबी गुरुमुखी (पंजाबी भाषा) वाली तथा हिन्दी वाली दोनों में आप जी सहज में समझ सकते हो कि वास्तविक्ता क्या है। जन्म साखियों के प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह अमृतसर (पंजाब)।

कृपया देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 272 की।

(२७२) ਸਾਖੀ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨਾਲ ਹੋਈ

ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਆ ॥੪॥ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਜੀ ਤੈਨੂੰ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡਾ ਭਗਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਔਰ ਆਪਕੇ ਸੰਜੋਗ ਬਹੁਤਿਆਂ ਕਾ ਉਧਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਵਡਾ ਪ੍ਰਤਾਪ ਹੋਵੇਗਾ ਇਸ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਏਥੇ ਆਯਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਾਂ ਆਪਕੇ ਕਰਤਾ ਨੇ ਆਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੂੰ ਪੁਛਿਆ ਹੇ ਭਗਤ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਭੀ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਤੇ ਤੁਸਾਡੇ ਪਿਛੇ ਰਾਮ ਜੀ ਵਡਾ ਚਲਤ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲ੍ਹੀ ਹੈ ਭਗਤ ਜੀ ਏਥੇ ਹੋਰ ਕੋਈ ਵੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਬੀਰ ਅਤੇ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਬੋਲਿਆ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਤਪੇ ਪਾਸੋਂ ਪੁਛ ਲੈ ਹੋਰ ਭੀ ਆਵਸੀ ਕਿ ਨਾ ਆਵਸੀ ਕੋਈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਗਲੀ ਤੇ ਪਿਛਲੀ ਸਭ ਆਪ ਨੂੰ ਸਤਿ ਜੁਗ ਥੀਂ ਆਦਿ ਲੈਕੇ ਮਾਲੂਮ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੇ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਇਸ ਜਿਹਾ ਕੋਈ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚੇਗਾ ਹੋਰਸ ਦਾ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚਣਾ ਕੰਮ ਨਾਹੀਂ ਹੋਰ ਅਗੇ ਵਡੇ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋਏ ਹੈਨ ਅਤੇ ਹੋਵਨਗੇ ਪਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਕੋਈ ਨਾਹੀਂ ਤਾਂ ਫੇਰ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਓਹ ਕਦ ਹੋਸੀ ਕਿਤੇ ਨੇੜੇ ਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ ਜਟ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਸਚਖੰਡ ਜਾਵੇਗਾ ਤਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਪਿਛੇ ਸਉ ਵਰ੍ਹੇ ਹੋਸੀ ਅਤੇ ਏਹਨਾਂ ਤੇਹਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਵਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਤਿੰਨ ਕੇਹੜੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਭਾਈ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ

कृपया देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली (पंजाबी भाषा)के पृष्ठ 273 की।

ਸਾਖੀ ਇਕ ਪਹਾੜ ਦੀ ਚਲੀ (२७३)

ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੂਆ ਹੈ ਅਤੇ ਫੇਰ ਉਹ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਕਬੀਰ ਜੁਲਾਹਾ ਹੋਯਾ ਤੇ ਨਾਨਕ ਖਤਰੀ ਹੋਏ ਅਤੇ ਜੀ ਉਹ ਕਿਸ ਵਰਨ ਹੋਵੇਗਾ ਜੀ ਤੇ ਕਿਸ ਧਰਤੀ ਤੇ ਹੋਸੀ ਕੇਹੜੇ ਸ਼ਹਿਰ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਿਹਾ ਭਾਈ ਪੰਜਾਬ ਧਰਤੀ ਤੇ ਵਰਨ ਜਟ ਤੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵਟਾਲੇ ਵਿਚ ਹੋਸੀ। ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਤੇ ਢਹਿ ਪਿਆ ਗੁਰੂ

कंप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली (हिन्दी) के पंष्ठ 305 की

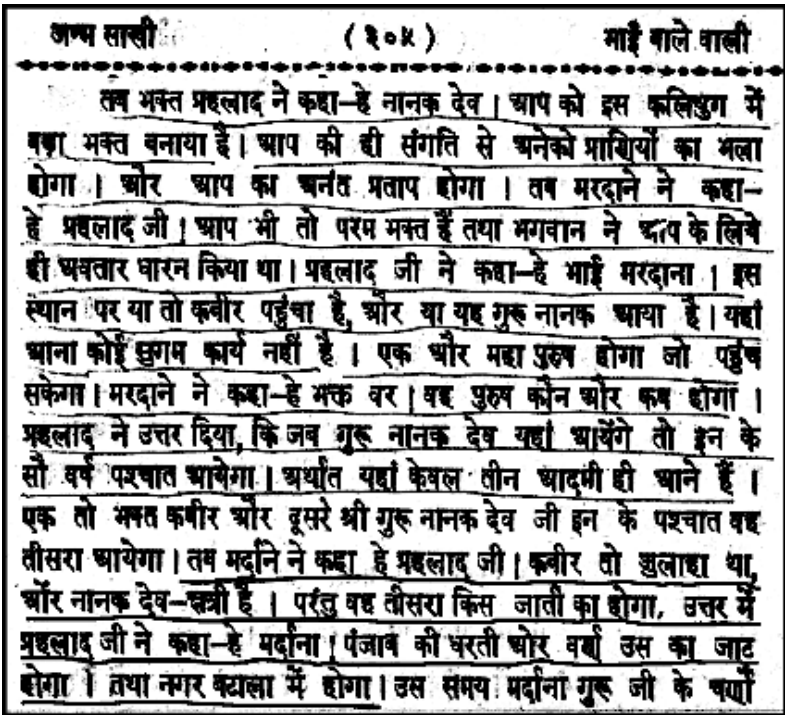

जन्म साखी (३०५) भाई बाले वाली

तब भक्त प्रहलाद ने कहा—हे नानक देव । आप को इस कलियुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप की ही संगति से अनेकों प्राणियों का भला होगा । और आप का अनंत प्रताप होगा । तब मरदाने ने कहा—हे प्रहलाद जी ! आप भी तो परम भक्त हैं तथा भगवान ने आप के लिये ही अवतार धारन किया था। प्रहलाद जी ने कहा—हे भाई मरदाना । इस स्थान पर या तो कबीर पहुंचा है, और या यह गुरु नानक आया है। यहाँ आना कोई सुगम कार्य नहीं है । एक और महा पुरुष होगा जो पहुंच सकेगा। मरदाने ने कहा—हे भक्त वर ! वह पुरुष कौन और कब होगा । प्रहलाद ने उत्तर दिया, कि जब गुरु नानक देव यहां आयेंगे तो इन के सौ वर्ष पश्चात आयेगा। अर्थात यहां केवल तीन आदमी ही आने हैं । एक तो भक्त कबीर और दूसरे श्री गुरु नानक देव जी इन के पश्चात वह तीसरा आयेगा। तब मर्दाने ने कहा हे प्रहलाद जी ! कबीर तो जुलाहा था, और नानक देव—खत्री है । परंतु वह तीसरा किस जाती का होगा, उत्तर में प्रहलाद जी ने कहा—हे मर्दाना ! पंजाब की धरती और वर्ण उस का जाट होगा । तथा नगर बरवाला में होगा। उस समय मर्दाना गुरु जी के चर्णों

प्रश्न : एक संस्कंत के विद्वान शास्त्री ने कहा कि आप के गुरु संत रामपाल दास जी महाराज संस्कंत नहीं पढ़े हैं। आप कहते हो कि उन्होंने श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद करके भक्तों को बताते हैं। यह कभी नहीं हो सकता।

उत्तर : सन्त रामपाल दास जी महाराज के भक्त ने उत्तर दिया शास्त्री जी उसी को परमेश्वर का अवतार कहते हैं। जो भाषा का ज्ञान न होते हुए यथार्थ अनुवाद कर दें। क्योंकि परमेश्वर सर्वज्ञ है। उन्हीं गुणों से युक्त उसका भेजा हुआ अवतार होता है। वह अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज जी हैं। आप तो केवल वेदों और गीता के अनुवाद से अचम्भित हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज ने तो बाईबल तथा कुरान को यथार्थ रूप में बताया है। जिसे ईसाई धर्म के वर्तमान के फादर व पादरी तथा मुसलमान धर्म के मुल्ला व काजी भी नहीं समझ सके। कंप्या पढ़िए पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' में।

''एक महापुरूष के विषय में जयगुरु देव की भविष्यवाणी''

''जयगुरुदेव पंथ के श्री तुलसी दास साहेब की विशेष भविष्यवाणी''

जयगुरू देव उर्फ राधास्वामी पंथ मथुरा के परम सन्त की भविष्यवाणी कप्या पढ़ें पुस्तक ''जयगुरू देव की अमर वाणी भाग- 2'' के पष्ठ 50 तथा 59 की फोटो कापी।

धर्माचार्यों, राजनीतिज्ञों को नेक सलाह

धर्म तब आऐगा जब सब धर्म के लोग लड़ना छोड़ें। राष्ट्र की उन्नति तभी होगी जब राजनैतिक लोग लड़ना, आंदोलन, हड़ताल, तोड़फोड़, रिश्वत अथवा स्वार्थ एवं दल बदल छोड़ दें। मांस, मछली, शराब, ताड़ी भी छोड़ दें। इसके पहले देश की खुशहाली की जो बात करता है वह भविष्य के आने वाले संकट से बदहोश है। वह यह नहीं जानता है कि देश की प्रजा दुराचारी, चरित्रहीन, लड़ने भिड़ने व कामचोर, हड़ताली, आन्दोलन, तोड़फोड़ करने वाली हो गई है। मांस, मछली, अण्डों का भक्षण करने लगी। शराब, ताड़ी व अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन से प्रजा बदहोशी में आकर पागल बनकर कुत्तों की भांति लड़ने लगी। वह देश की जनता अपनी गरीबी को कदापि नहीं मिटा सकती है।

—(शाकाहारी पत्रिकाः 28 जुलाई 1971)

औतारी शक्तियों का जन्म हो गया है

भारतवर्ष में औतारी शक्तियों ने जन्म ले लिया है। अनेक स्थानों पर वे बच्चों के रूप में पल रहें है और समय आने पर प्रगट हो जाऐंगी। माता पिता अपना सुधार कर लें वरना यही बच्चे उनके विनाश का कारण बन जाएगें। इन बच्चों को गोश्त व अण्डा दिया जाता है तो वे मुंह फेर लेते है और उधर देखते तक नहीं। माँ बाप इस बात का ध्यान रखें कि जो बच्चे इन चीजों को खाना नहीं चाहते उन्हें जबरदस्ती न खिलाएँ। वह औतार जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे है 20 वर्ष का हो चुका है यदि उसका पता बता दूँ तो लोग पीछे पड जाऐंगे। अभी उपर से आदेश बताने के लिए नही हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ और सभी महात्माओं ने समय का इन्तजार किया है। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जाएगा।

(शाकाहारी पत्रिकाः 7 सितम्बर 1971)

परिवर्तन का कारण भारतवर्ष बनेगा

भारतवर्ष को विश्व में परिवर्तन का कारण अब बनना होगा। त्रेता में विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और द्वापर में भी विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और इस समय में भी भारतवर्ष को ही कारण बनना होगा।

मुस्लिम राष्ट्रों में भारी कलह होगी। सभी मुसलमान आपस में लड़कर समाप्त हो जाऐंगे। अधिकांश छोटे–छोटे देश टूटकर बड़े राष्ट्रों में मिल जाऐंगे। भारतवर्ष इन सबका अगुआ होगा। चीन के समस्त वैज्ञानिक प्रगति को चूर्ण करके चीन को नष्ट कर दिया जाऐगा। चीन में बचे–खुचे लोगों की सहायता भारत करेगा। इसी बीच तिब्बत भारत में मिल जाएगा। यदि सभी राष्ट्र आपस में मिल कर भारतवर्ष पर आक्रमण करें तो भी इसे कोई जीत नहीं सकता है। भारत में नए सिरे से संगठन होगा। यदि विश्व के सभी राष्ट्र जी जान से यह प्रयास करे कि सुरक्षा परिषद अमेरिका से हटकर भारतवर्ष मे न जाने पावे तो यह कदापि नहीं होगा। सुरक्षा परिषद भविष्य में भारत में चली आएगी।

महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गांव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बडा सर्मथन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झंडा होगा। उसकी एक भाषा होगी।

(शाकाहारी पत्रिकाः 28 अगस्त 1971)

लड़ाई के समय में रक्षा होगी

स्वामी जी ने बताया कि युद्ध के समय में सत्संगियों की रक्षा की जाऐगी। जयगुरूदेव नाम को बराबर याद करते रहो। यह परमात्मा का नाम है और हर क्षण तुम्हारी रक्षा करेगा। **–(शाकाहारी पत्रिका : 14 नवम्बर 1971)**

59

उपरोक्त पुस्तक की फोटो कापियों में सन्त रामपाल जी महाराज के विषय में वर्णन इस प्रकार कहा हैं।

सन्त रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गाँव =

धनाना, जिला = सोनीपत, प्रान्त = हरियाणा (भारत) में जाट किसान परिवार में हुआ। विशेष जानकारी इस पुस्तक के कई स्थानों पर है। कृप्या वहां से पढ़ें ''जयगुरू देव की अमर वाणी'' भाग-2 पुस्तक के पृष्ट 50 पर संत तुलसी साहेब ने 7 सितम्बर 1971 को सत्संग में कहा था कि ''वह अवतार जिसकी लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं 20 वर्ष का हो चुका है, सन्त रामपाल जी महाराज 7 सितम्बर 1971 को पूरे 20 वर्ष के हुए थे, 8 सितम्बर 1971 उनका इक्कीसवां वर्ष प्रारंम्भ हुआ था। पृष्ठ 59 पर लिखा है कि वह महापुरूष छोटे से गाँव में जन्म ले चुका है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो गया है कि वह महापुरूष सन्त रामपाल जी महाराज जी ही हैं।

''सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार''

जो सत्य साधना तथा तत्वज्ञान का प्रचार परमेश्वर के पूर्वोक्त परमेश्वर के अवतार सन्त किया करते थे। जिससे आपसी प्रेम था, एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते थे, असहाय व्यक्ति की मदद करते थे, वही शास्त्रविधि अनुसार साधना तथा वही आध्यात्मिक यथार्थ ज्ञान संत रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने प्रदान किया है। परमेश्वर कबीर जी मार्च 1997 को फाल्गुन मास की शुक्ल प्रथमा को दिन के दस बजे जिन्दा महात्मा के रूप में सत्यलोक से आकर सन्त रामपाल दास जी महाराज को सतनाम तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गए।

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं। अब विश्व में शांति होगी। सर्व धर्म तथा पंथों के व्यक्ति एक होकर आपस में प्रेम से रहा करेंगे। राजनेता भी निर्भिमानी, न्यायकारी तथा परमात्मा से डर कर कार्य करने वाले होंगे। जनता के सेवक बनकर निष्पक्ष कार्य किया करेंगे। धरती पर पुनः सत्ययुग जैसी स्थिति होगी। वर्तमान में धरती पर वह अवतार सन्त रामपाल दास जी हैं। अब घर-२ में परमेश्वर के ज्ञान की चर्चा होगी। जहां गांव व शहरों में तथा पार्कों में बैठकर ताश खेलते है। कोई राजनीतिक बातें करता है, कोई अपने पुत्रों तथा पुत्र वधुओं की अच्छे या निकम्में होने की चर्चा करते हैं वहां

परमेश्वर की महिमा की चर्चा होगी तथा ''ज्ञान गंगा'' पुस्तक में लिखे ज्ञान पर विचार हुआ करेगा। परमात्मा की महिमा करने मात्र से भी जीव पुण्य का भागी बनता है। फिर शास्त्रविधि अनुसार साधना करके जीवन सुखी बनाऐंगे तथा आत्म कल्याण करायेंगे। धरती पर कलयुग में सत्ययुग जैसा समय आयेगा।

अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी।

अमेरिका की विश्व विख्यात भविष्यवक्ता फ्लोरेंस ने अपनी भविष्यवाणीयों में कई बार भारत का जिक्र किया है। 'द फाल ऑफ सेंशेसनल कल्चर' नाम की अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि सन् 2000 आते-आते प्राकृतिक संतुलन भयावह रूप से बिगड़ेगा। लोगों में आक्रोश की प्रबल भावना होगा। दुराचार पराकाष्ठा पर होगा। पश्चिमी देशों के विलासितापूर्ण जीवन जीने वालों में निराशा, बैचेनी और अशांति होगी। अतृप्त अभिलाषाएं और जोर पकड़ेगी। जिससे उनमें आपसी कटुता बढ़ेगी। चारों ओर हिंसा और बर्बरता का वातावरण होगा। ऐसा वातावरण होगा की चारों ओर हाहाकार मच जाएगा। लेकिन भारत से उठने वाली एक नई विचारधारा इस घातक वातावरण को समाप्त कर देगी। वह विचारधारा वैज्ञानिक दृष्टि से सामंजस्य और भाई चारे का महत्व समझाएगी, वह यह भी समझाएगी कि धर्म और विज्ञान में आपस में विरोध नहीं है। आध्यात्मिकता की उच्चता और भौतिकता का खोखलापन सबके सामने उजागर करेगी। मध्यमवर्ग उस विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित होगा। यह वर्ग समाज के सभी वर्गों को अच्छे समाज के निर्माण के लिए उत्प्रेरित करेगा। यह विचारधारा पूरे विश्व में चमत्कारी परिवर्तन लाएगी।

मुझे अपनी छठी अतींद्रिय शक्ति से यह एहसास हो रहा है कि इस विचारधारा को जन्म देने वाला वह महान संत भारत में जन्म ले चुका है। उस संत के ओजस्वी व्यक्तित्व का प्रभाव सब को चमत्कृत करेगा। उसकी विचारधारा अध्यात्म के कम होते जा रहे प्रभाव को फिर से नई स्फूर्ति देगी। चारों ओर आध्यात्मिक वातावरण होगा।

संत की विचारधारा से प्रभावित लोग विश्व के कल्याण के लिए पश्चिम की ओर चलेंगे। धीरे-धीरे एशिया, यूरोप और अमेरिका पर पूरी

तरह छा जाएगें। उस संत की विचारधारा से पूरा विश्व प्रभावित होगा और उनके चरण चिन्हों पर चलेगा। पश्चिमी देश के लोग उन्हें ईसा, मुसलमान उन्हें एक सच्चा रहनुमा और एशिया के लोग उन्हें भगवान का अवतार मानेंगे।

उस महान संत की विचारधारा से बौद्धिक क्रांति होगी। बुद्धिजीवियों की मान्यताएं बदलेंगी। उनमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास की कोंपले फूटेंगी।

फ्लोरेंस के अनुसार वह संत भारत में जन्म ले चुकें हैं। वह इस संत से काफी प्रभावित थी। अपनी एक दूसरी पुस्तक 'गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा' में भी उन्होंने लिखा है। ''जब मैं ध्यान लगाती हूँ तो अक्सर एक संत को देखती हूँ। गौर वर्ण का है। सफेद बाल हैं। उसके मुख पर न दाढ़ी है, न मूछ है। उस संत के ललाट पर गजब का तेज होता है। उनके ललाट पर आकाश से एक नक्षत्र के प्रकाश की किरणें निरंतर बरसती रहती हैं। मैं देखती हूँ कि वह संत अपनी कल्याणकारी विचारधारा तथा अपने सत् चरित्र प्रबल अनुयायियों की शक्ति से सम्पूर्ण विश्व में नए ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं।

वह संत अपनी शक्ति निरंतर बढ़ा रहे हैं। उनमें इतनी शक्ति है कि वह प्राकृतिक परिवर्तन भी कर सकते हैं। वह अपना कार्य वैज्ञानिक ढंग से करेंगे। उनकी कृपा और प्रयत्नों से मानवीय सभ्यता में नई जागृति आएगी। विश्व के समस्त जनसमूह में नई चेतना का संचार होगा। लोकशक्ति का एक नया रूप उभर कर सामने आएगा जो सत्ताधारियों की मनमानियों पर अंकुश लगा देगा।''

मनोचिकित्सक तथा सम्मोहन कला के विश्व प्रसिद्धज्ञाता डॉ. मोरे बर्सटीन की फ्लोरेंस से अच्छी दोस्ती थी। एक बार फ्लोरेंस ने उनसे भी कहा था। ''डॉक्टर वह समय बड़ी तेजी से नजदीक आ रहा है जब सत्ता लोलुप राजनेताओं की अपेक्षा आप जैसे समाजसेवकों की बातें समाज अधिक ध्यान से सुनेगा। 21 वीं सदी के आते आते एक नई विचारधारा पूरे विश्व को प्रभावित करेगी। हर राष्ट्र में सच्चरित्र धार्मिक लोगों का संगठन लोगों के दिमाग में बैठी गलत मान्यताओं को बदल देगा। यह विचारधारा भारत से प्रस्फुटित होंगी। वहीं से पूरे विश्व में फैलेगी। मैं उस

पवित्र स्थान पर एक प्रचंड तपस्वी को देख रही हूँ। जिसका तेज बड़ी तेजी से फैल रहा है। मनुष्य में सोए देवत्व को जगाने तथा धरती का स्वर्ग जैसा बनाने के लिए वह संत दिन रात प्रयत्न कर रहे हैं।

एक पत्रकार ने 1964 में फ्लोरेंस से पूछा था कि क्या वह दुनिया का भविष्य बता सकती है। फ्लोरेंस ने इसके जवाब में कहा था 1970 की शुरूवात व्यापक उथल-पुथल के साथ होगी। 1979-80 के बाद ऐसे-ऐसे भूकंप आऐंगे की न्यूजर्सी का कुछ हिस्सा तथा यूरोप का और एशिया के कई देशों के स्थान भूकंप से विदीर्ण हो जाएंगे। कुछ जलमग्न भी हो जाऐंगे। तंतीय विश्वयुद्ध का आतंक सबके दिमाग में बैठ जाएगा और वे इस युद्ध की तैयारी करेंगे, लेकिन भारतीय राजनेता अपने प्रभाव और बुद्धि से तीसरे विश्वयुद्ध को टालने में सफल हो जाऐंगे। तीसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने तक भारत के शासन की बागडोर आध्यात्मिक प्रवंत्ति के लोगों के हाथ में होगी, इसलिए उनके प्रभाव से विश्वयुद्ध टलेगा। वे शासक एक महान संत के ओजस्वी तथा क्रांतिकारी विचारधारा से प्रभावित होंगे। वे उस संत के प्रति उसी तरह समर्पित होंगे जैसे वाशिंगटन स्वतंत्रता एवं मानवता के प्रति समर्पित थे।''

अमेरिका के शहर न्यूजर्सी की रहने वाली फ्लोरेंस सचमुच एक विलक्षण महिला थी। एक बार नेबेल नाम के व्यक्ति ने टी.वी. कार्यक्रम के दौरान उनसे बोला, ''आप भारत में जन्म ले चुके संत के बारे में तो अक्सर बताती रहती हैं। मैं अपने बारे में कुछ जानना चाहता हूँ बताइए।''

फ्लोरेंस ने उसके दाहिने हाथ को थाम लिया और बोली, ''आप बहुत जल्द किसी दूसरे राज्य से प्रसारण करेंगे।'' नेबेल एक प्रसारण सेवा के कर्मचारी थे। फ्लोरेंस की इस बात पर वह हंसने लगे। कुछ क्षण बाद बोले ''आपने मुझसे यह अच्छा मजाक किया। यदि हमारी कंपनी के अधिकारी इस कार्यक्रम को देख रहे होंगे तो मैं दूसरे राज्य में जाऊ या नहीं, फिलहाल अपनी कंपनी से तुरंत निकाल दिया जाऊंगा।''

कुछ ही मिनटों के बाद टी.वी. के कंट्रोल रूम का फोन घनघना उठा। फोन नेबेल के लिए था। उनकी कंपनी के जनरल मैनेजर उनसे बात करना चाहते थे। नेबेल ने जब फोन उठाया तो उन्होंने कहा हमने न्यूयार्क से प्रसारण करने का काम शुरू करने का निर्णय लिया है वहां

तुम्हें ही भेजा जाएगा। अभी यह बात गुप्त रखना इसकी घोषणा कल की जाएगी। मैं टी.वी. पर फ्लोरेंस के साथ तुम्हारी बातचीत देख रहा था। फ्लोरेंस ने तुम्हारे विषय में जो बताया है वह पूरी तरह सच है। आश्चर्य है कि उन्हें यह बात कैसे मालूम हो गई ?'' नेबेल फ्लोरेंस का चेहरा देखता रह गया।

कुछ पत्रकारों ने उनसे एक बार पूछा था कि वह भविष्य को कैसे देख लेती हैं तथा गायब व्यक्ति या वस्तुओं का पता कैसे लगा लेती हैं, तो फ्लोरेंस ने बताया,''मुझे स्वयं नहीं मालूम कि ऐसा कैसे सम्भव हो जाता है। मैं भविष्य के विषय में एक बहुत महत्वपूर्ण बात बता रहीं हूँ। 20 वीं शताब्दी के अंत में भारतवर्ष से एक प्रकाश निकलेगा। यह प्रकाश पूरी दुनिया को उन दैवी शक्तियों के विषय में जानकारी देगा, जो अब तक हम सभी के लिए रहस्यमय बनी हुई हैं। एक दिव्य महापुरूष द्वारा यह प्रकाश पूरे विश्व में फैलेगा। वह सभी को सत् मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा। समस्त दुनिया में एक नयी सोच की ज्योति फैलेगी। जब मैं ध्यानावस्था में होती हूँ तो अक्सर यह दिव्य महापुरूष मुझे दिखाई देते हैं।''

फ्लोरेंस ने बार-बार इस संत या दिव्य महापुरूष का जिक्र किया है। साथ ही यह भी बताया है कि उत्तरी भारतवर्ष के एक पवित्र स्थान पर वह मौजूद हैं।

सज्जनों उपरोक्त भविष्यवाणी तथा वर्तमान वाणी है जो परम सन्त रामपाल महाराज जी पर खरी उतरती है तथा इसी का समर्थन अन्य भविष्यवाणीयाँ भी करती है।

''फ्रांस देश के विश्व प्रसिद्ध भविष्यवक्ता महर्षि नास्त्रेदमस जी की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई''

फ्रैंच (फ्रांस) देश के नास्त्रेदमस नामक विश्व प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने सन् (इ.स.) 1555 में एक हजार श्लोकों में भविष्य की सांकेतिक सत्य भविष्यवाणियां लिखी हैं। सौ-सौ श्लोकों के दस शतक बना कर सैंच्यूरी नामक ग्रंथ की रचना की। उसमे लिखा है 1998 में महाराष्ट्र में एक ज्योतिषशास्त्री नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी में अंकित सांकेतिक भाषा का स्पष्टीकरण कर उसमें लिखित भविष्य घटनाओं का अर्थ देकर अपना भविष्यग्रंथ प्रकशित करेगा। उस समय वह भारत में उस ज्योतिष द्वारा

कलियुग के विषय में दिये गए महान् सांकेतिक भाषा में अर्थ को सुलझा कर उसमें लिखित महान् भविष्यवाणी का अर्थ स्पष्ट करेगा। निम्न अनुवाद उसी मराठी ग्रंथ से लिया गया है जिनमें से अब तक सर्व सिद्ध हो चुकी हैं।

हिन्दुस्तान में सत्य हो चुकी भविष्यवाणियों में से :- भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री स्व. श्रीमति इन्दिरा गांधी तथा उनकी मत्यु निकटतम रक्षक द्वारा होना लिखा था, जो सत्य हुई। उसके पश्चात् उन्हीं का पुत्र उनका उत्तराधिकारी होगा और वह बहुत कम समय तक राज्य करेगा तथा आकस्मिक मत्यु को प्राप्त होगा, जो सत्य सिद्ध हुई।

अपनी भविष्यवाणी के शतक पांच के अंत में तथा शतक छः के प्रारम्भ में नास्त्रेदमस जी ने अपनी सैंच्यूरी नामक ग्रंथ में लिखा है कि आज अर्थात् इ.स. (सन्) 1555 से ठीक 450 वर्ष पश्चात् सन् 2006 में विश्व में अचानक नरसिंह की तरह प्रकट (प्रसिद्ध/विख्यात) होने वाला तीन ओर सागर से घिरे हुए महासागर के नाम के देश में एक महान हिन्दू संत जन्म लेगा। नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि वह धार्मिक हिन्दू नेता अर्थात् संत (शायरन/Chyren) पांचवें शतक के अंत के वर्ष में अर्थात् सन् 1999 में घर-घर सत्संग करना त्याग कर अर्थात् चौखट को लांघकर बाहर आएगा तथा अपने धर्म बन्धुओं को शास्त्र विधि अनुसार भक्ति मार्ग बताएगा। उस महान संत के बताए भक्ति मार्ग से उसके अनुयाईयों को अद्वितिय आध्यात्मिक व भौतिक लाभ होगा। उस तत्वदर्ष्टा संत के द्वारा बताए शास्त्र प्रमाणित तत्वज्ञान को समझ कर परमात्मा चाहने वाले श्रद्धालु ऐसे अचम्भित होंगे जैसे कोई गहरी निंद्रा से जागा हो। उस तत्वदर्ष्टा हिन्दू संत द्वारा सन् 1999 से चलाई आध्यात्मिक क्रांति ई.सं. 2006 तक चलेगी और सन् 2006 में सर्व जगत में उसकी चर्चा होगी। उस समय उस हिन्दू धार्मिक संत (शायरन) की आयु 50 व 60 वर्ष के बीच होगी। परमेश्वर ने नास्त्रेदमस को संत रामपाल जी महाराज के अधेड़ उम्र वाले शरीर का साक्षात्कार करवा कर चलचित्र की भांति सारी घटनाओं को दिखाया और समझाया। मैं (नास्त्रेदमस) एक बात निर्विवाद सिद्ध करता हूँ वह शायरन (धार्मिक नेता) नया ज्ञान आविष्कार करेगा, वह गुरुवर अर्थात् गुरुओं में श्रेष्ट गुरु होगा और अपने

सनातन धर्म का पालन करवा कर सुख-समृद्धी व शांति का अधिकारी बनाएगा। वह सत्य मार्ग दर्शन करवाने वाला तारणहार एशिया खण्ड में जिस देश के नाम का महासागर (हिन्द महासागर) है उसी देश में जन्म लेगा। वह ना क्रिश्चन, ना मुस्लमान, ना यहूदी होगा व निःसंदेह हिन्दू ही होगा। अन्य भूतपूर्व धार्मिक नेताओं से अधिक बुद्धिमान होगा और अजेय होगा। मैं नास्त्रेदमस उसका अभी छाती ठोक कर गर्व करता हूँ। क्योंकि उस दिव्य स्वतंत्र सूर्य शायरन (संत) का उदय होते ही सारे पहले वाले विद्वान कहलाने वाले महान धार्मिक नेताओं को निष्प्रभ होकर उसके सामने नम्र बनना पड़ेगा। हिन्दू शायरन अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतुंग ऊंचा स्वरूप का विधान (तत्वज्ञान) फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा। (Chyran will be chief of the world, Loyed feared and unchallanged) और मानवी संस्कृती निर्धोक संवारेगा, इसमें संदेह नहीं। अभी किसी को मालूम नहीं, लेकिन अपने समय पर जैसे नरसिंह भगवान अचानक प्रगट हुआ था। ऐसे ही वह विश्व महान नेता (Great Chyran) अपने तर्कशुद्ध, अचूक ज्ञान और भक्ति तेज से विख्यात होगा। मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित हूँ। मैं ना उसके देश (जहां से अवतरित होगा अर्थात् सतलोक देश) को तथा ना उसको जानता हूँ, मैं उसे सामने देख भी रहा हूँ, उसकी महिमा का शब्द बद्ध में कोई मिसाल नहीं कर सकता। बस उसे Great Chyran (महान धार्मिक नेता) कहता हूँ और मैं उसका स्वागत करता हुआ आश्चर्य चकित हो रहा हूँ, उदास भी हो रहा हूँ, क्योंकि उसका दुनिया को ज्ञान न होने से मेरा शायरन (तत्वदर्शी संत) उपेक्षा का पात्र बन रहा है। उसके ज्ञान के दिव्य तेज के प्रभाव से उस द्वीपकल्प (भारतवर्ष) में आक्रामक तूफान, खलबली मचेगी अर्थात् अज्ञानी संतों द्वारा विद्रोह किया जाएगा। उसको शांत करने का उपाय भी उसी को मालूम होगा। मेरी (नास्त्रेदमस की) चितभेदक भविष्यवाणी की और उस वैश्विक सिंह मानव (महान संत) की उपेक्षा ना करें। उसे छोटा ज्ञानदीप न समझें, उस तत्ववेता महामानव (शायरन को) सिहांसनस्थ करके (आसन पर बैठाकर) उसको आराध्य देव मानकर पूजा करें। वह आदि पुरूष (सतपुरूष) का अनुयाई दुनिया का तारणहार होगा। उसके प्रकट होने पर तथा उसके तेजस्वी तत्व ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से

आदर्शवादी श्रेष्ट व्यक्तियों का पुनर्उत्थान तथा स्वर्ण युग के प्रभात की शुरूआत 2006 में होगी। इस कंतार्थ शुरूवात को मैं (नास्त्रेदमस) दंष्टा हो रहा हूँ अर्थात् सारे घटनाक्रम को देख रहा हूँ। नास्त्रेदमस कहता है कि निःसंदेह विश्व में श्रेष्ठ तत्वज्ञाता (ग्रेट शायरन) के विषय में मेरी भविष्यवाणी के शब्दा शब्द को अन्य धार्मिक नेताओं पर जोड़ कर तर्क-वितंक करके देखेगें तो कोई भी खरा नहीं उतरेगा। मैं (नास्त्रेदमस) छाती ठोक कर शब्दा शब्द कह रहा हूँ कि मेरा शायरन (संत) का कर्तत्व और उसका गूढ़-गहरा ज्ञान (तत्वज्ञान) ही सर्व संतों की खाल उतारेगा (यही उसकी पहचान होगी), बस 2006 साल आने दो। इस विधान का एक- एक शब्द खरा-खरा समर्थन शायरन ही देगा।

संत रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को धनाना जिला सोनीपत हरियाणा में एक किसान परिवार में हुआ। पढ़ाई पूरी करके हरियाणा प्रांत में सिंचाई विभाग में जूनियर इंजिनियर की पोस्ट पर 18 वर्ष कार्यरत रहे। सन् 1988 में परम संत रामदेवानंद जी से दिक्षा प्राप्त की तथा तन-मन से सक्रिय होकर स्वामी रामदेवानंद जी द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना की तथा परमात्मा का साक्षात्कार किया।

सन् 1993 में स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने आपको सत्संग करने की आज्ञा दी तथा सन् 1994 में नाम दान करने की आज्ञा प्रदान की। भक्ति मार्ग में लीन होने के कारण जे. ई. की पोस्ट से त्यागपत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार द्वारा 16-5-2000 को पत्र क्रमांक 3492-3500, तिथि 16-5-2000 के तहत स्वीकंत है। सन् 1994 से 1998 तक संत रामपाल जी महाराज ने घर-घर, गांव-गांव, नगर-नगर में जाकर सत्संग किया। बहु संख्या में अनुयाई हो गये, साथ-साथ ज्ञानहीन संतों का विरोध भी बढ़ता गया। सन् 1999 तक परमेश्वर कबीर जी के प्रकट दिवस पर सात दिन विशाल सत्संग का आयोजन करके आश्रम का प्रारम्भ किया तथा महीने की प्रत्येक पूर्णिमा को तीन दिन का सत्संग प्रारम्भ किया। दूर-दूर से श्रद्धालु सत्संग सुनने आने लगे तथा तत्वज्ञान को समझकर बहुसंख्या में अनुयाई बनने लगे। चंद दिनों में संत रामपाल महाराज जी के अनुयाईयों की संख्या लाखों में पहुंच गई। संत रामपाल जी महाराज सन् 2003 से अखबारों व टी. वी. चैनलों के माध्यम से सत्य ज्ञान का

प्रचार कर रहे हैं कि आपका (दूसरे संतों का) ज्ञान शास्त्रविरूद्ध है अर्थात् आप भक्त समाज से शास्त्ररहित पूजा करवा रहे हैं और दोषी बन रहे हैं। यदि मैं गलत कह रहा हूँ तो इसका जवाब दो आज तक किसी भी संत ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की। जिन ज्ञानहीन संतों व ऋषियों के अनुयाई संत रामपाल जी के पास आने लगे तथा अनुयाई बनने लगे फिर उन अज्ञानियों से प्रश्न करने लगे कि आप सर्व ज्ञान अपने सद्ग्रंथों के विपरीत बता रहे हो।

इस तरह के प्रश्नों से निरूत्तर होकर अपने अज्ञान का पर्दा फांस होने के भय से उन अज्ञानी संतों, महंतों व आचार्यो ने सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास के गांवों में संत रामपाल जी महाराज को बदनाम करने के लिए दुष्प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया तथा 12-7-2006 को संत रामपाल जी महाराज को जान से मारने तथा आश्रम को नष्ट करने के लिए आप तथा अपने अनुयाईयों से सतलोक आश्रम पर आक्रमण करवाया तथा अनर्गल आरोप लगाकर बदनाम किया। जिसकी वजह से जुलाई 2006 में सारे हिन्दुस्तान में चर्चा का विषय बन गए जो नास्त्रेदमस जी की भविष्य वाणी के अनुसार सत्य प्रमाण हुआ।

नास्त्रेदमस कहता है वह ज्ञान का विजेता होगा, उसे ज्ञान में कोई पराजित नहीं कर सकेगा और वह दुनिया को भवसागर से तारणहार होगा। उसका दिया हुआ सत्यभक्ति मार्ग सदियों तक छाया रहेगा और उसी संत के प्रभाव से हिन्दुस्तान में स्वर्णयुग आएगा और बाद में सारे विश्व में फैलेगा जिसके परिणामस्वरूप भारत विश्व की महान शक्ति बनेगा।

वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर मानव सदृश साकार है।

संत रामपाल जी महाराज द्वारा किया गया अनुवाद :-

ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 31 मन्त्र 17

मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो ययातिवत्सदने पूर्ववच्छुचे।
अच्छ याह्या वहा दैव्यं जनमा सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम्।।17।।

सन्धिछेद :- मनुष्यवत् अग्ने अङ्गिरस्वत् अङ्गिरः ययातिवत् सदने पूर्ववत् शुचे अच्छ याह्या वहा दैव्यम् जनम् आसादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम् (17)

अनुवाद :- हे (मनुष्यवत्) मनुष्य के समान देहधारी (अग्ने) परमेश्वर जैसे की आप (अड़िग्रस्वत्) मनुष्य के तेजोमय शरीर के समान (अड़िग्रः) देहधारी हो हलका तेजोमय शरीर धारण करके अपने शरीर को अर्थात् अपने रूप को सरल करके प्रत्येक युग में अपने (शुचे) पवित्र (सदने) घर अर्थात् ऊपर के सत्य लोक से आते हो (पूर्ववत्) पहले की तरह (ययातिवत्) मनुष्य समान अर्थात् जैसे मनुष्य प्रयत्न करके कार्यसिद्ध करता है वैसे ही आप मनुष्य के समान कार्य करते हो (प्रियम्) हे प्यारे परमेश्वर हमें (अच्छ) अच्छी प्रकार (याह्या) प्राप्त हुजिए (च) तथा (वहा) प्राप्त किजिए अर्थात् हमें शरण में लिजिए इस काल लोक से (बर्हिषि) बाहर सत्यलोक में (जनम्) अपने जन को अर्थात् अपने भक्त को (दैव्यम्) देव स्वरूप अर्थात् अच्छी आत्माओं में (आसादय) स्थाई रूप से (यक्षि) प्रतिष्ठित किजिए (17)

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा मनुष्य सदृश शरीर युक्त है वह प्रत्येक युग में इस काल ब्रह्म के लोक में आता है तथा अपनी प्यारी आत्माओं को सत्य ज्ञान कराके सत्यलोक में स्थाई स्थान देता है। इस मन्त्र में यही कहा है कि हे परमेश्वर आप मनुष्य सदृश शरीर युक्त हैं आप पहले की तरह मनुष्य जैसा शरीर धारण करके यहाँ आऐं तथा हमें काल के लोक से बाहर निकाल कर सत्यलोक में अच्छी आत्माओं में स्थाई रूप से प्रतिष्ठित् किजिए अर्थात् सदा के लिए जन्म-मरण से मुक्त किजिए। यहि प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मन्त्र 16 में है कि साधक जन शास्त्रानुकूल साधना करके भक्ति के बल से वहाँ चले जाते हैं जहाँ पहले वाली सष्टी के देव स्वरूप अच्छी आत्माऐं रहते हैं। यही प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 31 मन्त्र 18 जिस में लिखा है कि परमात्मा सूर्य के समान प्रकाशमान है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27 ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1 से 3 यजुर्वेद अध्याय 18 मन्त्र 58-59-60-56 में भी है। ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 150 मन्त्र 3-4-5 में स्पष्ट किया है कि वह तेजपुंज परमात्मा अर्थात् प्रकाश समूह सूर्य सदृश साकार है। राजा के समान दर्शनीय अर्थात् साकार है।

विशेष :- स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 1 के हिन्दी अनुवाद में अग्ने तनूः असि का अर्थ बिजुली प्रसिद्ध रूप अग्नि का शरीर

किया है। परमात्मा को तो निराकार कह रहे हैं तथा बिजली का शरीर प्रमाण किया है। अपने सत्यार्थ प्रकाश वाले ज्ञान को ऊपर रखने के लिए कि परमात्मा निराकार है, पवित्र वेदों के ज्ञान को भी घुमा-फिरा दिया। अग्ने या अग्नि का सीधा अर्थ आग तो आम व्यक्ति बता सकता है, परन्तु आध्यात्मिक शब्दों का अर्थ तो महर्षि ही बताया करते हैं।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा भाषा-भाष्य में ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सुक्त के प्रथम ही मन्त्र में पष्ठ नं. 1 पर महर्षि दयानन्द जी स्वयं जोर देकर कह रहे हैं कि वेद में जहाँ पर भी अग्नि शब्द है उससे ईश्वर का ग्रहण होता है अर्थात् जहाँ पर अग्नि शब्द आए उसका अर्थ परमेश्वर समझे तथा स्वयं भी ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सुक्त नं. 1 में 8 मन्त्र हैं जिनमें सात मन्त्रों में ''अग्निः या अग्ने आदि शब्द है सर्व का अर्थ परमेश्वर किया है तथा ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 96 में 8 मन्त्र हैं जिनमें 7 में अग्नि या अग्ने आदि शब्द हैं। सर्व का अर्थ परमेश्वर किया है....तथा यजुर्वेद अ. 1 श्लोक सं. 11, 13, 17,18, यजुर्वेद अध्याय नं. 2 श्लोक नं. 9,14,20...आदि में भी अग्निः या ''अग्ने'' शब्द का अर्थ ईश्वर या जगदीश्वर कहा है तथा सत्यार्थ प्रकाश प्रारम्भ करते समय ''ओ३म्'' शब्द का विवरण करते समय स्वयं कहा है कि अ से ''अकार'' में विराट-अग्नि और विश्वादि ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं। सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास में पष्ठ नं. 15,16,17 पर बिल्कुल प्रारम्भ में यह व्याख्या है अग्नि या अग्ने शब्द का अर्थ ईश्वर किया है लिखा है कि अग्निादि का अर्थ मुख्य रूप से परमेश्वर का ही ग्रहण होता है तथा दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर आचार्य वेद भिक्षु सेवाश्रम, मुखमेलपुर दिल्ली वाले द्वारा पवित्र सामवेद का अनुवाद किया है जो बड़े साईज में जिल्द किया है। भाषा भाष्य करते समय स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 1 मंत्र 1 पष्ठ नं. 1 पर दिए निर्देश (कि जहाँ पर अग्नि या अग्ने शब्द वेद में है उसको परमेश्वर का बोध समझो), के आधार पर पवित्र सामवेद का अनुवाद (भाषा-भाष्य) किया है, जिसमें लगभग सैकड़ों बार अग्नि या अग्ने शब्द का अर्थ परमेश्वर - ईश्वर आदि किया है। सामवेद प्रथम अध्याय मंत्र संख्या नं. 1 से 11, 14, 16 से 19, 21 से 25, 27 से 32 आदि मंत्रों में जहाँ भी अग्ने या अग्नि शब्द है उसका अर्थ ईश्वर किया है। जब यजुर्वेद के अ. नं. 1 के मंत्र नं. 15 को देखा उसमें प्रथम पंक्ति में लिखा है

''अग्नेः तनूर् असि। जिसका सीधा सरलार्थ बनता है कि ''परमेश्वर सशरीर है अर्थात् आकार में है।'' महर्षि दयानन्द जी के द्वारा भाषा-भाष्य अर्थात् अनुवाद देखा तो उसमें 11 (ग्यारह) शब्दों का अर्थ ही नहीं किया है। जिससे यह लगना स्वाभाविक है कि शायद जान-बूझ कर अनदेखा किया है। क्योंकि वे प्रभु का आकार नहीं मानते। यदि यजुर्वेद अध्याय 1 मंत्र 15 तथा अध्याय 5 मंत्र 1 में अग्ने तनूः असि के अनुवाद में अग्ने का अर्थ परमश्वेर कर दिया जाए जो सत्य है तनूः=शरीर, असि=है, अर्थ स्वामी दयानन्द जी ने किया ही है स्पष्ट हो जाता है (अग्ने) हे परमेश्वर आप (तनूः) सशरीर (असि) है। अर्थात् परमेश्वर साकार है। ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 31 मन्त्र 17 ने स्पष्ट किया है कि वह मनुष्यवत् अग्ने अर्थात् मनुष्य जैसा परमेश्वर है अर्थात् परमेश्वर नराकार है।

संत रामपाल जी महाराज द्वारा किया गया अनुवाद :-

यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 1 में लिखा है

अग्नेः तनुः असि। विष्णवे त्वा सोमस्य तनूः असि। विष्णवे त्वा अतिथ्येः अतिथ्यम् असि विष्णवेत्वा श्येनाय त्वा सोम भंते विष्णवे त्वा अग्नये त्वा रायः पोषदे विष्णवे त्वा (1)

अनुवाद (हिन्दी में) :- (अग्नेः) हे परमेश्वर आपका (तनूः) शरीर (असि) है अर्थात् हे परमेश्वर आप सशरीर हैं। (विष्णवे) तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करने के लिए (त्वा) उस (सोमस्य) अमर परमेश्वर का (तनूः) शरीर (असी) है। (त्वा) वह परमेश्वर (विष्णवे) तत्व ज्ञान से परिपूर्ण करने के लिए अर्थात् तत्व ज्ञान से आत्माओं का पोषण करने के लिए (अतिथ्ये) अतिथी रूप में आता है उस अतिथी रूप में आए परमेश्वर का (अतिथ्यम्) अतिथी सत्कार करना योग्य है अर्थात् वही तत्वदर्शी सन्त रूप में प्रकट परमेश्वर पुज्य है। (त्वा) वह परमेश्वर (विष्णवे) तत्व ज्ञान द्वारा आत्माओं को पोषण करने के लिए (श्येनाय) अलल पक्षी की तरह शिघ्र गामी होकर यहाँ आकर अज्ञान निन्द्रा में सोए हुओं को जगाने वाला है। (त्वा) वह परमेश्वर आप (सोमभंते) सतपुरूष की भक्तिरूपी अमंत से परिपूर्ण करने वाला (त्वा) आप (विष्णवे) पालन के लिए विष्णु रूप से प्रसिद्ध है। (अग्नेय) परमेश्वर के लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं है वह परमेश्वर (त्वा) आप (रायःपोषदे) भक्ति रूपी धन से

परिपूर्ण करने वाला (विष्णवे) व पालन करने के लिए पालन कर्त्ता है।

भावार्थः- इस मन्त्र में वेद ज्ञान दाता ने पूर्ण परमात्मा की महिमा व स्थिति बताई है। इसमें दो बार साक्षी दी है कि परमेश्वर सशरीर है। उस परमेश्वर अर्थात् अमर पुरूष का अन्य शरीर भी है जिसको धारण करके इस लोक में अतिथी अर्थात् मेहमान रूप में आता है। अतिथी का अर्थ है जिस के आने की तिथी पूर्व निर्धारित न हो। बिना निरधारण तिथी को आने वाले को अतिथी कहते हैं। वह परमात्मा अतिथी रूप में सन्त रूप धारण करके तत्वज्ञान द्वारा सर्व आत्माओं को यर्थाथ भक्ति साधना बता कर भक्तिरूपी धन से धनी बनाता है। वह अलल पक्षी की तरह शीघ्र गामी है। वही पूजाके योग्य है। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में है कि वह पूर्ण परमात्मा तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

संत रामपाल जी महाराज द्वारा किया गया अनुवाद :-

यजुर्वेद अध्याय न. 1 का श्लोक न. 15

अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्वा गंहणामि बंहद्ग्रावासि वानस्पत्यः स▪इदं देवेभ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व। हविष्कंदेहि हविष्कंदेहि।।15।।

अग्नेः—तनुः—असि—वाचः—विसर्जन—देव—वितये—त्वा—गंहणामि—बंहत्— ग्रावा—असि—वानस्पत्यः—स▪इदं— देवेभ्यः—हविः— शमीष्व—सुशमि—शमीष्व— हविष्कंत—यहि—हविष्कंत—यहि।

अनुवाद :- हे (अग्नेः) परमेश्वर का (तनुः) शरीर (असि) है अर्थात् परमेश्वर आप सशरीर हैं। (वाचः) सत्यज्ञान के मार्ग के वचनों को (विसर्जन) त्याग देने से (देव) परमेश्वर द्वारा मिलने वाले (वितये) लाभ के स्थान पर दुष्कर्मो का (ग्रावा) बादल रूपी (बंहत्) आवरण छाया हुआ (असि) है (त्वा) उस सत्य भक्ति को फिर (गंहणामि) ग्रहण करो अर्थात् शुभ व भक्ति कर्म उसी परमेश्वर के बताए मार्ग शास्त्रानुकुल करो। (देवेभ्यः) परमेश्वर के निमित (शमीष्व) शांति के लिये (हविः) यज्ञ करने योग्य पदार्थों अर्थात् धार्मिक कार्य को (स) उस परमेश्वर की भक्ति (वानस्पत्यः) जैसे वंक्ष बीज से बनता है ऐसे सत्यनाम रूपी सत्य भक्ति बीज से (इदम्) इस प्रकार (सुशमि) अच्छी तरह शांति के साथ करना चाहिये। (यहि) इसलिये जो (हविष्कंत) यज्ञ करने योग्य द्रव्य अर्थात् शुभ धार्मिक करने योग्य कार्य करो जिससे (शमीष्व) शांति प्राप्त हो सके।

(यहि) इसलिए (हविष्कृत) यज्ञ करने योग्य पदार्थ अर्थात् शुभ कर्म करो।

भावार्थ :- जैसे हवन करने के लिए घी मुख्य द्रव्य है यदि घी की जगह मिट्टी का तेल डाले या डीजल डालें तो हवन नहीं होता है ज्यादा हानिकारक होता है। अर्थात् शास्त्र विरूद्ध साधना हानिकारक है। इसलिए कहा है कि परमात्मा आकार में है। उसने अपना संविधान वेद तथा सत्य शास्त्र शब्दावली कबीर साहेब के माध्यम से भक्ति मार्ग सत्य लोक से आकर स्वयं बताया हुआ है। उनके बताये अनुसार कार्य न करने से परमेश्वर का वास्तविक लाभ प्राप्त नहीं हो रहा। आत्मा तथा परमात्मा के मध्य में दुष्कर्मो के बादल छाये हैं उनको हटाने के लिये प्रेम पूर्वक शास्त्रनुकुल भक्ति करो।

गरीब - जैसे सूरज के आगे बदरा, ऐसे कर्म छया रे।
प्रेम की पवन करे चित मंजन, झलके तेज नया रे।।

परमात्मा एक देशीय साकार राजा की तरह तीसरे धाम में विराजमान है वह प्रकाश पुंज स्वरूप है वह कविः=कविर है।

प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26-27 :- आर्य समाज के आचार्य वेदभिक्षु (भारतेन्द्र नाथ) दयानन्द संस्थान करोलबाग नई दिल्ली द्वारा किया हिन्दी अनुवाद :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26 :- यज्ञ करने वाले यजमानों के लिए परमात्मा सब रास्तों को सुगम करता हुआ उनके विध्नों को मर्दन करता हुआ और** *अपने रूप को सरल करता* ***हुआ कान्तिमय परमात्मा (कविः) सर्वज्ञ विद्युत के समान क्रीड़ा करता हुआ वरणीय पुरूष दृढभक्तों को प्राप्त होता है। [उपरोक्त मंत्र में स्पष्ट है कि परमात्मा बिजली के समान तीव्रगामी है तथा वह श्रेष्ठ व्यक्ति को अपने लोक से चलकर आकर प्राप्त होता है वह कविः अर्थात् कविर् देव=कविर्देव भाषान्तर कबिर साहब (कबीर साहब) है।] ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 27 में बताया है कि वह* *द्युलोक के तीसरे पृष्ठ अर्थात् ऊपर के एक भाग में विराजमान है। वह प्रकाश पुंज परमात्मा है।* ***(यजुर्वेद अध्याय 15 श्लोक 11 व 12 में स्वामी दयानन्द जी ने पृष्ठे का अर्थ ''एक भाग में'' किया है।)

यजुर्वेद अध्याय 15 के मंत्र 11-12 की मूल व्याख्या संस्कृत में *''नाकस्य पृष्ठे स्वर्ग लोके यजमान च सादयन्तु''* ***लिखा है। जिसका अर्थ है कि सत्यभक्ति करने हारे को परमात्मा (नाकस्य) अन्तरिक्ष के दुःख***

रहित देश आकाश में स्वर्ग लोक के एक भाग में स्थापित करे]

यजुर्वेद अध्याय 18 के मन्त्र 56-58-59-60 में प्रमाण :- अध्याय 18 का 58 मंत्र स्पष्ट करता है कि हमारे से पहले उत्पन्न ऋषियों ने जिस स्थान को हृदय व मन से अर्थात् दिव्य दंष्टि से आँखों देखा व प्राप्त किया। आप भी उसी लोक में पहुँचों। हृदय व मन की आँखों का तात्पर्य दिव्य दंष्टि से है। यजुर्वेद अध्याय 18 मंत्र 59-60 में कहा है कि ''इस (परम) परम उत्तम (व्योमन्) आकाश में व्याप्त परमात्मा को मैं तेरे लिए सब प्रकार से देता हूँ, उपदेश करता हूँ मैं तुम सब के लिए जिस परमेश्वर का उपदेश करूं उसको तुम जानों परम उत्तम आकाश का तात्पर्य सतलोक से है मंत्र 56 में भी यही प्रमाण है।

यजुर्वेद अध्याय 31 मंत्र 18 में वेद ज्ञानदाता कह रहा है कि मैं परमेश्वर को सूर्य के तुल्य प्रकाशस्वरूप अज्ञान अन्धकार से पंथक वर्तमान पूर्ण परमात्मा को जानता हूँ। उसी को जानकर आप दुःखदाई मरण को उलंघन कर जाते हो। इससे भिन्न मोक्ष मार्ग नहीं है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1 में कहा है कि सर्वोत्पादक प्रभु प्रकाश रूप सदा गुणों की वंष्टि करने वाला पापों का हरण करने वाला है वह (राजेव) राजा के समान दर्शनीय है वह वरणीय पुरूष को जो दंढ़ भक्त है उसको पवित्र करता हुआ प्राप्त होता है। ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 के मन्त्र 2 में कहा है कि ''हे परमात्मन्! उपदेश करने की इच्छा से आप महापुरूषों को प्राप्त होते हो आप अत्यन्त गतिशील पदार्थ के समान हमारे अध्यात्मिक यज्ञ को प्राप्त होते हैं। आप (कविः) सर्वज्ञ हैं। कविः=कर्विदेव=कबिर साहब ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 3 में कहा है कि पंथ्वी आदि लोक-लोकान्तरों में गति करते हुए आप स्वयं गतिशील होकर विराजमान होते हैं। ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 14 मंत्र 1 में कहा है कि सर्व ब्रह्मण्डों व समुद्र आदि का रचनहार (कविः) वही परमात्मा है जो सर्व परिपूर्ण हो रहा है। [भावार्थ है कविः=कविर्देव=कबिर परमात्मा=भाषान्तर से कबीर साहब बोला जाता है (छोटे साईज वाले वेद में भी यही प्रमाण है।)] ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 150 मंत्र 3-4-5 में तेज पुंज परमात्मा कहा है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 20 मंत्र 1 में भी स्पष्ट किया है कि वह परमात्मा (कविः) कविर्देव = कबीर साहेब है विद्वानों की तंप्ति के लिए

ज्ञान देता है। सहनशील है। सम्पूर्ण दुष्टों को संग्राम में तिरस्कृत करता है। ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 1 मन्त्र 5 में कविक्रतु का अर्थ स्पष्ट करता है कि सर्व ब्रह्मण्डों का रचियता कवि अर्थात् कविर्देव = कबीर परमेश्वर है। [भाषा भिन्न में कविर् देव=कबिर परमात्मा अर्थात् कबीर साहब कहा व लिखा जाता है।]

छोटे साईज वाले वेद से :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3, सूक्त 86 मन्त्र 27 तथा सूक्त 96 मंत्र 16 से 20 में प्रमाण है कि परमात्मा कविर्देव तीसरे मुक्ति धाम में तेजोमय स्वरूप में साकार एक स्तुप अर्थात् गुमज में विराजमान है। सूक्त 96 मंत्र 18 में लिखा है कि ''सोम स्वरूप परमात्मा पालन की इच्छा करता हुआ जो तीसरा मुक्ति धाम है उस में विराजमान है।(ज्ञान योगी का वर्णन मूल भाषा संस्कृत में नहीं है मनघड़ंत किया है अनुवाद कर्ता विचलित है) सूक्त 96 मन्त्र 19 में चौथे धाम में परमात्मा का स्थान बताया है इसमें अनुवाद कर्ता ने लिखा है कि ''महापुरूष तुरिय अर्थात् चौथे परमात्मा तथा धाम का वर्णन करता है।''

सूक्त 96 मंत्र 20 में भी मनुष्य के समान शरीर धारण करके उच्च स्वर से गर्जता हुआ लोकों में प्रविष्ट होता है जैसे एक संघ का सेनापति होता है। (ऐसे एक भक्तों के समूह का नेतृत्व गुरु रूप में करता है) यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मन्त्र 8-9 में भी है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मन्त्र 3 में कहा है कि परमात्मा (भूवनोपरि तिष्ठति) सर्व लोकों के ऊपर बैठा है। ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 27 में भी स्पष्ट है कि परमात्मा द्यूलोक (सत्यलोक) के तीसरे भाग में रहता है।

❑❑❑

प्रमाण के लिए पढ़ें कबीर की सागर की निम्न फोटोकापियाँ
कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान बोध'' के पष्ठ 39 (903) की फोटोकापी।

बोधसागर ९०३ (३९)

निरभय ज्ञान कहो जिवपासा। जो कोइ होय तुम्हारा दासा॥
मूरखके तुम पास न जइयो। बचन हमारो हियमें गहियो॥
मूरख ज्ञान कहो मत भाई। नाइक ज्ञान गांठको जाई॥
दुरमति मन जाही कर भाई। तासे राखो भेद छिपाई॥
ज्ञानी जनको नाम सुनावो। परम पुरुषसों हृदय चिन्हाओ॥

साखी–मूरखसे ना खोलिहौ कहैं कबीर विचार।
ज्ञानीसे न दुरायहौ, सुनो सत्त मतसार॥

चौपाई

अलख नाम घट भीतर देखो। हृदये माहीं करो विवेको॥
घट घट राम बसे हैं भाई। विना ज्ञान नहिं देत दिखाई॥
अनुभव ज्ञान प्रगट जब होई। आतमराम चीन्ह है सोई॥
आतमराम चीन्ह जब पावा। सकल पसारा मेट बहावा॥
हिये नयनसे देखो भाई। जब तुमको वह राम दिखाई॥
सब घट व्यापक सबसे न्यारा। सोई राम है जीव मँझारा॥
अकह नाम कहा नहिं जाई। घट घट व्याप्त निरंतर आई॥
आतमराम देख जिव पाई। आप आप सब ठांव समाई॥
जहँ देखा तहँ आप समाना। ब्रह्म छोड़ दूसर नहिं आना॥
यही मता हम तुमकह दीन्हा। दूसर कोउ न पावै चीन्हा॥
ऐसा ज्ञान लखाओ भाई। जो नहिं मानकाल तिहिं खाई॥

साखी–अजर पुरुष एकै रहै, अजर लोक अस्थान।
कहे कबीर सर्वांग जो, ताहि पुरुषको जान॥

सोरठा–सुनहु ज्ञानी धर्मदास, सोइ ज्ञान जप ऊपजै।
एक नाम विश्वास, प्रगट ब्रह्म स्वरूप है॥

चौपाई

आदि नाम जो राखे आसा। तापै परे न कालकी फाँसा॥
आदि नाम निरअक्षर भाई। ताहि नाम ले लोकहि जाई॥

कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान बोध'' के पष्ठ 40 (904) की फोटोकापी।

(४०) 904 ज्ञानबोध

सोहं शब्द निरक्षर वासा । ताहि शब्द जपहै निज दासा ॥
आदि नाम निज सार है भाई । जमराजा तेहि निकट न आई ॥
तुम कहँ शब्द दीन्ह टकसारा । सो हंसन सो कहौ पुकारा ॥
सार शब्दका सुमरण करि है । सहज अमर लोक निस्तरि है ॥
सुमरन का बल ऐसा होई । कर्म काट सब पलमें खोई ॥
जाके कर्म काट सब डारा । दिव्य ज्ञान सहजै उजियारा ॥
जाकहँ दिव्य ज्ञान परकाशा । आपहिमें सब लोग निवासा ॥
लोक अलोक शब्द है भाई । जिन जाना तिन संशय जाई ॥
तत्व सार सुमरन है भाई । जातै कालकी तपन बुझाई ॥
सुमरनते सब कर्म विनाशा । सुमरनसों दिव्य ज्ञान प्रकाशा॥
धर्मन सुमरन दयो लखाई । जासों हंस सबै मुक्ताई ॥
साखी–कहे कबीर विचारके, सुमरन सार बखान ।
कहै भेद जो पावहीं, पहुँचे लोक ठिकान ॥

धर्मदास–वचन चौपाई

कहें धर्मदास सुनों प्रभुराई । अब जिवको सन्देह मिटाई ॥
अलख अगोचर हो प्रभु मेरा । अब जीवन को करों उबेरा ॥
आदि ब्रह्म तुम अगम अपारा । जीव काज आये करतारा ॥
आदि नाम गुरु मोहिं लखाये । जीवनके तुम बंद छुड़ाये ॥
अजर लोकमें जिव पहुँचाये । धन्य भाग हम दर्शन पाये ॥
अमर वस्तु सतगुरु मोहिं दीन्हा । जीवनके सब दुखहर लीन्हां ॥
सतगुरु चरण गहें हिय माहीं । भानु उदय पंकज बिगसाहीं ॥
सतगुरुने मोहिं लीन्ह जगाई । आवागमन रहित घर पाई ॥
अब सन्देह रहा कछु नाहीं । शब्द तुम्हार बसो हियमाहीं ॥
सोरठा–दीन्हों मोहिं लखाय, परमातम आतम सकल ।
अलख नाम समुझाय, अमर वस्तु गुरु दीन्हऊ॥

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पष्ठ 105 (969) की फोटोकापी।

बोधसागर 969 (१०५)

धर्मदास उवाच

धर्मदास तब सौंज मँगाई । सोरह अंश तब दीन्ह चिन्हाई॥
चौका पुरस तब युक्ति बनाई । तनुका तोड़े जल अचनाई ॥
लिख्यो पान समरथ सहिदानी । दीन्हो सन्देश सत्यकी बानी॥
तीनि अंशकी लगन विचारी । नारीअर अंशको हंस उबारी ॥
नारी पुरुष होय एक संगा । सद्गुरु बचन दीन्ह सोहंगा ॥
सोहँग शब्द है अगम अपारा । तुमसों धर्मनि कहौ विचारा ॥
पेड़ सोहंग और सब डारा । साखा सोहं कीन्ह प्रकारा ॥
प्रथम सहज सोहंगकी बानी । दूसरि इच्छा सोइ उपतानी ॥
तिसरे मूल सोहं है भाई । चौथे सोहं सोहं निर्माई ॥
सोहंगते भये सोइ अतीता । जाको नाम जो कह्यो अचिंता॥
अचिंतहिते अक्षर सोहंगा । अक्षर सोहंगते कैल सोहंगा ॥
कैल सोहंगते त्रिगुण सोहंगा । सोहंगते सकल सृष्टिको रंगा॥
अमृत वस्तुते नौ पकारा । सोहंग शब्दके सुमिरन सारा ॥
सो सोहं अचीन्हि जो पावै । सोहं डोर गहि लोक सिधावै ॥
जा घट होई सोहं मतसारा । सोई आवहु लोक हमारा ॥
सुरति सोहं हृदये महँ राखो । परचे ज्ञान तुम जगमें भाषो ॥
एती सिद्धि सोहंकी भाई । धर्मदास तुम गहौ बनाई ॥
चौका करि दीन्य परमाना । तब जीवहि छूटे अभिमाना ॥
अजावन बीरा आवै हाथा । तब हंसा चले हमरे साथा ॥
ताकैं पुनि चहि आवै डोरी । टूटे घाट अठासी करोरी ॥
कुल करनी जिन्ह खोय निसाई । काटि फन्द निज घरकूं जाई ॥
तन मन धनको मोह न आवै । सो जिव दर्स हमारा पावै ॥
गुरुसों अन्तर कबहुँ न कीजै । साधु सन्त सेवा मन दीजै ॥
एती सनद जीव उजियारा । ताको सुकृत आवै सठिहारा ॥
सोहं करनी सोहं विचारा । सोहं शब्द है जिव उजियारा ॥

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पष्ठ 106 (970) की फोटोकापी।

(१०६) 970 कबीरबानी

साखी–कहै कबीर

धर्मदास उन मन बसौ, करौ शब्दकी आस।
सोहं सार सुमरन करो, मुनिवर मरें पियास॥

चौपाई–धर्मदास उवाच

सत्य नाम संतन सुखदाई। कथा अनूप कहों चितलाई॥
बन्दौं गुरु दोऊ कर जोरी। जिमि कलहिते तुम बँदे छोरी॥
को प्रवीन है लोक तुम्हारा। सो मोसों सब कहौ विचारा॥
बस्ती सून्य बिचकी सब भाखो। जो देखो सो गोय जिन राखो॥

धर्मदास वचन

साखी–जैसे है तैसी कहौं मैं बलिहारी जाउँ।
अंस वंस निवारके, जीव सकल मुक्ताउँ॥

चौपाई

तुमरे कारन भेद हम दावा। सर्वमूल गुरु समरथ आवा॥
लोक परेलोक दोउ हम पाए। जब सद्गुरु मोहिं दर्श दिखाए॥
पांजी भेद कहौं समुझाई। कौन अंस कौन लोक बैठाई॥
केते पवन इहाँते होई। जहां समर्थ बैठक सोई॥
वेद कितेकी संज्ञा दीजे। इतनी दया गुरु हमपर कीजे॥

साखी–लोक भेद केते वहै, पांजी भेद कहो समुझाय।
अंस वंस अस्थान बतावो, सब संशय मिट जाय॥

सद्गुरु पेडी भेदः पठ्यते

धर्मदास मैं कहा समुझाई। पांजी अंस को भेद बताई॥
तज अंडवार पलंगबिस्तारा। मध्यमेंशून्यदोयपालँगअँधियारा॥
मृतुलोकमें सालोक मुक्तिप्रमाना। ताकी नाम मानसरोवर स्थाना॥

कबीर सागर के अध्याय ''सुमिरन बोध'' के पष्ठ 2 (1794) की फोटोकापी।

(२) 1794 बोधसागर

घाटी नाकहि आगे तब जाई। सकल दूत रहे पछताई॥
आगे मकरतार है डोरी। जहां यम रहे मुख मोरी॥
ओहं सोहं नामके, आगे करै पयान।
अजर लोक बासा करे, जगमग दीप स्थान॥
सुख सागर स्नान करी, होय हंसका रूप।
जाय पुरुष दर्शन करै जिस दिन परम आनन्द॥
आदि गायत्री सुमिरिके, आवागमन नसाय।
सत्य लोक बासा करे, कहैं कबीर समझाय॥

सुमिरन प्रभात गायत्री

आदिगायत्री अम्मर अस्थान। सोहंतत्त्व ले हंसालोक समान॥
सत गायत्री अजपा जाप। कहै कबीर अमर घर बास॥
सत्य है अमर सत्य है शून्य। सत्यहिमें कछु पाप न पुण्य॥
कहै कबीर सुनो धर्मदास। यह गायत्री करो प्रकाश॥

सुमिरण मध्याह्न गायत्री

अचिंत पुरुष हिरम्ब छाया। नाद बिन्द होय कर्ता आया॥
यमसो जीता लोक पढाया। सुरति स्नेही हंस कहाया॥
अचिन्त पुरुकी गायत्री, दीन्ह कबीर बताय।
निशिदिन सुमिरण जो करै, करम भरम मिटि जाय॥

सुमिरण सन्ध्या गायत्री

बारह जोजन कोट, यन्त्र जहँ पलमें छूटे।
यहि विधि सन्ध्या जपे, भर्मको आगम टूटे॥
गायत्री ब्रह्मा जपे, जपे देव महेश।
गायत्री गोविन्द पढे, सतगुरुके उपदेश॥
ताको काल न खाय, जो संज्ञा चीन्हे।
घटमें रही अलोप, काढि हम बाहर कीन्हे॥

कबीर सागर के अध्याय ''सुमिरन बोध'' के पष्ठ 15 (1807) की फोटोकापी।

सुमिरनबोध 1807 (१५)

सच्चिदानन्द सो सदा उजागर। योग संतायनपतिसुखसागर॥
सुर्त नामसों जपिये ज्ञानी। अमी अंकूर बीच सहिदानी॥
प्रथम पुरुष सबहीके मूला। अमीदीप नाम है अस्थूला॥
आलख नाम पुरुषोत्तम गाऊँ। नाम मुनींद्र सदा गोहराऊँ॥
सर्व मई साधनपति सोई। भक्तराज बूझो नर लोई॥
सत संतोष सो सदा सनेही। शब्दसरूपी अविचल देही॥
प्राण नाक पिब अमृत बानी। सत्यलोकपति नाम बखानी॥
सद्गुरु जन्म निवारक जानौ। बन्दीछोर निश्चय कै मानौ॥
अवागमनके दुःख मिटावो। चौरासी लक्ष बन्द मुक्तावो॥
शील रूप संतोष पियारा। धर्मराय शिर मर्दन हारा॥
मुक्तिदाता शीतल उजियारा। नाम परायण प्राण पियारा॥
अस्थिर नाम अभयपद दाता। अक्षयराज नायक विख्याता॥
सत्यसाहेब कहो बहोर बहोरी। अक्षय वृक्ष हिरामय डोरी॥
पुहुपदीप मण्डप गुरु सांचा। हँस सोहँग नाम बिच राजा॥
सोहँ शब्द नाम है सारा। सत्यवचन बोले कडिहारा॥
इच्छा रूप संत जन गावै। ज्ञानहि बीज अमोल कहावै॥
अबोल अशोच असंशय धीर। नाम एकोत्तर कहैं कबीर॥
एकोत्तर नाम सुमिरे जो कोई। ताको आवागमन न होई॥
नाम एकोत्तर सुमिरे जबही। सद्गुर बैठे सिंहासन तबही॥
आरती नाम एकोत्तर चहिये। एकोत्तर विनाननरियन गहिये॥
आरती नाम एकोत्तर धारा। एकोत्तरी विनाकैसोकडिहारा॥
विना एकोत्तर नहिं निस्तारा। कैसेहु निज मानो कडिहारा॥
एकोत्तर नाम जानै विस्तारा। सो जानो सांचो कडिहारा॥
पांच नाम इनहीमों भाषा। सहज पक्ष पालन है साषा॥
सुर्तसहजपालजरंगश्रवणहै भाई। हँसनतिलकएकोत्तरिलेहोजाई॥

कबीर सागर के अध्याय ''सुमिरन बोध'' के पष्ठ 16 (1808) की फोटोकापी।

(१६) 1808 बोधसागर

बायें श्रवण लीला सुत है भाई। सुर्त डोर कहों समुझाई ॥
एकोत्तर नहिं जाने विस्तारा। सो जनि जानहु है कडिहारा ॥
जो नहिं जानेएकोत्तरविस्तारा। मिथ्या सो जानो कडिहारा ॥
नहिं तो पूत आहै कडिहारा। लै जीवनको करै अहारा ॥
नाम एकोत्तर जानै नहीं, औ धरे सिंहासन पाँव।
कहैं कबीर तेहि शीशपर, कोटि वज्रको घाव ॥
धर्मदास हँसन तिलक, एकोत्तरि लेहो जान।
अंश सुजन जन मुक्तपद, सत्य शब्द परवान ॥
पिण्ड ब्रह्मण्ड खोजके, राखो शब्दकी आश।
तिलभर काया मूलकमलमें, जहां पुरुष रहिवास ॥
कहैं कबीर जो पाइहैं, एकटक सुमिरे ध्यान।
तिलभर काया सहज कमलमें, जहां पुरुषको स्थान ॥
सहजनाम युग बांधिया, बावन नामकी नेह।
दीप अजयकी ध्यानमें, भई सुर्तकी देह ॥
देह भई तब जानिये, गगनध्यान लौ लीन।
सुर्त सोहँगम शब्द है एकटक सुमिरो संतो जम होय बलछीन ॥
सोहँ शब्द निज सांच है, जपौ अजपा जाप।
कहें कबीर धर्मदाससों, देखो अगम अगाध ॥
साहे शब्द निज साच है, गहि राखो तुम पास।
सोहं शब्दमें मुक्तमें, सत्य मानो धर्मदास ॥
सुमिरन सार एकोत्तरी, चन्द्र सूर घइसार।
कहैं कबीर धर्मदाससों, तासु नाम कडिहार ॥
ज्ञान गम्य जाने जो पावै। भवसागरमें धन्यगुरू कहावै ॥
इति एकोत्तर नाम सिंहासन ध्यान नारियर अङ्गप्रथम स्मरण॥
चौका अङ्ग सत्यकबीर धर्मदास को दीन्ह। अविचल

❑❑❑